

❀ अथ सुखानन्दी ❀
ब्रह्म आनन्द भजनमाला ।



(राग पीलू तिताला)

१जय गणपति गिरजा के नंदन
सकल सुधारहु काज हमारे ॥ टेक
विद्या बुद्धि विपुल बल वैभव
देहु हमहिं महाराज हमारे ॥ १ ॥ जय०
हरहु दुसह दुख शोक निवारहु
संचारहु सुख साज हमारे ॥ २ ॥ जय०
काम क्रोध मद लोभ नसावहु

---

१ एक समय शिव के मिलने को नारायण कैलाश पधारे,

जाय सबै अघ आज हमारे ॥ ३ ॥ जय०
भवसागर तें पार लगावहु
अवगुण भरे जहाज हमारे ॥ ४ ॥ जय०
सुखानन्द के उर में धारहु
पद पंकज सिरताज हमारे ॥ ५ ॥ जय०

(राग पील तिताला)

जगन्नाथ जगदीश दयानिधि
भव-भय-भंजन नाम तिहारौ ॥ टेक
मैं हूं पतित पतित-पावन तुम
टेक न अपनी नाथ बिसारौ ॥ १ ॥ जग०
दूर करो दुख दारुण मेरे
कर करुणा की कोर निहारौ ॥ २ ॥ जग०
विषय भोग में वयस बिताई
ना कबहू हरि नाम उचारौ ॥ ३ ॥ जग०
सुखानंद दुख पाय अंत में
द्वारे तेरे आय पुकारौ ॥ ४ ॥ जग०

(राग पीलू तिताला)

जिनकी बाँह गही प्रभु तुमने
तिनकूं कौन सतावन हारौ ॥ टेक
राम नाम अंकित पाहन हू
धार सीस सागर ने तारौ ॥ १ ॥ जिन०
गज की टेर सुनत ही धाये
प्रबल ग्राह कौ गर्व प्रहारौ ॥ २ ॥ जिन०
हरिनाकुश के कठिन त्रास तें
खंभ फार प्रहलाद उबारौ ॥ ३ ॥ जिन०
सुखानंद शरनागत-वत्सल
है प्रसिद्ध जग नाम तिहारौ ॥ ४ ॥ जिन०

(राग पीलू तिताला)

नारायण का नाम निरन्तर
निसबासर मुख से उच्चारौ ॥ टेक
नर तन पाय अमोलक हीरा
मत कौड़ी के मोल निसारौ ॥ १ ॥ नारा०

घट में है बाहर मत भटकौ
खोल कपट की गांठ निहारौ ॥ २ ॥ नारा०
काल बली सिर ऊपर गाजै
विश्व चराचर जाकौ चारौ ॥ ३ ॥ नारा०
सुखानन्द बीती सो बीती
रही सही की सुरत सँभारौ ॥ ४ ॥ नारा०

(राग पीलू तिताला)

जब दिल में दिलदार समाया
तब जगसे क्या काम रहा है ॥ टेक
जिसने प्रेम हरी रस चाखा
तिसका जन्म सकाम रहाहै ॥ १ ॥ जब०
विषय विषम विष जिसने खाया
ऐसा नीच निकाम रहा है ॥ २ ॥ जब०
कीरति अमर रही भक्तों की
नहीं अस्थि ना चाम रहा है ॥ ३ ॥ जब०
सुखानन्द भव-सिन्धु तरन हित

हरि-पद-नवका थाम रहा है ॥ ४ ॥ ज़ब०

(राग पीलू तिताला)

नारायण घट में नहिं देखे
बाहर भटका निपट अनारी ॥ टेक ॥
चारों धाम धाय श्रम कीना
सातों पुरी पुनीत निहारीं ॥ १ ॥ नारा०
न्हाय अनेक नदी नद सरिता
जाय पिया सागर जल खारी ॥ २ ॥ नारा०
श्रम न गया चारों-दिश धाया
बन उपवन गिरि-गुहा निहारीं ॥ ३ ॥ नारा०
सुखानंद बिन प्रेम न पाया
अंतरयामी कृष्ण-मुरारी ॥ ४ ॥ नारा०

(राग पीलू तिताला)

भवसागर में फँसी हुई है
नैया मेरी तार मुरारे ॥ टेक
हैं असंख्य मेरे अघ स्वामी

तेरी दया अपार मुरारे ॥ १ ॥ भव०
तुम विन नहीं हमारा कोई
देख लिया संसार मुरारे ॥ २ ॥ भव०
स्वारथ ही के हैं सब संगी
सुत दारा परिवार मुरारे ॥ ३ ॥ भव०
सुखानंद को आस तुम्हारी
सुनियो वेग पुकार मुरारे ॥ ४ ॥ भव०

(राग पीलू तिताला)

रूप अनूप दिखाकर प्रीतम
सफल करो अब नैन हमारे ॥ टेक
लै लै नाम बुलाया तुमने
धाई विपन त्याग घर द्वारे ॥ १ ॥ रूप०
अब क्यों करत स्याम निठुराई
जब क्यों बांण प्रेम के मारे ॥ २ ॥ रूप०
शरद रैन की विमल चांदनी
छिटके हैं नभ निर्मल तारे ॥ ३ ॥ रूप०

सुखानंद सरसावहु प्रीतम
करके रास विलास पियारे ॥ ४ ॥ रूप०

(राग पीलू तिताला)

अर्जुन को श्री कृष्ण समर में
गीता का उपदेश सुनाते ॥ टेक
मोह जनित कायरता त्यागौ
हैं जग के सब झूँटे नाते ॥ १ ॥ अर्जुन०
जीव नहीं मारे से मरता
पंच-तत्व में देह समाते ॥ २ ॥ अर्जुन०
अपना धर्म श्रेय होता है
अपर धर्म भय भीत कराते ॥ ३ ॥ अर्जुन०
सुखानंद प्रभु ज्ञान सिखाकर
पारथ का भ्रम दूर कराते ॥ ४ ॥ अर्जुन०

(राग पीलू तिताला)

नागर नट कालिंदी के तट
मुरली मधुर बजाय रहे हैं ॥ टेक

राग रागिनी गाय गाय के
मोहिनी मंत्र चलाय रहे हैं ॥ १ ॥ नागर०
लै लै नाम हमारो सजनी
हितसों हमें बुलाय रहे हैं ॥ २ ॥ नागर०
सरद निसा की बिमल रैन है
लख लोचन ललचाय रहे है ॥ ३ ॥ नागर०
सुखानंद सखियन के मन में
प्रेम प्रमोद वढाय रहे हैं ॥ ४ ॥ नागर०

(राग पीलू तिताला)

जय शिव शंकर आनँद रासी
अविनाशी कैलाश निवासी ॥ टेक
अंग भुजंग मतंग सुहाये
गंग तरंग जटा परकासी ॥ १ ॥ जय०
भंग छके अर्धंग भवानी
अंग अमल द्युति चंद्र छटासी ॥ २ ॥ जय०
भूत प्रेत भैरव सेवक हैं

ऋद्धि सिद्धि चरनन की दासी ॥ ३ ॥ जय०
वर-दायक नायक त्रिभुवन के
सुखानन्द मुद मंगल रासी ॥ ४ ॥ जय०

(राग पीलू तिताला)

जय महेश जय जय शिवशंकर
भोलानाथ भक्त हितकारी ॥ टेक
अघ दल गंजन भव भय भंजन
जन मन रंजन मंगलकारी ॥ १ ॥ जय०
त्रिपुरासुर के कठिन त्रास तैं
देवन की तुम विपति निवारी ॥ २ ॥ जय०
नांदी गण की रच्छा कीनी
काल पाश भंजौ अति भारी ॥ ३ ॥ जय०
सुखानंद दायक जग-नायक
वर-दायक कैलाश बिहारी ॥ ४ ॥ जय०

(राग पीलू तिताला)

जय जगदम्बा सिंह बाहिनी

अघ हरनी दुर्गा महारानी ॥ टेक
जय जय जय निश्चर-दल दमनी
भव भय समनी सुख सरसानी ॥ १ ॥ जय०
आदि शक्ति मर्याद-विवर्द्धनि
मर्दनि शुंभ निशुंभ सयानी ॥ २ ॥ जय०
चरण सरोज राख उर अन्तर
धारत ध्यान निरन्तर ध्यानी ॥ ३ ॥ जय०
सुखानन्द है परम मनोहर
विमल सुयश की सुखद कहानी ॥ ४ ॥ जय०

(राग पील तिताला)

वागेश्वरी जयति अज तनया
भुवि छाई छवि छटा तिहारी ॥ टेक
कीरति अमित अलौकिक महिमाँ
छिटकि रही मुख चन्द्र उजारी ॥ १ ॥ वागे०
मुक्ता माल कण्ठ शुभ भ्राजत
सोहत अंग रेशमी सारी ॥ २ ॥ वागे०

राज हंस आसीन अनूपम
सीस मुकुट वीणा कर धारी ॥ ३ ॥ वागे०
सुखानंद गावत हरषावत
लीला अतुल अनूप तिहारी ॥ ४ ॥ वागे०

(राग पीलू तिताला)

जय कमला विमला हरि माया
शेषासन आसीन सुहाई ॥ टेक
नारायण के चरण पलोटत
छीर सिन्धु शोभा अधिकाई ॥ १ ॥ जय०
रत्न जटित आभूषण सोहैं
मुक्ता माल कंठ छवि छाई ॥ २ ॥ जय०
कीट मुकुट मस्तक पर राजत
सारी सुरँग अनूप सुहाई ॥ ३ ॥ जय०
सुखानन्द दायक सबही की
महिमा तेरी वेदन गाई ॥ ४ ॥ जय०

(राग पीलू तिताला)

श्री गुरु चरण सरोज विमल रज
प्रेम सहित उर मुकुर लगाई ॥ टेक
तम अज्ञान नसाय हिये को
ब्रह्म-ज्ञान की ज्योति जगाई ॥ १ ॥ श्रीगु०
संशय शमन कियौ भ्रम भंजौ
द्विविधा मन की धोय बहाई ॥ २ ॥ श्रीगु०
जन्म मरण को त्रास निवारौ
मुक्ति पुरी की राह दिखाई ॥ ३ ॥ श्रीगु०
सुखानंद गुरु हरि समान हैं
यह प्रतीत मेरे उर आई ॥ ४ ॥ श्रीगु०

(राग पीलू तिताला)

श्री गुरु-देव दयालु दयाते
पूरण ब्रह्मानन्द लह्यौ है ॥ टेक
दरसत ही दुख दूर भयो सब
परसत परमानन्द भयौ है ॥ १ ॥ श्रीगु०

सरसत सुखद हुलास हिये में
प्रेम नीर उर बरस रह्यौ है ॥ २ ॥ श्रीगु०
मिटे मोह ममता मद मत्सर
क्रोध लोभ चकचूर भयौ है ॥ ३ ॥ श्रीगु०
सुखानन्द गुरु की करुणा तें
सुख आनँद भरपूर भयौ है ॥ ४ ॥ श्रीगु०

(राग पीलू तिताला)

बार बार केतौ समझायो
मानत नहीं कही मन मेरी ॥ टेक
त्याग मधुर हरि नाम अमी-रस
विषम विषय-रस में रुचि फेरी ॥ १ ॥ बार०
जन्मत मरत गये युग केते
चौरासी-लख की कर फेरी ॥ २ ॥ बार०
इन्द्रिन के आधीन भयो है
सुख च्छण-भंगुर विपद घनेरी ॥ ३ ॥ बार०
सुखानन्द अंतक नियरायो

छिन में करै राख की ढेरी ॥ ४ ॥ बार०

(राग पील तिताला)

अच्युत आदि अनादि अगोचर
अज अविनाशी ईश हमारा ॥ टेक
जगमें फैली ज्योति उसी की
रवि शशि में उसका उजियारा ॥१॥ अच्यु०
कीट पतंग सुरासुर किन्नर
जड़ चेतन का सिरजन हारा ॥२॥ अच्यु०
सुमिरन करहु अहर्निशि उसका
जो चाहो अपना निस्तारा ॥३॥ अच्यु०
सुखानन्द करुणा-निधि केशव
बेड़ा पार लगावन हारा ॥४॥ अच्यु०

(राग पील तिताला)

जा जा कर गंगा यमुना पर
काया का मल धोया प्यारे ॥
खा खा कर पकवान मिठाई

उदर भरा और सोया प्यारे ॥ १ ॥ जा०
मन मतंग को किया न वसमें
जन्म अकारथ खोया प्यारे ॥ २ ॥ जा०
विषय-भोग का गर्दभ बनकर
पाप भार नित ढोया प्यारे ॥ ३ ॥ जा०
सुखानंद जब काल चली ने
घेर लिया तब रोया प्यारे ॥ ४ ॥ जा०

(राग पीलू तिताला)

जीवों पर क्यों छुरी चलाता
सिर पर आई काल कटारी ॥ टेक
हिंसक जीव बना क्यों पामर
पाकर नर तन फल आहारी ॥ १ ॥ जीवों०
दया धर्म से नाता तोड़ा
दीन हीन की गर्दन मारी ॥ २ ॥ जीवों०
आमिष जीवों का खा खा कर
अपना उदर किया है भारी ॥ ३ ॥ जीवों०

सुखानंद हिंसा कर कर के
तू तौ हुवा नर्क अधिकारी ॥ ४ ॥ जीवों०

(राग पीलू तिताला)

कभी किसी का दिल न दुखाना
बनै जहां तक करौ भलाई ॥ टेक
धारण करौ अहिंसा व्रत को
वैर विरोध विकार विहाई ॥ १ ॥ कभी०
योग यज्ञ जप तप व्रत जेते
दया धर्म सब में अधिकाई ॥ २ ॥ कभी०
सेवा करौ स्वार्थ को तज के
यथा साध्य तन-मन-धन लाई ॥ ३ ॥ कभी०
सुखानंद जो यह व्रत साधौ
जीवन-मुक्ति मिलै सुखदाई ॥ ४ ॥ कभी०

(राग पीलू तिताला)

कर्म गती टारी नहीं टरती
करनी का फल पाना प्यारे ॥ टेक

होनी मिटती नहीं मिटाये
कोई बनै बहाना प्यारे ॥ १ ॥ कर्म०
नहीं हुआ अभिषेक राम का
पड़ा विवस बन जाना प्यारे ॥ २ ॥ कर्म०
मित्र समान मान सबही को
प्रेम भाव अपनाना प्यारे ॥ ३ ॥ कर्म०
सुखानंद हरि-पद-पंकज को
मत मन से बिसराना प्यारे ॥ ४ ॥ कर्म०

(राग पीलू तिताला)

कर्म हीन कर्मों को रोते
उद्योगी सब कुछ पाते हैं ॥ टेक
उद्यम बुद्धि विवेक परिश्रम
अपना वैभव फैलाते हैं ॥ १ ॥ कर्म०
करने से उद्योग निरंतर
बिगड़े काम सँवर जाते हैं ॥ २ ॥ कर्म०
कायर पड़े पड़े आलस में

दोष दैव का बतलाते हैं ॥ ३ ॥ कर्म०
सुखानन्द शुभ अशुभ कर्म सब
विध के अक्षर बन जाते हैं ॥ ४ ॥ कर्म०

(राग पीलू तिताला)

बाहर क्या खोजे मन मूरख
है घर ही में प्रीतम प्यारा ॥ टेक ॥
दमकत प्रभा भानु की उर में
जग मग ज्योति किया उजियारा ॥ १ ॥ बाहर
बाज रहे अनहद के बाजे
सोहं ध्वनि वर बीन सितारा ॥ २ ॥ बाहर
घन गरजै और दामिनि लरजै
बरसत सुधामयी जल धारा ॥ ३ ॥ बाहर
सुखानन्द हिय की चख निरखौ
क्या करते हो सोच बिचारा ॥ ४ ॥ बहर

(राग पीलू तिताला)

आज लखे स्वप्ने में सजनी

व्रज निधि सुंदर स्याम कन्हाई ।। टक
जो अज इन्द्रादिक को दुर्लभ
सो निधि मैं घर बैठे पाई ॥१ ॥आज०
पूरब पुण्य उदय भये मेरे
कैसे बरणूं भाग्य वड़ाई ॥२ ॥आज०
सुर नर मुनि खग मृग गण मोहे
ऐसी मुरली मधुर बजाई ॥ ३ ॥आज०
सुखानद यह स्वप्न धन्य है
जाग गई मन में पछताई ॥ ४ ॥आज

(राग पीलू तिताला)

किस विरते पर ताता पानी
क्यों इतना इतराता है रे ॥ टेक
क्यों धरती पर पाँव न धरता
किस मद का तू माता है रे ॥ १ ॥ किस०
क्यों अभिमान गुमान कियाहै
क्यों इतना सतराता है रे ॥ २ ॥ किस०

दिना चार की चमक चांदनी
पाख अँधेरा आता है रे ॥ ३ ॥ किस०
सुखानंद थिर रहे न यौवन
जिस पर तू बल खाता है रे ॥ ४ ॥ किस०

(राग पीलू तिताला)

करले हरि का सुमिरण प्राणी
जीवन बीता जाता है रे ॥ टेक
जैसे गया बालपन तेरा
यौवन हू बिसराता है रे ॥ १ ॥ करले०
सिर पर देख सफेदी आई
अंत काल नियराता है रे ॥ २ ॥ करले०
अंग अंग सब शिथिल भये हैं
प्रबल पित्त कफ वाता है रे ॥ ३ ॥ करले०
सुखानंद तज देह सरोवर
हंस अकेला जाता है रे ॥ ४ ॥ करले०



(राग बरहंस ताल धमाल)

१ नाथ कैसा माया जाल बिछाया
जामें सरबस जगत फँसाया ॥ टेक
जब यह जीव गर्भ में आया तबही फंदा खाया
नौ दस मास लटकऊरधमुख परमदुसहदुखपाया
खेल कूद में सिसुता बीती ज्ञान हीन भरमाया
तरुण हुआ तरुणी के चसके विषयभोगमनभाया
धन दौलत की बढ़ी लालसा तृष्णा ने तन ताया
धर्म अधर्म विचार बिसारे निसदिन पाप कमाया
पौरुष थका जरा जब आई निर्बल होगई काया
सुखानंद चलनेकीबिरियां सिर धुनधुनपछिताया

(राग बरहंस ताल धमाल)

आज मेरी पत राखो गिरधारी
मैं तो चेरी हूं नाथ बिहारी ॥ टेक
भरी सभामें दुष्ट दुःशासन- बर-बस करत उघारी

---

१ नाथ कैसे गज के फन्द छुड़ाये.

मौन भये निरखत पांचोंपति विपुल तेजबलधारी
बरजत नहीं निठुर भये गुरुजन भीषम द्रोणाचारी
असमय भीत कौनहैकाको अशरण शरण मुरारी
आरत-नाद सुनतही धाये चक्र सुदर्शन धारी
अम्बर रूप भये करुणा-मय ऐंचे इची न सारी
राखत मान सदा भक्तनको करत रहत रखवारी
सुखानन्द शरणागतआरतचरणकमलबलिहारी

(राग बरहंस ताल धमोल)

प्रभु तेरी रचना की बलिहारी
जाको मिलत न पारा वारी ॥ टेक
एक विन्दु तें परम मनोहर सुन्दर देह सँवारी
नखसिखकी शोभामनमोहत कहापुरुषकहानारी
बन उपबन और बागलगाये गुल्मलताफुलवारी
परवत सरसागरजल थलचर सकलसृष्टिविस्तारी
युग संवत् ऋतु मास अहर्निश कालचक्रबलधारी
चलत रहत सब रुकत नपलहू आयसुकेअनुसारी

शिव ब्रह्मादिक पार न पायो गिरा गाय गुण हारी।
सुखानन्द निरखत हरषत है लीला अजब तिहारी।

(राग बरहंस ताल धमाल)

प्रभु कैसा नर हरि रूप बनाया
तेरी जानी जात न माया ॥ टेक
रामनाम प्रहलाद उचारत हरि चरनन चित लाया
हरनाकुश के त्रास सहे सब रंच नहीं घबराया
गिरि ते पटक सिंधु में वोरा अग्निकुण्ड बैठाया
रच्छा करी भक्त की तुमने बार न टूटन पाया
पूछत खंभ बांध हरनाकुश कहां राम रघुराया
मोमें तोमें खर्ग खम्भमें पूर रहा जग माया
नर-हरि रूप भयंकर तबही खम्भ फार प्रगटाया
उदर विदार असुर संहारा सुखानन्द यश गाया

(राग बरहंस ताल धमाल)

द्रुपद तनया का चीर बढ़ाया
दुःशासन मान घटाया ॥ टेक

दुर्योधन दुर्मति ने छलसे द्यूत-जाल फैलाया।
हारे धर्म पुत्र नारी हू कौरव दल हरषाया।
कृष्णा को पापी दुःशासन खैंच सभामें लाया।
बल कर चीर उतारन लागा नग्न करनको काया।
नारी आरत-नाद पुकारी प्रभु अब करहुसहाया।
पटकी लाज पतन ने, पटकी लाजराख यदुराया।
सुखानंद दीनन-हितकारी सारी मांहिं समाया।
दससहस्र गजबलसे दसगज चीर विपुलबलपाया।

(राग बरहंस ताल धमाल)

प्रभु तेरी जग में ज्योति प्रकासी
तू तो अजर अमर अविनासी ॥ टेक
सब में है और सबसे न्यारा घट घट काहै वासी
बिना प्रेम दरसन नहीं देता पाता दरस बिसासी
बिनविश्वासनहीं फलमिलता जाओमथुराकासी
अंतर-यामी को बहकाते जिनकी बुद्धि बिनासी
घर में रहकर धर्म निवाहो चाहे हो बनवासी

उसको तौ है प्रेमी प्यारा नहीं यती सन्यासी
मंगल मूल अमंगल हरता सुखानंद सुदरासी
स्वर्ग नर्कका है वह अधिपति मुक्ति उसीकी दासी

(राग बरहंस ताल धमाल)

करत तुम दीनन की रखवारी
प्रभु सुर पालक असुरारी ॥ टेक
दीनहीनसुग्रीव बालभय व्याकुलदुखित निहारी
बाल बली हत नृपति बनायो भारी त्रास निबारी
शिलारूप मुनि श्राप पायके भईअहिल्या नारी
करुणाकर परसाय चरणरज ताकी बिपता टारी
विटपवेष लख यमलार्जुनको प्रणतपालब्रतधारी
दयाकरी कर कमल बँधाये दीनी मुक्ति मुरारी
जबजबआरत भूमि पुकारी तबहि लियोअवतारी
सुखानंद भू भार टारिकै कीने संत सुखारी

(राग बरहंस ताल धमाल)

नाथ कैसा बामन रूप बनाया

बलि को पाताल पठाया ॥ टेक

बलि का तेज प्रतापजान के सुरपतिने भय खाया।
ताके हित हरि भिक्षा मांगी अपना मानघटाया।
गुरुकी बात न बलिने मानी अपना परननिभाया।
तीन लोक दीने याचकको तिहूंलोक यश छाया।
कर संतुष्ट त्रिलोकी पतिको द्वाराधीश बनाया।
धन्यभाग्य बलिराजतुम्हारा नितप्रतिदर्शनपाया।
सुखानन्द ऐसे स्वामीसे जिसने मन न लगाया।
उसकाजन्म व्यर्थहै जगमें धिक्जननीजिनजाया।

(राग बरहंस ताल धमाल)

ऊधो सुन मनकी बात सुनाऊं
कैसे ब्रजकी सुध बिसराऊं ॥ टेक
अनत कहीं मन लागत नाहीं चहततहां फिरजाऊं
पुन२मन ब्रज बीथिन धावत कौनभांत समझाऊं
चाहतहूंगोपीग्वालन सँग दधिमाखनफिरखाऊं
मात यशोदा नंद बबा की पद-रज सीस चढ़ाऊं

ब्रजकूं तज विश्राम न पायो मनहींमन पछताऊं
बीतो अवसर हाथ न आवत केतौ मन ललचाऊं
ब्रजवासिनको धीर धरावहु याहिततुमहिंपठाऊं
समाचार शुभ ब्रजके लाओ सुखानन्द तब पाऊं

(राग बरहंस ताल धमाल)

ऊधो प्रेमी-जन मोहि प्यारे
नहीं होत हिये ते न्यारे ॥ टेक
जो मम ध्यान निरंतर राखै प्रेम पंथ पग धारे
ताकी सुरत सदां मैं राखत बिसरतनाहि बिसारे
भेद भाव मेरे उर नाहीं ऊंच नीच इक सारे
निर्धन मोहि धनी ते नीको रंक राव ते प्यारे
शबरी गीध अजामिल गणिका केतेअधमउधारे
अंतिम किरिया करी गीधकी सुरपुरदियो सुखारे
हरि भक्तनको प्रेम पारखी बेद पुराण पुकारे
ऐसे दीन-दयाल कृष्ण के सुखानंद गुण गारे

(राग बरहंस ताल धमाल)

प्रभु भव-सागर पार उतारौ
याकौ सूझत नाहिं किनारौ ॥ टेक
इन्द्री सकल मीन सम काटत अंग अंग करडारौ
मकर मोह मद मत्सर मन्मथ ग्रसनहेत मुखफारौ
हाथ पाँव पीटे बहुतेरे शिथिल भयौ तन सारौ
तृष्णापवनअधिकझकझोरतअरुझोकुदुभसिवारे
मायाकी घनघोर घटाने चहुँदिश कियो इंधारौ
जल गहरौ अघ भार सीसपै भयो कालको चारौ
सुखानंद तुम बिन हे स्वामी दूसर नाहिं सहारौ
गहलीनोभव-सिन्धु तरनहित नवकानामतिहारौ

(राग बरहंस ताल धमाल)

सखी मैंने अवगत की गति न्यारी
वो तो खेलत खेल खिलारी ॥ टेक
थूनी खंभ बिना ही तानौ नभकौ तम्बू भारी
चांद सूरज के झाड़लगाये है विचित्र उजियारी

जीव जतु जल थल नभचर की सृष्टिअनूपपसारी
तिनहू में द्वै भेद किये हैं एक नर दूजी नारी
सिंधु नदी नदताल सरोवर गिरिउतंगअतिभारी
विपिनवाटिकाविटपविभूषितगुल्मलताफुलवारी
रंग विरंगे सुमन खिलाये सुखद सुगंधि सँवारी
कंद मूलफलमधुर मनोहर तिनसों छुधा निवारी
सुरनर मुनि मायामें भूले किनहु न पायो पारी
गोविंदकी गति गोविंदजाने सुखानन्दबलिहारी

(राग बरहंस ताल धमाल)

कोई याहि कौन भांति समझावै
मेरे हाथ न मनुवा आवै ॥ टेक
छिनमें हँसै छिनकमें रोवै छिनमें प्राण गँवावै
छिनही में परहाथ विकानों छिनमें आंख दिखावै
छिनहीमें बंधनमें डारत छिनमें मुक्ति करावै
छिनमें त्यागी बनै छिनकमें विषयभोग हितधावै
छिनमें तीन लोक भरमावै छिनभर में अलसावै

छिनमें कर सन्तोष कुटीमें छिनमें महल चिनावै
सुखानंद परतीत न याकी चंचल चित ललचावै
याके दाव घात और छलते करुणासिंधु बचावै

(राग बरहंस ताल धमाल)

कहो मन किस विधि से समझाना
यह तो चाहत नाच नचाना ॥ टेक
अलख अगोचर अतुल अनूपम हरिका ध्यान लगाना । बार अनेक इसे समझाया कहा न कबहू माना ॥ विषय बाग के फल खानेको नित प्रति चाहत जाना । कुश कंटक झाड़ीके मगमें निसदिन ठोकर खाना ॥ ऊपरसे हुशियार लगत है भीतर निपट नदाना । सीख नहीं गुरुजन की मानत करै मूढ मन माना ॥ सुत दाराके मोह जालमें सदा रहै लिपटाना । धन दौलतकी तृष्णाके बस निसदिन पाप कमाना ॥ सुखानंद आनंद कंद का कबहू ध्यान धरा ना । सत

संगति से हित नहिं राखा रहा कुसंगति साना ॥

(राग बरहंस ताल धमाल)

रे मन मूरख क्यों हठ ठानै
तू सीख न मेरी मानै ॥ टेक
पूरण ब्रह्म विश्वमें व्यापक ताको यश न बखानै
वृथा करत बकवाद रैन दिन ज्ञान न उरमें आनै
सत संगतिमें रुचि नहीं तेरी हितकी धरत न कानै
विषय भोग की चर्चा भावै बैठै नीच ठिकानै
कथा वारता सुनत तुरतही लागत आलस आनै
युवतिनके भैरवीचक्र में संध्या करत विहानै
लोक वेद मर्याद बिसारत त्यागत कुलकी कानै
करत असत आहार सुखानंद आमिषमदिरापानै

(राग बरहंस ताल धमाल)

हरि की माया अपरम्पारा
जानें जगमें जाल पसारा ॥ टेक
वही चराचरको उपजाता सबका पालन हारा

काल रूप धर वही विधाता करता है संहारा
ज्योति उसी की दिखलाते हैं चंद्र सूर्य और तारा
अंधकार कर दूर जगतसे करदीना उजियारा
अघ के नासन हेत बहाई गंगाजी की धारा
दरस परस मज्जनसे करती जो सबका उद्धारा
चतुराननसहसानन शिवकोमिलानजिसकापारा
उसकीमहिमाकथैकौनाविधि सुखआनंदविचारा

(राग बरहंस ताल धमाल)

मन क्यों मायामें भरमाया
तेरी थिर न रहैगी काया ॥ टेक
जिसको तूने सांची जानी है सपनेकी माया
जलका जैसे उठा बबूला जलही में विनसाया
जलके धोखे बारू लखकर प्यासामृगउठधाया
दौड़ धूपसे व्याकुल होकर दुखी हुवा पछताया
अमरत जान विषयके रसपर तेरा मन ललचाया
दीन-दयालुभक्तहितकारी क्योंचितसेविसराया

मैं मेरी कर त्याग अभागे है सब ठाठ पराया
सुखानन्द पर धन के ऊपर मूरख क्यों इतराया



(राग बनजारा ताल ३)

१ मुनि-नाथ वशिष्ठ उचारा
सुन राम कहूं श्रुति सारा ॥ टेक
यह मिथ्या सब संसारा, माया का सकल पसारा जी, है जगत काल का चारा ॥ मुनि०
स्वपने में सम्पति पाई, जागे तब हाथ न आई जी, कुछभी नहिं यहां हमारा ॥ मुनि०
वह जावेगा जो आया, है ढलती फिरती छाया जी, नहिं रहै कुटुम परिवारा ॥ मुनि०
जिन निज स्वरूप पहचाना, उन ब्रह्म मई जग जाना जी, सुख आनँद लहौ अपारा ॥ मुनि०

---

१ सखी पनियां भरन कैसे जाना ! पनघट पै खड़ा है काना जी ॥

(राग बनजारा ताल ३)

पारथ प्रति कृष्ण उचारा
सुन गीता ज्ञान हमारा ।। टेक
जे वीर युद्ध हित आये, सब जान काल के
खाये जी, क्या करता सोच विचारा ।। पारथ०
है जीव अमर अविनासी, आनन्द रूप सुख
रासी जी, यह कभी मरै नहिं मारा ।। पारथ०
नहिं कटै शस्त्र के द्वारा, पावक से जाय न
जारा जी, बोरै न इसे जल धारा ।। पारथ०
जो माया मोह नसावै, और शरण हमारी
आवै जी, वह सुखानंद संसारा ।। पारथ०

(राग बनजारा ताल ३)

माता प्रति निर्मल ज्ञाना
भाषत मुनि कपिल सुजाना ।। टेक
विश्वम्भर घट घट बासी, अद्वैत अमर अवि-
नाशी जी, तुम धरौ उसीका ध्याना ।।माता०

जिन विषय वासना त्यागी, भये कृष्ण चरण अनुरागी जी, ते पावहिं पद निर्वाना ॥ माता०
जिन चंचल-मन को जीता, ते होंहिं न भवभय भीता जी, सो जीवन मुक्त सुजाना ॥ माता०
है ब्रह्म-ज्ञान सुख दाई, पावत ही सद्गति पाई जी, क्या सुखानंद फिर पाना ॥ माता०

(राग बनजारा ताल ३)

शुकदेव भागवत गाई
सुन मोक्ष परीक्षित पाई ॥ टेक
जो हरि चरणन चित लावै, भव-सागर से तर जावै जी, दुख जन्म मरण का जाई ॥ शुक०
इस जगमें यही झमेला, कर्मों की ठेलम ठेला जी, मिटती नहीं रेख मिटाई ॥ शुक०
सुर असुर सकल नरनारी, भूमंडल जल नभ-चारी जी, सब सृष्टि काल की खाई ॥ शुक०
नृप सुनी कथा चित लाई, सुन सकल सभा

हरषाई जी, सोई सुखानन्द ने गाई ॥ शुक०

(राग बनजारा ताल ३)

रम्भा शुक सन्मुख आई
छवि परम अनूप सुहाई ॥ टेक
बोली मुनि सों वह नारी, रमणी जिनको नहिं
प्यारी जी, तिन आयु अकाज गँवाई ॥ रम्भा०
शुक ताकों यह समझावैं, जे हरिसों चित न
लगावैं जी, तिन आयु अकाज गँवाई ॥ रम्भा०
रम्भा ने पुन यहि भाखा, जिन सुरति सुरस नहिं
चाखा जी, तिन आयु अकाज गँवाई ॥ रम्भा०
मुनि कहै न जिन तप कीना, रहे विषय भोग
आधीना जी, तिन आयु अकाज गँवाई ॥ रम्भा०
तिय सुखानंद पुनि गाया, शृंगार जिन्हैं नहीं
भाया जी, तिन आयु अकाज गँवाई ॥ रम्भा०

(राग बनजारा ताल ३)

कहैं शंकर सुनहु भवानी

हठ योग क्रिया सुखदानी ॥ टेक

योगी मन धीरज धारै, इन्द्रिन को दर्प प्रहारै
जी, नहीं चलै चाल मन मानी ॥ कहैं॰
षट कर्मन देह प्रछाले, नाडी सोधै मल टाले
जी, धोती नेती पुन तानी ॥ २ ॥ कहैं॰
कफ़ पित्त बात जब खोवै, निर्मल शरीर तब
होवै जी, अभ्यास करै हठ ठानी ॥३॥ कहैं॰
तब पावै सुख आनन्दा, विचरै तिहुँ लोक
सुछंदा जी, रहै अमर होय कल्यानी ॥४॥ कहैं॰

योग क्रिया. (१)

वर्णौतहूंहठयोगभवानी, भाषैं शिवशंकरमृदुबानी
रविशशिदोनोंसंगमिलावै, याहीतेहठयोगकहावै
मठमेंबैठकरैअभ्यासा स्वरगनिहठकरजीतैस्वासा
हठकरिकेआसनदृढकरई, हठकरिकै निद्रा परहरई

(२)

हठकरनिजआहारघटावैखारौखट्टौकछुनहिंखावै

तेज़कटुकभोजनकूंत्यागै,लहसनहींगनआवैआगै
गैहूंचांवलअमितअहारा,खीरखांड़घीराखैप्यारा
षटकर्म्मनकर देहप्रछालै,नाड़ीशुद्धहोय मलटालै

(३)

विधिकरकरैक्रियाहैंजेती,धोतीवस्तिऔरपुननेती
त्राटक निरखैं न्यौली फेरै,कपाल भाती नीके हेरै
येषटकर्मसिद्धिकेदाता, शुद्धहोयइनतेंनिजगाता

(४)

आमपित्तकफ़रहैनशेषा,निर्मलअङ्गहोयशुचिवेषा
पुनप्रियपाहठयोगप्रभावा,तिहूंलोकविचरैसतभावा
रहै यहीअभ्याससुछंदा,दिन२ बाढ़ैसुखआनन्दा

(राग बनजारा ताल ३)

सुन लषण कहा रघुराई
विधि की गति जानि न जाई ॥ टेक
बन बास कर्म-गति पाया, है प्रबल ईश की
माया ज़ी, नहिं चलै बुद्धि चतुराई ॥ सुन०

नाहिं दोष केकई केरा, हित राखत भरत घनेरा जी, भवतव्यहि मत पलटाई ॥ सुन०
जो महा-पुरुष हैं ज्ञानी, मानत सुख दुःख समानी जी, सहलेत कुलिश कठिनाई ॥ सुन०
मत तुम मन में घबरावो, सुख आनँद मोद बढावो जी, सन्तोष परम सुखदाई ॥ सुन०

(राग बनजारा ताल ३)

शवरी गृह रघुबर आये
जूठे फल भोग लगाये ॥ टेक
प्रभु प्रेम हिये कौ जानैं, ना ऊंच नीच चित आनैं जी, भक्तन के हाथ बिकाये ॥ शवरी०
करुणा-निधान रघुराई, हैं सन्तन के सुखदाई जी, फल देत सदा मन भाये ॥ शवरी०
नवधा भक्ती सुखदाई, शवरी को कह समझाई जी, ताके सब पाप नसाये ॥ शवरी०
जन सुखानंद गुण गावै, चर्णनसों ध्यान

लगावै जी, नहिं बनै नाथ बिसराये ॥ शबरी०

(राग बनजारा ताल ३)

श्री सीतापति रघुराई
लखि लषण गये मुरझाई ॥ टेक
बिलखाय कहत तुम ताता, मम हेत तजे पितु
माता जी, सही सीत घाम कठिनाई ॥ श्री०
सुत मित्र नारि परिवारा, मिल जाते बारम्बारा
जी, नहिं मिलैं पियारे भाई ॥ श्री सीताप०
किम तुम बिन घर फिर जाऊं, कलुषित मुख
काहि दिखाऊं जी, नारी हित भ्रात गँवाई ॥ श्री०
जब लछमन भये सुखारी, तब भयौ सुखानंद
भारी जी, कपि सैना सब हरषाई ॥ श्री०

(राग बनजारा ताल ३)

कहैं राघव पवन कुमारा
सुनले तू वचन हमारा ॥ टेक
तुम किये पराक्रम भारे, बहु कारज मेरे सारे

जी, है मुझे प्राण से प्यारा ॥ कहैं राघव०
निधि नांघ सिया सुधि लाया, लंका का कोट
जराया जी, रावण का गर्व प्रहारा ॥ कहैं०
जब लषण शक्ति शर खाया, दौनागिरि तूही
लाया जी, लछमन का प्राण उबारा ॥ कहैं०
तू सुखानन्द है मेरा, मैं ऋणी हुआ हूं
तेरा जी, क्या करूं तेरा उपकारा ॥ कहैं०

(राग बनजारा ताल ३)

मोरध्वज तुझको जांचा
तू सेवक मेरा सांचा ॥ टेक
मैं सत तेरा परखाया, सुत को तैंने चिरवाया
जी, नहीं किया तनक मन काचा ॥ मोर०
मैं साधू भेष बनाया, केहरि सँग लेकर
आया जी, तू नाच प्रेम का नाचा ॥ मोर०
तू मांगै सो वर पावै, मत मन में शंका लावै
जी, करले प्रमाण मम बाचा ॥ मोरध्वज०

वह सुखानन्द नर पावै, हर चरणन जो चित लावै जी, रहै प्रेम रंग में रान्ना ॥ मोरध्वज०

(राग बनजारा ताल ३)

पांडव भयभीत पुकारे
रख लज्जा कृष्ण मुरारे ॥ टेक
दुर्वासा मुनि है आया, शिष्यों का दल सँग लाया जी, हम आप विपति के मारे ॥पांडव०
भोजनका नहीं ठिकाना, मुनि शाप हेत हठ ठाना जी, कौरवन प्रपंच पसारे ॥ पांडव०
हरि कीन्हीं ऐसी माया, भोजन नहिं चुका चुकाया जी, खोले कुवेर भंडारे ॥ पांडव०
हैं प्रणतपाल गिरधारी, पांडुन की विपति निवारी जी, जन सुखानंद निस्तारे ॥ पांडव०

(राग बनजारा ताल ३)

यमराज जीव से बोला
तू वृथा भटकता डोला ॥ टेक

लख चौरासी भरमाया, तब नर-तन तू ने
पाया जी, जो था एक रत्न अमोला ॥ यम०
नहीं नैम धर्म निर्बाहा, दुष्कर्म किया जो
चाहा जी, अ-पवित्र किया नर चोला ॥ यम०
रहा विषय भोग लवलीना, सत कर्म तनकनहीं
कीना जी, भर लिया पाप का झोला ॥ यम०
रे सुखानंद अज्ञानी, तैं करी सदा मनमानी
जी, अब निगल आग का गोला ॥ यमराज०

(राग बनजारा ताल ३)

कहै मैनावती सयानी
गोपीचंद से मृदुबानी ॥ टेक
केते धन यौवन शाली, चल दिये हाथ लै
खाली जी, नहिं बाकी एक निशानी ॥ कहै०
तेरी कंचन बरणी काया लख सोच मुझे यह
आया जी, थिर रहै न निश्चय जानी ॥ कहै०
तुम योग मार्ग पग धारौ, गुरुदेव करें निस्तारौ

जी, कुछ करौ न आना कानी ॥ कहै मैना०
हैं गुरु जालन्धर पूरे, तप योग ध्यान जप
सूरे जी, सुख आनँद मंगल दानी ॥ कहै०

(राग बनजारा ताल ३)

गोपीचँद ने उर धारा
गुरु से यह वचन उचारा ॥ टेक
हे नाथ मुझे अपनाओ, गुरु-मन्त्र पवित्र
सुनाओ जी, मैं सेवक भया तुम्हारा ॥ गोपी०
मैं शरण आपकी आया, सब राज काज बिस
राया जी, अब करौ नाथ निस्तारा ॥ गोपी०
हठ योग जुगत बतलाओ, भव-निधि से पार
लगाओ जी, नहिं सूझत वारा पारा ॥ गोपी०
गुरु चरण कमल चित लाऊं, साधनमें ध्यान
लगाऊं जी, जो सुखानन्द का द्वारा ॥ गोपी०

(राग बनजारा ताल ३)

बोले जालन्धर जोगी

तुझसे न तपस्या होगी ॥ टेक
है कठिन योगका साधन, तू कोमल तन चंचल मन जी, सुकुमार विषय-रस भोगी ॥ बोले०
जप योग कठिन है भारी, सूखेगी काया सारी जी, कठिनाई सहन न होगी ॥ बोले०
जब चन्द्रकला रस पावै, तब तन निर्मल हो जावै जी, पुनि देह अमर भी होगी ॥ बोले०
होता है मर कर जीना, तब मिलै सुधारस पीना जी, सुख आनँद रहै निरोगी ॥ बोले०

(राग बनजारा ताल ३)

जब मन की ममता भागी
भये भर्तृ हरि वैरागी ॥ टेक
एक विप्र अमर-फल लाया, नृप रानी को दे आया जी, था जिसका अति अनुरागी॥जब०
तिन जार पुरुष को दीना, उन वेस्या अर्पन कीना जी, तिन दिया नृपति बड़भागी॥ जब०

फल लखि भूपति पछताना, सर्वस रहस्य पहिचाना जी, भ्रम सोया प्रज्ञा जागी ॥ जब०
धिक्कारा सबहि बिसारा, हरि सुखानंद उर धारा जी, प्रभु से सांची लौ लागी ॥ जब०

(राग बनजारा ताल ३)

विश्वम्भर जगदाधारा
भव-बन्धन काट हमारा ॥ टेक

तुम अजर अमर अविनासी, आनन्द रूप सुख रासी जी, तुम बिन है कवन सहारा ॥ वि०
तुमने ही विश्व बनाया, फैलाई अपनी माया जी, ना भेद किसी ने पाया ॥ विश्वम्भर०
सहसानन कथ कथ हारा, चतुरानन वेद उचारा जी, जो नेत ही नेत पुकारा ॥ विश्वम्भर०
तुम सुखानंद के दाता, अखिलेश्वर विश्व विधाता जी, जग के तुमही आधारा ॥ वि०

(राग बनजारा ताल ३)

आया ममता ने घेरा

मैं लिया आसरा तेरा ॥ टेक
भव-सागर अगम अपारा, गंभीर गहन जल धारा जी, है बीच भँवर उरझेरा ॥ माया०
मँझधार नाव है मेरी, बिकराल पवन ने घेरी जी, पानी भरगया घनेरा ॥ माया ममता०
चहुं ओर दृष्टि दौड़ाई, रच्छक ना दिया दिखाई जी, तब पद-पंकज को हेरा ॥ माया०
तुम सुखानन्द के सागर, जीवन धन जगत उजागर जी, प्रभु पार लगावहु बेरा ॥ माया०

(राग बनजारा ताल ३)

करिये निस्तारा मेरा
प्रभु लिया आसरा तेरा ॥ टेक
विषयन ही में चित राखा, नहिं भक्ति सुधारस चाखा जी, कीना दुष्कर्म घनेरा ॥ करिये०
मानुष तन रत्न गँवाया, ना चरण कमल चित लाया जी, अब आय काल ने घेरा ॥ करिये०

सुत नारि कुटुम परिवारा, जिन के हित अघ संचारा जी, सब ने अपना मुख फेरा ॥ करिये०
तुम भक्तन के हितकारी, सुधि लीजौ नाथ हमारी जी, जन सुखानन्द है चेरा ॥ करिये०

(राग बनजारा ताल ३)

मुनि मार-कंड यश गाया
हरि माया जग भर माया ॥ टेक
अज को माया ने घेरा, ब्रज-मंडल कीना फेरा जी, गो वत्स चुराकर लाया ॥ मुनि मार०
ब्रज बोरन हित सुर राया, हठ प्रलय वारि बरसाया जी, जब ज्ञान भया पछताया॥मुनि०
है कौन जगत के मांहीं, जेहि माया व्यापी नांहीं जी, सबको इन खेल खिलाया ॥मुनि०
कहै सुखानन्द कर जोरी, बिन करुणा गति नहिं मोरी जी, तेरा निर्मल यश गाया ॥ मुनि०

(राग बनजारा ताल ३)

शिव धनु भंजा रघुराई

सुधि परसराम ने पाई ॥ टेक

बोले जिन शिव धनु तोरा, सो नृपति शत्रु है मोरा जी, दूं यमपुर उसे पठाई ॥ शिव धनु०

तब लषण कही मृदुबानी, मुनि-नाथ रार क्यों ठानी जी, बहु धनु तोरे लरिकाई ॥ शिव०

हुआ वाद विबाद घनेरा, अरु पड़ा तनिक उरझेरा जी, तब रघुवर चाप चढ़ाई ॥ शिव०

पुनि अस्तुति कर मुनि धाये, नृप जनक सुखानँद पाये जी, लखि सकल सभा हरषाई ॥ शिव०

(राग बनजारा ताल ३)

मत नर-तन वृथा गँवावो
हरि सुमिरन में चित लावो ॥ टेक

लख चौरासी भरमाया, तब मनुप योनि में आया जी, मायासे मन विलगावो ॥ मत०

गई अधिक रही है थोरी, यह तन न मिलै बहोरीजी, सिर धुनि धुनि पुनि पछतावो ॥ मत०

धन यौवन तरु की छांहीं, थिर सदा रहेंगे नांहीं जी, ऐसा अवसर कब पावो ॥ मत०
अघ संचारत वय बीती, सुख-आनँद हार न जीती जी, मत उलटा दाव लगावो ॥ मत०

(राग बनजारा ताल ३)

सोया ग़ाफ़िल बंजारा
बाजा है कूच नगारा ॥ टेक
जो माल लादकर लाया, चोरोंने उसे चुराया जी, तब खाली हाथ सिधारा ॥ सोया०
जो सोया उसने खोया, हाथों को मल कर रोया जी, सिर अपना दे दे मारा ॥ सोया०
जो आया है सो जावै, शुभ अशुभ कर्म फल पावै जी, कुछ चलै न इसमें चारा ॥ सोया०
तू सुखानन्द कहलाता, क्यों फिरता है मद माता जी, सिर लादै अघ का भारा ॥ सोया०

(राग बनजारा ताल ३)

सुनरी सजनी सुकुमारी
कर प्रीतम से हित प्यारी ॥ टेक
ना सदा मात के रहना, पी घर जाना है
भैना री, चलने की कर तैयारी ॥ सुनरी०
तन मन का मैल उतारौ, नख-सिख शृंगार
सँवारौ री, तब पी की बनो दुलारी ॥ सुनरी०
जो प्रीतम से हित राखै, नित प्रेम अमी-रस
चाखै जी, दुख दारुण सहै कुनारी ॥ सुनरी०
जो पी सों हित सरसावै, सुख आनँद सर्वस
पावै री, हो उसकी कभी न ख्वारी ॥ सुनरी०

(राग बनजारा ताल ३)

सजनी ना टलै टलाया
जो हुक्म पिया का आया ॥ टेक
है काल अतुल बल धारी, वह आता बारी
बारी री, अपना कर देत पराया ॥ सजनी०

घर से कर पकर निकारै, तत्काल छार कर
डारै री, यह कंचन बरनी काया ॥ सजनी०
क्यों करती मेरा मेरा, कुछ नहीं यहां पर
तेरा री, तज मोह मई यह माया ॥ सजनी०
धन दौलत माल खज़ाना, सब छोड़ तुझै है
जाना रे, क्या सुखानन्द इतराया ॥ सजनी०

(राग बनज़ारा ताल ३)

दो दिन का जग में बासा ।
देखा हम खूब तमासा ॥ टेक
संसार मुसाफ़िर खाना, नित इसमें आना
जाना जी, मत रहनेकी कर आसा ॥दोदिन०
जो आते हैं वे जाते, सब अपना दैन चुकाते
जी, क्या स्वामी और क्या दासा ॥ दो दिन०
है छण भंगुर यह काया, क्यों इसको लाड़
लड़ाया जी, पानी में पड़ा बतासा ॥ दोदिन०
सुन सुखानन्द गरबीले, हरि नाम अमी रस
पीलेरे, जब तक चलताहै स्वासा ॥ दो दिन०

(ग़ज़ल चलत ताल दादरा)

नर[१] तनको पाके क्यों तुझे अज्ञान होगया।
धन बलका मद स्वरूपका अभिमानहोगया॥टेक
मिलता नहीं मनुष्य का तन बार बार है
आवा-गमन का शीस पै चक्कर सवार है
अनमोल रत्न हाथ से नादान खोगया॥१॥
जिनको कि अपना कहता है तेरे सगे नहीं
तुझको तजेंगे साथ तेरे जाँयगे नहीं
क्यों उनके रंजो ग़म में परेशान होगया॥२॥
मद मोहका पियाहै भला यह नशा नहीं
जो कररहाहै देख कुछ उस में नफ़ा नहीं
जाने का नर्क में तेरे सामान होगया॥३॥
कर ध्यान ईश का कि इसी में भलाई है,
आवा-गमन के दुख से इसी में रिहाई है,
सुखनंद तेरे दर्द का दर्मान होगया॥४॥

---

१ रघुनंद दीनबंधु तनक तौ दया करौ।

(ग़ज़ल चलत ताल दादरा)

हे दीन के दयाल दया दीन पर करो,
आया तेरी शरण में मेरी दीनता हरौ॥टेक
जिमि दुख दरिद्र दीन सुदामा का हरलिया,
रखलाज द्रौपदी की अभय उसको करदिया,
ऐसीही मेरी ओर दया की नज़र करौ॥१॥
शवरी ने क्या सुकर्म किया ऐ जगत पती,
फल खाके उसके हाथसे दी उसको सदगती,
मेरे भी पाप ताप इसी भांति परि हरौ॥२॥
गजराज ने वताइये क्या जोग जप किया,
सुन उसकी टेर ग्राह के मुखसे छुड़ादिया,
इस दीनपर दया जो करी पर करी करौ॥३॥
अज्ञान मेरे दिल का दया-मय मिटाइये,
परदा दुई का जो कि पड़ा है हटाइये,
इतनी नज़र करमकी सुखानन्द पर करौ॥४॥

(ग़ज़ल चलत ताल दादरा)

मन मूढ़ चेत मेरा कहा मान मान मान ।

अज्ञानछोड़ईशकाधर ध्यान ध्यान ध्यान॥टेक
माया के जाल से जो रहै दूर दूर दूर,
और काम क्रोध को भी करै चूर चूर चूर,
विश्वेश का तभी हो तुझै भान भान भान॥१॥
हरि चर अचर जगतमें रहा व्याप व्यापव्याप,
कैसे छिपैगा उस्से तेरा पाप पाप पाप,
धरमाचरणकी डाल अरे बान बान बान॥२॥
सत्संग कर कुसंग में मत बैठ बैठ बैठ,
रख नम्रता किसी से न तू ऐंठ ऐंठ ऐंठ,
मिलता विनीत भाव से है मान मान मान॥३॥
अपना स्वरूप वास्तविक चीन्ह चीन्ह चीन्ह,
फैला न हाथ बनके कभी दीन दीन दीन,
करसुखअनन्द कृष्णकागुण गानगानगान॥४॥

(ग़ज़ल चलत ताल दादरा)

रसनासे आठ-याम जपो नाम रामका।
है राम नाम मन्त्र बड़ा तेरे काम का॥टेक

हरि नाम जो जपैगा वह हरि धाम जायगा,
आवा गवन की घोर विपद भी मिटायगा,
पावैगा फिर न देह कभी हाड़ चाम का॥१॥
अभिमान सब वृथा है यहां मुल्को मालका,
संसार है असार तू है कौर काल का,
कायम रहैगा साथ न सुत का न वाम का॥२॥
मारग अनेक हैं नहीं जिनका शुमार है,
कलियुग में रामनामकी महिमा अपार है,
इसमें नहीं है खर्च भी दमड़ी छदाम का॥३॥
जिसकी कि शुद्ध चित्तसे हरिसे लगन लगी,
रसना भी जिसकी रहती है हरिनाम से पगी,
उसने ही सुख अनन्द लिया हरिके धामका॥४॥

(गज़ल चलत ताल दादरा)

तू सोरहा है नींद में अब तक भरा हुवा।
बोझा है सिर पै तेरे सफ़र का धरा हुवा॥टेक
बेहोश होगया है बदन की खबर नहीं,

यह है सराय यार यहां तेरा घर नहीं,
तू नींद में है या कि पड़ा है मरा हुवा ॥१॥
चलता था जिनका चक्र वो राजे चलेगये,
झंडे निशान झुक गये बाजे चले गये,
आया न काम मालो ख़ज़ाना भरा हुवा ॥२॥
जीता था काल जिसने वो रावण रहा नहीं,
भव-निधि में ऐसा कौनहै पड़कर बहानहीं,
सूखेगा एक रोज जो पौधा हरा हुवा ॥३॥
अवसर न चूक यह न कभी हाथ आयेगा,
पछतायेगा मनुष्य का तन फिर न पायेगा,
सुनता नहीं है तुझको सुखानन्द क्या हुवा ॥४॥

(ग़ज़ल चलत ताल दादरा)

तोते न टाँय टाँय निरर्थक कदापि कर ।
कल्याण है इसी में कि सोहं का जापकर ॥टेक
फल फूल तेरे वास्ते जिसने उगा दिये,
कैसे निभेगी यार उसी को भुला दिये,

इस विश्व वाटिका में न तू घोर पाप कर ॥१॥
परमात्मा की ओर तेरा ध्यान कुछ नहीं,
भूलाहै अपना रूप तुझे ज्ञान कुछ नहीं,
इस भूल में न फूल अरे इसका ताप कर ॥२॥
यह पींजरा कि जिसमें तू बैठा हुआहै यां,
जर्जर हुआहै टूट गईं इसकी तीलियां,
बिखरेगा यह जरूर न इसका विलाप कर ॥३॥
इस पींजरे का ग़म तुझे होना न चाहिये,
ले हरिका नाम सीधा परम धाम जाइये,
अच्छे बुरेका ज्ञान सुखानन्द आप कर ॥४॥

(ग़ज़ल चलत ताल दादरा)

मैंना तू अपने नामका ले अर्थ जान जान।
अभिमान का न भाव हिये बीच आन २ ॥टेक
मैं मैं की कहनेवाली का देखाहै तू ने हाल,
घातक उतार लेते हैं छुरीकी छिन में खाल,
मैंना का अर्थ है न करै मान और गुमान ॥१॥

धृतराष्ट्र सुतका नाश इस अभिमानने किया,
शिशुपाल का विनाश इस अभिमानने किया,
अभिमानकरके कंसने खोईथी अपनी जान ॥२॥
मेवा है नाम तेरा तो अभिमान छोड दे,
रख नम्रता का भाव अहंकार तोड दे
इसभेदऔररहस्यकारखदिलमेंअपने ध्यान॥३॥
बरताव कर यही तो सुखानन्द पायेगी
प्यारी रहैगी सबकी बडे मान खायगी
परलोक में मिलैगा परम्पद तुझे निदान॥४॥

(ग़ज़ल चलत ताल दादरा)

कर दिलमें यह विचार तेरा कौन रूप है
तू जिसमें डूबता है वह माया का कूप है॥टेक
है नाशमान देह नहीं जीव नाशमान
बनता है जान बूझ केतू किस लिये अजान
घट में तेरे अरे वही ज्योती स्वरूप है॥१॥
अज्ञान बन के ब्रह्म से तू जीव होगया

अनमोल रत्न पास तेरे था सो खोगया
क्यों रंक होरहा है स्वयं तू ही भूप है॥२॥
सोहं का जाप कर तो सुखानन्द पायेगा
अज्ञान अंधकार न फिर पास आयेगा
उपमा तेरी नहीं है तूही तो अनूप है॥३॥

(ग़ज़ल चलत ताल दादरा)

आतम को आप भूल के हैरान होगया
सर्वस्व जान बूझ के नादान होगया ॥ टेक
यह देह पंच तत्व की है देह तू नहीं
मज्जा नहीं तू मांस नहीं तू लहू नहीं
जानेगा निज स्वरूप जहां ज्ञान होगया॥१॥
तू इन्द्रियों के साथ लगा घूमता रहा
मन्मथ मतंग मन में तेरे झूमता रहा
आवागवन के फेर में हलकाना होगया॥२॥
समझा रहा है तुझको सुखानद ज्ञानकर
आनंद है अखंड इधर अपना जानकर
यह भान होगा सुखकी तुही खान होगया॥३॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

पिया से गर मिला चाहै तो दुनियां से नकरयारी[1]
कपट उसको नहीं भाता न ऐयारी न मक्कारी ॥
वो ज्ञाता है वो द्रष्टा है वही सर्वत्र व्यापक है
नहीं कुछ उससे छिपसकता छिपावैं लाखनरनारी
वही अव्वल व आखिरहै वही जाहिर व बातिन है
वही हाज़िर वही ग़ायब उसीका हुक्म है जारी ॥
नहीं जातीहै यह दुनियां किसीके संग सुखआनँद
सगी है अपने मतलबकी नहीं करती वफादारी ॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

जो तेरा प्रेम सांचाहै मिलैगा प्राणका प्यारा ।
हिये की आंख से देखो नहींहै तुझसेवहन्यारा॥
विषयसे मनकोबिलगादेनिरंतरध्यानसुमिरनकर
प्रिफुल्लित मनसे नैनोंसे बहादे अश्रुकी धारा॥
लगाकेरध्यानकाआसन भगादे मनकीआशाको

---

१ बिना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारीहै ॥

नज़र आवैगा मस्तकमें चमकता ब्रह्मकातारा ॥
सुनैगा नाद अन-हद्का सुखानंद अपनेकानोंसे
उसी आनंद में मनसे मिटैगा शोक भ्रमसारा॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

अगर है चाह दर्शनकी तो शंका दूरकर मनकी।
नकुछपरवाहकरसुखकीनइच्छामालकीधनकी ॥
पितासे भय नहींखाया सदा हरिका सुयशगाया
निरखलेचालतूप्यारे अटल प्रहलादकेपनकी ॥
धुरूको लौलगी हरिसे निकलकरचलदियाघरसे
तजाहित राज मंदिरसे अकेले राह ली बनकी ॥
जो सांचाप्रेम है मन में नहीं अटकाव दर्शन में
न आवै मैल चितवन में लगैगरचोटभीधनकी॥
करैगा गर तू हरिभक्ती बढ़ैगी रातदिन शक्ती
हो सुखआनन्दअनुरक्तीनिरंतरमोक्षसाधनकी॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

हुवा संग्राम भारत का लड़ाई हो तो ऐसी हो ॥

बने हरि सारथी रणमें मिताई हो तो ऐसीहो॥
मेरी रख लाज यदुराई पुकारी द्रोपदी रोकर
समाये वस्त्रमें आकर सुनाई हो तो ऐसीहो ॥
रहा रावणका लंकामें न कुछ नामो निशां बाकी
विभीषणकी फिरी जैसी दुहाई होतो ऐसी हो ॥
जोथा भूभारकमकरना, लड़ाया उनकोआपसमें
परस्पर लड़मरे यादव सफ़ाई हो तो ऐसीहो ॥
हुई सुग्रीवो रघुबर की अनौखी मित्रता जैसी
सुजनताहो तो ऐसीहो मिताईहो तो ऐसीहो ॥
डराया लोभ दिखलाया बहुत सीताको रावणने
न उसने सत डिगाया पारसाई होतो ऐसीहो ॥
सुदामाके चरण धोये सुखानन्द द्वारिकापति ने
जो करुणाहो तो ऐसी हो भलाईहोतो ऐसीहो॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

दियादशरथको इच्छाबर अगर बरहोतोऐसाहो।
लिया अवतार उसकेघर,दयाकरहोतो ऐसाहो॥

विराजै सीस पर गंगा भुजंगा राजते अंगा
सुहाई गौरि अर्धङ्गा दिगंबर हो तो ऐसाहो ॥
बसे कैलाश के ऊपर दयाकी कोर है भू पर
अटल विश्वास हरिजूपर विशम्भरहोतो ऐसाहो॥
किया जब कोप सुरपतिने प्रलयकामेघबरसाया
धरा गिरराज नखऊपर जो गिरधर होतोऐसाहो
लखी छबिकी छटा जिसने हुईगोपी वहीमोहित
बसे नैनोंमें बंसीधर जो सुन्दरहो तो ऐसाहो॥
किया विध्वंस मथुरामें रजक चानूर मुष्टक को
पछाड़ा कंसको जाकर दिलावरहोतो ऐसाहो॥
थकेहैं शेष और शारद नहीं गुण गासके पूरा
तो सुख आनन्द क्या गावै गुणागरहोतोऐसाहो

(ग़ज़ल ताल धमाल)

समाया ईश घटघटमें समानाहो तो ऐसाहो ।
मिलाया पंचतत्वोंको मिलानाहो तो ऐसाहो ॥
किया इच्छा से सम्पूरण चराचर विश्वको पैदा

अलौकिकशक्तिरचनाकी दिखानाहोतोऐसाहो॥
तनक से बीज के भीतर विटप बटका छिपायाहै
चतुरताहो तो ऐसी हो छिपाना होतो ऐसाहो॥
कोई आकाश मंडल में कोई भूमी पै रहता है
बसायाहै कोई जलमें बसानाहो तो ऐसा हो ॥
उगाये फूल फल केते मधुर स्वादिष्ट षटरस के
छई छविकी छटा भू पर उगानाहोतो ऐसाहो॥
दिवाकर चन्द्रमां तारे रचे आकाश मंडल में
निरन्तर जगमगाते हैं रचानाहो तो ऐसाहो ॥
बढ़ै जो खर्च करने से वो है भंडार विद्या का
सुखानँद दास परिपूरण ख़ज़ानाहोतो ऐसाहो॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

दयानिधि दीन सेवकको दया की आस भारीहै
करौगे कोर करुणाकी लगी यह इन्तज़ारीहै ॥
बिलग जबसे हुआ तुमसे लगाआवागवनपीछे
जमाई आके माया ने मेरे ऊपर सवारी है ॥

पड़ा कर्मोंके बन्धनमें फँसा दुनियां के धंधों में
हुआअबसोच यह मन में कि़ग़फ़लतमेंगुजारीहै
दयाकर दास पर स्वामी ये विनतीहैसुखानँदकी
उबारेहैं अधम लाखों अब आई मेरी बारीहै ॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

मदद गुरुदेवकी जबतक हमें हासिलनहींहोगी।
कभी आसान जीवनकी कड़ीमंजिलनहींहोगी॥
जटा और नख बढ़ाने से भसम तनपर रमानेसे
नदी नद में नहाने से सफ़ाई दिल नहींहोगी ॥
फिराओ उम्रभर माला नहोगादिलमेंउजियाला
बिछाओबाघमृगछाला येमुशकिलहलनहींहोगी
नहीं जो प्रेम सांचाहै न सुख आनन्द पावैगा
जो मन बसमेंनहीं भक्ती तेरी निश्चलनहींहोगी॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

शरण में आगया तेरी मुझै स्वामी न विसराना
नज़रअवगुणपैमतकरनादयाकीदृष्टि दिखलाना

फँसी भव-सिन्धु में नैया हँसीहोगी अगर डूबी
इसे करुणा की बल्लीसे दयानिधपारलेजाना॥
बिछाहै जाल मायाका फँसा मैं इसके फंदे में
सुखानँदफड़फड़ाताहैज़राउलझनयेसुलझाना॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

भटककर हर तरफ़ स्वामी तेरे चरणोंमेंआयाहूं
प्रबल कामादि बैरी हैं इन्हींका बससतायाहूं ॥
कुटुम परिवार सुत दारा नहीं साथी हुआ कोई
लखे सब मीत स्वारथकेसभीसे तंग आयाहूं ॥
तेरी पूजा व भक्तीका नहीं कुछभी कियासाधन
झुकीहै शर्मसे गर्दन विनय करते लजायाहूं ॥
सिवा तेरे सुखानँद का नहीं कोईभी हितकारी
तुही काटैगा भव बन्धन यही अभिलाषलायाहूं॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

दयाकी दृष्टि कर स्वामी शरणमें दीन आयाहै
चरण पंकज में मस्तकको झुकायाहै नवायाहै॥

तुम्हारे द्वारसे याचक कभी निर्मुख नहीं फिरता
इसी आशा ने मेराभी प्रभू साहस बँधायाहै ॥
ये इच्छा है कि चरणोंसेकभीचितकोनबिलगाऊं
लगाऊंध्यान निसबासर यहीःदिलमेंसमायाहै ॥
नज़र औगुणपैमतलाओ मुझे हेनाथअपनाओ
सुखानँद प्रेम सरसाओ छुड़ाओ मोहमायाहै ॥

(ग़ज़ल ताल धमाज़)

सुनो अनहदके बाजेको बड़ा आनंद पाओगे।
जगत के ताल तम्बूरे इसे सुन भूल जाओगे॥
न सारङ्गी न तबले में न बीना बांसुरी में है
मज़ा जो इसमें मिलताहै कहींढूंढानपाओगे॥
गरज बादलकी होती है कड़कबिजलीकीहोतीहै
बजेंगे तार सब तनके इसे जिसदम बजाओगे॥
उठेंगे दिलके जब परदे नज़र सब लोक आवेंगे
दुखोंको भूलजाओगे सुखानँद में समाओगे ॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

वो सूरत सांवरी ऊधो मेरे नैनों में फिरती है
बनी है आंख का तारा बिसारे ना बिसरतीहै॥
सुरीली बांसुरीकी ध्वनि बसी रहती है कानोंमें
कटारी तीखी चितवनकी हिये में काटकरतीहै॥
तुम्हारी ज्ञानकी बातें नहीं भाती हैं ऊधोजी
ये पाती तेज़ काती है हमारा दिल कतरतीहै॥
हमें जब याद आतीहै वो सुखआनन्दकी बातें
कहें क्या तुमसे ऊधोजी जोकुछदिलपरगुज़रतीहै

(ग़ज़ल ताल धमाल)

बिरह की आग ने ऊधौ हमारा दिल जलायाहै
हलाहल खाके मरजावें यही मनमें समायाहै॥
दरस दिखलाके मोहनका हमारा दिलकरोठंडा
वो पूरणब्रह्म है जिसकी तुम्हारा ब्रह्म छायाहै॥
नहींसुधबुधरही तनकी बसनकी औरन भूषणकी
लगी है आस दर्शनकी उसीमें मन लगायाहै॥

भटकती फिररहीहैं हम उसीकी खोजमेंनिशादिन
कहीं वनमें न उपवनमें न वह कुंजनमेंपायाहै॥
तुम्हारी ज्ञान गाथासे सुखानंद जी है घबराता
उसीचितचोरकोलाओ़किजिसनेदिलचुरायाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

तुम्हारी बात ऊधौजी लगी उरमें कटारीसी।
छुरीसी लगरही है चीरती है दिलको आरीसी॥
हैं जैसे स्याम तुम भी निर्दई तन मन के कालेहो
दया तुमको अगर होती तो कुछ कहते हमारीसी
नहीं दिनरैन कल पड़तीहै हमकोऐसीव्याकुलहैं
भटकती फ़िररही हैं हम मृगी जिमिबाणमारीसी
यह विस्मयहै सुखानँद स्याम क्योंकुबरीपैरीझेहैं
कहो तुम धर्म से है कूबरी कीरति दुलारीसी॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

जिगरको चीरकर ऊधौ तुम्हें हम कैसे दिखलावैं
हमारा दम निकलताहै नहीं बेदर्द के भावैं॥

गये हैं जबसे मथुराको हमारी सुधि बिसारीहै
करैं सुखभोग कुबजा से हमैं हठ योगसिखलावैं॥
कभी रस रास करते थे हमारे साथ कुंजों में
निठुर अब होगये ऐसे हमें दर्शनको तरसावैं॥
न सुखआनंद मिलताहै हमें अब अपने जीनेमें
यही जीमें समाती हैकि विष खा खा के मरजावैं॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

कहैं क्या तुमसे ऊधौजी ये सब कर्मोंकी मायाहै
बिरहमें हमको मारा कूबरीसे दिल लगायाहै॥
हमारे घरमें घुसघुसकर जो दधिमाखनचुराताथा
उसी चितचोर प्यारे ने हमारा दिल चुरायाहै॥
मधुर रागोंसे कानोंमें अमीरस जो चुवाता था
उसीने योगका यह बेसुरा अब राग गायाहै॥
यहांकाहाल सब जाकर सुनानाउनकोसुखआनँद
यह कहनागोपियोंका कंठमें अब प्राणआयाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

बिरहके ताप में ऊधौ पिलाई खूब ठंडाई ।
सुलगतीथी जोसीनेमें वोत्राकर आगभड़काई॥
ये गठरी ज्ञानकी अपनी यहांसे फ़ेर लेजाओ
न गाहकहै यहां कोई कि हैं सनप्रेमव्यवसाई॥
बिरह के रोग की बूंटी हमें दर्कार है ऊधौ
तुम्हारी योगकी दारू हमारे मन नहीं भाई ॥
करौ इतनी दया हमपर मिलावो प्राण प्यारेसे
तोसुखआनंदसे दिलकी कलीखिलजायमुरझाई

(ग़ज़ल ताल धमाल)

मिलादे स्यामसे ऊधौ तो तेरे गुण सदागावैं ।
नहीं दिल अपने काबूमें इसेकिसतौरसमझावैं॥
नहीं मालुम क्या हमसे हुई तक़सीर मोहनकी
विनय करना खता जोकुछ हुईहोंमाफ़फ़रमावैं॥
करैंगी उनकेदर्शनसे सफलहम अपनीआंखोंको
बहुतदुख देचुकेहमको अधिक इससेनतरसावैं॥

 (२)

हमारे जोग लैने से जो सुख-आनंद उनको हो
जो आकर कानमें मुद्रा भगोंहे वस्त्र पहरावैं ॥

(गज़ल ताल धमाल)

न होगी सद्गती हरगिज़ बिना हरिके भजनतेरी
लगी पीछे रहैगी लाख चौरासीकी चकफेरी ॥
नहींहै प्रेम गर दिलमें तो जपसुमिरनअकारथहै
हुवा क्या लाख दानोंकी अगरमालाबनाफ़ेरी ॥
करो हठयोगका साधन लगाधूनी जलाओतन
नहो बसमें जो चंचलमन कटैना कर्मकी बेरी ॥
सुखानँद की कही मानों हरीसे हितकरो सांचा
हटाकर दिलको विषयों से बजादो प्रेमकीभेरी॥

(गज़ल ताल धमाल)

पड़े सोतेहो क्यों ग़ाफिल मुसाफिररेलआतीहै ।
उठो सामानको बांधो अजल घंटी बजातीहै ॥
करो चलनेकी तैयारी सवारी कालकी आई
दुवा लेताहै जब गर्दन नहीं कुछ पेशजातीहै॥

कुटुम परिवार सुत दारा तजेंगे साथ सब तेरा
अकेलाहै तुझै जाना नहीं कोई संघाती है ॥
गया रावणसा बलधारी तजी सुखसंपदा सारी
सुखानँद अंतकी बारी न दुनियांकामआतीहै ॥

(ग़ज़ल ताल धमोल)

बहुत से रोज़गारी छल कपटसे धनकमाते हैं ।
तिलक छापे लगाकर वेष साधूका बनाते हैं ॥
पहनकर गेरुवे कपड़े गले में डालकर माला
जटा सिरपर बढ़ाते अंगपर भस्मी रमाते हैं ॥
कोई कीलोंपै बैठा ध्यान शुक्काम्बरका करताहै
अनेकों जाके बाज़ारोंमें योगासन जमाते हैं ॥
कोई दम्भी जमाअतका गुरूघंटाल बनता है
जमाहो मुफ्तखोरे माल बे महनत उड़ाते हैं ॥
महन्तोंकी न पूछो जिनकी लीलाही निरालीहै
ढिठाईसे असत आचारका बीड़ा उठाते हैं ॥
बने बगला भगत कितने गृहस्थी पेटके काले

तिलक छापे दिये विश्वासका फंदा लगाते हैं ।।
कहा जोहालसुखआनन्दयहकलियुगकीलीलाहै
सभी ऐसे कुकर्मी अंत में यमदण्ड पाते हैं ।।

(ग़ज़ल ताल धमाल)

कथन श्रीकृष्णका गीता यही हमको बताती है
हरीकी निश्चला भक्ती परम्पदको दिलाती है ।।
शुभाशुभ कर्मका बन्धन इसी से टूट जाता है
यही आवागमन को काटनेकी तेज़ कातीहै ।।
भरमको छेदतीहै मन की शंका दूर करती है
कुपंथोंसे हटाकर मोक्षमारग पर चलाती है ।।
सुखानँद कोषकी कुंजी यही अर्जुनको बतलाई
हियेका खोलकर फाटक हरीसे जा मिलातीहै।।

(ग़ज़ल ताल धमाल)

जतनकरमोक्षका नरतन नहीं फिरमिलनेवालाहै
हैं सांचे लाख चौरासी ये ढांचासबमेंआलाहै।।
इसी में ज्ञान होता है इसी में ध्यान होता है

यही गुणवान करताहै बनावटमें निराला है ॥
दिखाई चातुरी इसको बनाकर चारआनन ने
बड़ी कारीगरी से नरका तन सांचेमें ढालाहै ॥
कुमारग में पड़ा तो, है नहीं इससे बुरा कोई
जो सुखआनन्द साधूहै वही जगकाउजालाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

हरीकाध्यानकरनिशदिनाकिवहजगकाविधाताहै
दुखोंको दूरकरताहै विपति में काम आताहै ॥
वही है सृष्टिका करता चराचर विश्व का भरता
वही संहार करताहै मिटाकर फिर बनाताहै ॥
चराचरमें जोहै व्यापक नहीं उससे पृथक कोई
हियेकी आंख खुलतीहै तभीजलवादिखाताहै॥
करैगा प्रेम जो उससे तो सुख आनन्द पावैगा
विषय और भोगमें फँसकर वृथाआयूगँवाताहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

तपाहूं तीन तापोंसे बिपति ने आ दबाया हूं ।

दुखीहूं दीन दुर्बलहूं शरण स्वामीकी आयाहूं॥
तुम्हारा नाम सुनताहूं दया-निधिदीनहितकारी
सुयश विख्यातहै जगमें इसीआशासेआयाहूं।।
मेरे औगुण न चितलाना निभाना टेकको अपनी
बुराहूं या भला मैं हूं तुम्हारा ही बनाया हूं ॥
कुटुम परिवार सम्बन्धी सब अपनेसुखकेसाथीहैं
नज़रसे ग़ौरकी देखा तो पाया मैं पराया हूं ॥
मिलैगा मुझको सुखआनन्द चर्णोंमें तुम्हारेही
यही विश्वास और आशामेंअपनेसाथलायाहूं॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

खड़ा यह दीन द्वारेपर तेरे दर्शनका प्यासाहै।
विमुख फिरकरनजावैगायहीयाचकको आशाहै।।
वचन मन कर्म से सेवा करूं द्वारे पै रमजाऊं
करूंगुणगानउसदमतककिजबतक तनमेंस्वासाहै
दयाकी दृष्टि होजावै तो बेड़ा पार हो मेरा
विनय करतायहीनिसदिनयेसुखआनंददासाहै।।

(ग़ज़ल ताल धमाल)

मिलै सतसंग संतों का यही इच्छा हमारी है ।
कठिनजपयोगआदिकसेभीमहिमाँइसकीभारीहै
तपस्याको बड़ा कहते थे विश्वामित्र संगत से
वशिष्ठ उनसे यहकहतेथेकिसतसंगतिकरारीहै ॥
गये जब इसके निर्णयको कहा यह शेषने उनसे
ज़रालो साध पृथ्वीको कि बोझा मुझपैभारीहै॥
हुएलाचार विस्वामित्र सतसंगति बड़ी ठहरी
करौ सतसंग सुखआनन्दजोअघकी कुठारीहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

लिया वैराग विषयोंसे भजन हरिका सुहायाहै
तजी दुर्बासना मनकी हरीसे दिल लगायाहै ॥
यहांहै प्रीति स्वारथकी नहीं कोई हितू अपना
कुटुम परिवार सुत नारी सभीकोआज़मायाहै ॥
ग़लत समझे थे हैं जग में विषयके भोगसुखदाई
इन्हीं के त्यागसे हमने बड़ा विश्राम पायाहै ॥

यही आवाज़ आती हैं श्रीनारद की वीणा से
सुखानंद उसने पायाहै हरीगुणजिसनेगायाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

नहीं परवाह कुछ इसकी जो सब संसाररूठाहै।
मनावैं किसलिये उसको अगर परिवाररूठाहै॥
येबदपरहेज़ बदबदकर विषयविषफलकोखाताहै
इलाज इसका करें अबक्या दिलबीमाररूठाहै॥
अगरचे रूठना बेकारहै स्वामी से सेवक का
न कुछ जब बसचलाहोकर तभीलाचाररूठाहै॥
दयाकी दृष्टि स्वामीकी कभी तो होही जावैगी
अरे मत मूढ़ सुखआनंद तू बेकार रूठाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

डगरिया प्रेम नगरीकी दयाकरके दिखादैना।
भटकताहूं अगमबनमें सुगम मारग बतादैना॥
बिकट यह विश्वका बनहै भयंकर जीवहैं इसमें
नहीं रक्षक यहां कोई मेरा पीछा छुड़ादैना॥

बड़ा गहराहै भवसागर भँवर में फँसगई नैया।
दया करके इसे स्वामी किनारेपर लगादेना ॥
हैअघका घोर अँधियारा नहींमारगनज़रआता।
तुम अपने ज्ञानकादीपकसुखानँदकोदिखादेना॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

निराला प्रेमका पथहै निराला इसका साधनहै।
समझले सोचले दिलमेंकिकैसीइसमेंउलझनहै॥
न थिर होताहै यह हरगिज़ न रोकेसेभीरुकताहै
करो निश्चल इसे स्वामी बड़ा चंचल मेरामनहै॥
कोईभी रत्न आभूषण नहीं पासंग है इसका
तुम्हारी निश्चला भक्ती हमारा तो परम धनहै॥
विषयके रसको सुखआनंद ललचातेहैं अज्ञानी
जो ब्रह्मानन्दकारसहै मज़ा उसकाविलक्षणहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

जो फलकी कामना करके सुकर्मी स्वर्ग जाते हैं
वोसुखकोभोगकरकुछदिन पलटदुनियांमेंआतेहैं

जिन्हें निष्काम भक्तीहै न इच्छा फलकी होतीहै
वही हैं मोक्ष अधिकारी नहींफिर जन्मपातेहैं ॥
अधम पामर फँसे रहकर सदा मद मोह मायामें
अशुभ कर्मों के कारण से वो यमकी मारखातेहैं
सुखानँद मिलनहींसकता विना निष्काम भक्तीके
जो सुखकामार्गहैप्यारे वो हम तुमकोवतातेहैं ॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

दिखादो ईशका दर्शन मुझे गुरुदेव करुणाकर
लगादो ज्ञानका अंजन हियेकी आंखमेंलाकर॥
वहुतभटका चहूंदिशि मैं पताहरिका नहींपाया
नहीं जानाकि रहताहै कहां विश्वेश विश्वम्भर ॥
कोई गोलोक का ग्वाला मेरे स्वामीको कहताहै
कोई कहताहै सागरमें मिलैगाशेष शय्यापर ॥
सगुण कोई वताताहै कोई निर्गुणका गुणगाता
सुखानँदपड़गयाभ्रममेंशरणआयाहैघवराकर ॥

(ग़ज़ल ताल, धमाल)

चराचरमें समाया है वही विश्वेश विश्वम्भर ॥

जगतकरता जगतभरता जगतहरतासुखदसुंदर॥
विविध मारग के अनुयायी निरर्थक क्लेशकरते हैं
जो इसमें भेद समझाहै पड़ाहै बुद्धिमें चक्कर ॥
नहीं मालुम होताहै अकारण द्वेषका कारण
परे है भेद भावोंसे जगत कर्तार करुणाकर ॥
किसीसे दोस्ती रखता न वह दुशमनकिसीकाहै
है सुखआनन्दसमदर्शीनज़ाररखताहैवहसबपर॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

यहांहैं जितने मत वाले हरेकक़ाहै जुदादफ्तर ॥
सबअपने मतकोकहतेहैं पराये मतसेउत्तमतर ॥
कोई विष्णू कोई शक्ती कोई शिवका उपासकहै
किसीने बाम मारगमें लगाया भैरवी चक्कर ॥
कोई है पीर ज़ाहर का मियांका कोई सेवकहै
मसानी सेढ़का कोई बना बिनदामका चाकर॥
नहीं बिन प्रेमो भक्तीके सुखानँद कोई साधनहै
मिटैआवागमनजिससे तरैनरजिससेभवसागर॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

जगतके मतगिनाऊंक्या कि संख्यासे जोहैंबाहर
हैयद्यपि भिन्नताउनमें नहीं सिद्धान्तमें अन्तर ॥
पृथक सवरूप कहतेहैं पृथक आकार जगपतिका
कोई साकार कहताहै कोई निर्देह विश्वम्भर ॥
कहांरहताहै क्या करताहै आदी या अनादी है
बहुत मतभेदहैं इसमें समझसेहै बहुत बाहर ॥
सगुणहै और निर्गुणभी अलखहै वह सुखानंदा
हरी है हरजगह व्यापक कहाताहै इसीसे हर ॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

नज़र आता नहींहै चर्म चत्तुसे वो विश्वम्भर ।
हियेकी खोलकर आंखेंलखोघटमेंनज़रभरकर॥
भरो तुम प्रेमको मनमें निरंतर ध्यान में लाओ
लगाकरमनकरोभक्तीहरीकी छलकपटतजकर॥
विषयकी बासनात्यागो परम अनुरागमें पागो
कुसंगतसे निकलभागो यहीहै साधनाहितकर॥

करोजोसाफ़अपनादिलतोसुखआनंदहोहासिल
सहल होगी कड़ी मंजिल रहै दुस्तरन भवसागर॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

अगोचरहै अजरहै और अमरहैईशअविनाशी।
चराचरमें उसीकी जोति है सर्वत्र परकाशी॥
उसीकी शक्ति से संसारका यह चक्र चलताहै
वहीतौ सुखका सागरहै वही आनंदकी राशी॥
उसी के नूर से चमके गगन मंडल में सैयारे
उसीकीदिव्यज्योतीहैजोरविशशिमेंहैपरकाशी॥
वहीतो विष्णुहोकर विश्वका पालनभी करताहै
वही संहार करदेता है सुखआनंद कैलाशी॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

दिखादे चन्द्रआननको जो परदेमें छिपायाहै।
छिपैगा क्यों छिपानेसे जो नैनोंमें समायाहै॥
नहींहै विश्वमें कोई कि तेरी जिससे तुलना हो
मुक़ाबिल तेरे क्याहोगा जो तेराही बनायाहै॥

सितारे क्या बिचारे हैं करें जो हमसरी तेरी
इधरहै चांद शर्मिन्दा उधर सूरज लजाया है ॥
दरशकी चाहमें कितने भटकते फिरतेहैं बनबन
जो पायाहै तो प्रेमीने ये सुखआनंद पायाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

हमेंहै आसरा तेरा तुही सबका सहायकहै ।
सभी आधीन तेरे हैं जगतका तूही नायकहै ॥
चराचर विश्व का स्वामी नहीं कोई सिवा तेरे
तुही कर्ता तुही धर्ता विनायकहै विधायकहै ॥
तुहीहै सर्व गुणराशी तुही निर्गुण कहाताहै
तुही सर्वेश है सर्वत्र है आनन्द दायक है ॥
तुही विश्वेश्वर है काल का भी काल है तूही
ये सुखआनन्दअनुचरभीतेरेगुणगणकागायकहै

(ग़ज़ल ताल धमाल)

अरे नादान ओ मूरख सँभल अब भी सबेराहै
तू मैं मेरी जोंकरताहै कुमतिने तुझको घेराहै ॥

तूजबदुनियांमें आयाथा बताक्या साथलायाथा
चलैगा साथ क्या तेरे जो करता मेरा मेराहै।।
यहां आताहै जो कोई तो खाली हाथ आताहै
उसी सूरतसे जाताहै यहां दो दिन बसेराहै ॥
नहींयहमाल और दौलत सुखानंद साथजायेगी
वही जायेगा जो हरिनामपर दाना बखेरा है ।।

(गज़ल ताल धमाल)

बड़ी तू भूल करता है जो कहता मेरा मेरा है
सफ़रहै दूरका प्यारे लगै जंगल में डेरा है ॥
किसीकी एकसी हालत कभी क़ायम नहीं रहती
कभी होताहै उजियाला कभी होता अँधेराहै ॥
बदलती रुखको दुनियांहै कि जैसे वृक्षकी छाया
कभी स्वामी बना कोई कभी बनता वो चेराहै।।
नकरअभिमानधनजनका नबलविक्रभववैभवका
चिरस्थाई नहीं कुछभी सुखानँद हेर फेरा है ॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

भजन भगवानका करके करौनरतनसफ़लअपना
रहैगी थिर न यह काया जगतहै रैनका सपना॥
बिना जगदीश के जगमें तुम्हारा कौन रक्षकहै
उसीसे प्रेम नितकरना उसीके नामको जपना॥
विषयकी बासना त्यागो हरीके ध्यान में पागो
न ग़फ़लतमें रहो जागो न तीनों तापसे तपना॥
सुखानंद भूल करतेहो जो इस दुनियांपै मरतेहो
भरोसा जिनका करते हो नहींउनमेंकोईअपना॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

सुधारो अपने जीवनको हरीका ध्यान धारोजी
कि मानव देह दुर्लभहै न जीता दाव हारोजी॥
कभी आसा व तृष्णाको नअपनेदिलमें आनेदो
हैंपांचोंइन्द्रियां वैरी विषय इनका बिसारोजी॥
जगतके भोग कांटेहैं न मनको इनमें उलझाओ
न ललचावे कभीचंचलनिरंकुशमनकोमारोजी॥

विषय विष फलके खाने से मिलैगा नर्क निश्चैही
सुखानँद हरिभजनकरके हरीपुरको सिधारोजी॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

नतीजा क्योंमिलैअच्छा नहींहैंगरअमलअच्छा
न बोया बीजगरअच्छा मिलेगाकैसेफलअच्छा
नहोगासाफ़दिलजबतकनहोहरिकानिवासउसमें
भ्रमरउसपरलुभाताहै खिलाहैजोकमलअच्छा॥
जो करनाहै अभी करले नहींसुध पावपलकी है
भजनकेवास्ते करना नहींहै आजकलअच्छा॥
सुखानँद शुभअशुभ करनी तुम्हाराभाग बनती है
सरलव्यवहारअच्छाहै कपटअच्छानछलअच्छा

(ग़ज़ल ताल धमाल)

वही हममें वही तुममें वही जगमें समायाहै।
उसीके नूरका जलवा जहांमें जग मगायाहै॥
उसीकी ज्योति जलतीहै विभाकर तेजधारी में
वही नभपर कलानिधि रूपसेसजधजकेआयाहै॥

चराचर विश्वमें व्यापक हमारा कृष्ण प्यारा है
उसीने पांच तत्वोंको मिलाकर जग रचायाहै॥
उसीकी खोज में कोई गया मक्के मदीने को
किसीने चार धामोंका बिकट चक्करलगायाहै॥
मिला चाहो जो प्यारेसे मिटादो भेद भावोंको
किसीने प्रेमबिनहरगिज़ न सुखआनन्दपायाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

नज़र करुणाभरी करना मेरी करनीपै मतजाना
दयाके आप सागरहो दयाको काम में लाना॥
तुम्हारी नाथ मायाका जगत में जाल फैला है
परम भयभीतहूंलखकर मुझै उसमेंनउलझाना॥
विषयकी वासना दिलमें भरीथी एक मुद्दत तक
न देखा सार जब उसमें लियाहै तेरागुणगाना॥
शरण हे नाथ आयाहै दुखी होकर सुखानँदा
बहुतखलजैसेअपनाये उसी सूरतसे अपनाना॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

वही है ओम अविनाशी वहीअल्लाहोअकबरहै
जो इनमें भेदसमझाहै समझपर उसकीपत्थरहै॥
सकल ब्रह्मांडकी रचना हुई है उसकी इच्छासे
ये सब कुदरतउसीकी है इसीसे नाम क़ादिरहै॥
वही मसज़िदका अल्लाहै वहीहैगोडगिरजाका
वही अर्हंत जैनीका नहीं कुछ इनमें अन्तरहै॥
ऋषी योगी तपी सूफ़ी सभीका जन्मदाता है
उसी माबूदका बंदा हरेक पीरो पयम्बर है॥
इबादत जो करै उसकी उसीका नाम आबिद है
हुआ मुनकिरकोईउससे सुखानँदावहक़ाफ़िरहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

दयामय दीन हितकारी हमारी आज बारी है
कहो तो कौन गति तुमने हमें दैनीबिचारीहै॥
मेरे दुष्कर्म देखो तो नहीं मेरा ठिकाना है
बताओतो बुरी संतान कब किसने बिसारी है॥

दुखीभी जानकर हमको दया तुम क्योंनहींकरते
विपति भक्तोंकी तुमनेतो सदा स्वामीनिवारीहै॥
अधमहूं गोकि मैंस्वामी नविसराओमगरदिलसे
तुम्हारीहीतो सुखआनंदजनको आस भारीहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

समझलोसोचलो सुनलो तुम्हें क्याकाम करनाहै
भरोसा कुछनहीं दमका कोईदममेंगुज़ारना है॥
ग़नीमतजानलो दमको नभूलो अपने हमदमको
समझनाचाहिये तुमको कि दममेंकूंचकरनाहै॥
ज़रूरी तुमसमझतेहो जोइस दुनियांके धंधोंको
ग़लतहै भूलहै भ्रमहै मुकद्दम हरि सुमरनाहै॥
पड़ेहो ख़्वाबे ग़फ़लतमें यहां सपनेकी माया है
इसेतो छोड़जानाहै दिया क्यों इसपै धरनाहै॥
मुहब्बत छोड़दो ज़रकी करोमत चाह घरदरकी
सुखानँदलोशरणहरिकी जोभवसागरउतरनाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

समझलो ज्ञान गीताका जो मुरलीधरकीवानीहै

भटककर देश देशोंमें वृथा क्यों खाक छानी है ॥
करो सब काम दुनियांके न मनको लिप्तहोनेदो
तजीहैं जिसने आशक्ती वहीपण्डित वज्ञानीहै॥
लिपट मायासे कहतेहो नहीं तजती तुम्हेंमाया
यह हीलाहै वहानाहै ग़लतहै आनाकानी है ॥
नहोगी ज्ञानबिन मुक्ती न सुखआनंद हासिलहो
वो जीवनमुक्तहै वेशक हुवा जो ब्रह्म - ज्ञानीहै ॥

(ग़ज़ल ताल धमोल)

मिला है रंग भक्तीका उसी से मन रंगाया है
लगाकर ज्ञानका साबन सकलमल धोबहायाहै॥
विषय विष को तजापीना हुआहैसाफ़ तबसीना
हरी गुण गान भक्ती में मज़ाभिसरीकापायाहै॥
जगत व्यौहारके धंधे बड़ी उलझन के फंदे थे
गुरूने काटकर बंधन मुझे इनसे छुड़ाया है ॥
तजो दुनियांकीअबयारी भजोगोविन्दगिरधारी
सुखानँद संतकी प्यारी शरणमें हरिकी आयाहै॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

यथारथ रूप ऊधौजी तुम्हारा हमने पहिचाना।
बड़ेतुम ब्रह्मज्ञानीहो निठुर मोहन भी हैं दाना ॥
हमैं तो जोग सिखलावैं करें खुद भोग कुबजासे
यही इन्साफ़है जिसका उसे लाज़िमहै शर्माना॥
गई है नींद आंखोंकी न भाताहै हमें भोजन
बिधाताने हमारीतोलिखा क़िस्मतमेंग़मखाना॥
ये ऊधौ साफ़ कहदैना सुखानँद प्राण प्यारेसे
बिरहके रोगकी दारू हलाहलहमकोभिजवाना॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

सुनो ब्रजराज गिरधारी हुई दुर्गति हमारीहै।
दशा इस देशकी स्वामी अविद्या ने बिगारीहै॥
अमित अज्ञानने घेरा कुमतिने आ किया चेरा
लुटा सुखचैन का डेरा बिपतिका बोझ भारीहै॥
न गुण बाकी न भुजबलहै कलाकाभी नकौशलहै
पटहै द्वेषहै छलहै यही अब होशियारी है॥

सुखानंद अबतलक जैसी अनुग्रह करते आयेहो
करो अबभी दयाकरके ये हमको आसभारीहै ॥

(ग़ज़ल ताल धमाल)

हमारे देशका बदला चलन बिगड़ा ज़मानाहै।
जोइल्मोफ़नकामख़ज़नथाअविद्याकाख़ज़ानाहै।
जहां थे सामके गायक वहां स्वांगों केहैं शायक
जहांथा कीर्तन हरिका वहां अश्लील गानाहै॥
हवनकीथी जहां खुशबू ध्वनी स्वाहा स्वधाकीथी
वहां बारूदकी बदबू दिमाग़ों में चढ़ाना है ॥
जहां की नादविद्या का मचा था शोर आलममें
वहां बे ताल बे सुरका चला गाना बजानाहै ॥
जोथीएकअंग भक्तीका सुगतिकामोक्षकासाधन
उसी संगीत-विद्या का हुआ व्यभिचारथानाहै॥
जो हैं पूरे महारागी वो बैरागी कहाते हैं
असाधू भीखमंगों ने धरा साधूका बाना हैं ॥
अपाहज दीन और दुखिया मरैं है भूख के मारे

खिलाना मालमस्तोंको इसीको दान मानाहै ॥
दुखी है देख सुखआनंद अपने देशकी हालत
किया दुर्दैव ने जिसको अविद्याका निशानाहै ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

[१] करले भजन हरी का आयू विहा रही है ।
नित मौत दन दनादन गोले चला रही है ॥
रिसने लगी है तनकी फूटी हुई गगरिया
वह आयु रूप जलको छिन छिन छिजारहीहै ॥
सब तेल इस दियेका जलकर ख़तम हुवाहै
यह लौ बुझैगी छिनमें जो टिमटिमारही है ॥
अब चेत कर सुखानँद जीवनकी आसमतकर
शिथला गई है काया सिरको हिला रही है ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

तरुवरकी चलती फ़िरती छाया सदा रही है ।
क़ायम न एक रुखपर जग की हवा रही है ॥

---

१ दिलद्दार यार प्यारे गलियोंमें मेरी आजा.

प्राणी तरह तरहका क्यों नांच नांचता है
माया नटी पकड़कर चुटिया नचारही है ॥
है पास अपने लेकिन देता नहीं दिखाई
अज्ञानता की चर्बी आंखों पै छा रही है ॥
करले अभी सुखानँद करना जो चाहता है
लख भोर होगया है थोड़ी निसा रही है ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

आता नहीं समझमें इस जगमें सार क्याहै ।
किसको कहैं उजाला और अंधकार क्याहै ॥
जो फूल खिलरहाहै मुरझाके वह गिरैगा
इस बाग़ की निराली इस से बहार क्याहै ॥
पानी का है बबूला आंधी का है बगूला
मिटजायगा पलकमें इसको क़रार क्याहै ॥
सुन मूढ़-मति सुखानँद विषयोंसे मन हटाले
भज प्रेम से हरीको इस में विचार क्याहै ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

तेरे सिवाय स्वामी कोई नहीं हमारा ।

कितनोंको आज़माकर सबसे किया किनारा ॥
ग़फ़लतकी नींद सोया अनमोल रत्न खोया
कांटोंका बीज बोया हरिनाम को बिसारा ॥
यह माल और ख़ज़ाना यह फ़ौज तोपख़ाना
होजायगा विराना कहता जिसे हमारा ॥
जिस तनको मलके धोता वह भस्म अंत होता
क्यों सुखअनंद सोता सुन कूच का नगारा ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

क्या मोहमें फँसे हो परलोक को सुधारो ।
चूको न चाल चोखी जीता न दाव हारो ॥
हरि की शरण गहीहै उस जनकी बनगई है
मानव शरीर पाकर कर्तव्य को विचारो ॥
हरि-भक्ति उरमें आनो चित प्रेम-रसमें सानो
शिक्षा गुरूकी मानो मनका भरम बिसारो ॥
करता विनय सुखानँद करुणा-निधान केशव
औगुण मेरे न देखो अपनी तरफ़ निहारो ॥

(गज़ल ताल १)

यहं क्या कुमति कमाई हरि-नामको बिसारा ।
कारज बना बनाया बिन काज क्यों बिगारा ॥
नर तन अमोल पाया शुभ काममें न लाया
विषयों में मन फँसाया अघभार सिरपै धारा ॥
उसका न ध्यान धारा जिसने जगत पसारा
सबका जो है सहारा सब का करै गुज़ारा ॥
तू गुण उसीका गाले अब खोल मनके ताले
पाजायगा सुखानँद भव-सिन्धुका किनारा ॥

(गज़ल ताल २)

हे प्राणनाथ प्रीतम उरमें मेरे समाजा ।
छबिकी छटा अनूपम एकबार तो दिखाजा ॥
भ्रम-जाल में कसाहूं अघ पंक में धसा हूं
मद मोह में फँसाहूं करके दया छुड़ाजा ॥
दुर्मति ने आ दबाया विपरीत पथ दिखाया
सत्कर्म से हटाया सन्मार्ग में लगा जा ॥

संसार छान डाला पाया बहुत कसाला
निज प्रेमका पियाला सुखनन्दको पिलाजा ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

जगदीश है तुम्हारी अद्भुत अलक्ष माया ।
ब्रह्मादि देव ने भी जिसका मरम न पाया ॥
हारी गिरा तुम्हारा गुण गान करते करते
निस दिन सहस्र मुखसे यश शेषनेभी गाया ॥
हे विश्व बाटिका के माली प्रभाव शाली
इस बाटिका को तुमने किस रूपसे सजाया ॥
रचनाको देख तेरी सब हैं चकित सुखानँद
जलवा हरेक शै में निज रूप का दिखाया ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

जगदीश तेरी महिमा कैसे कोई बखाने ।
लाचार होगये हैं मुनिवर चतुर सयाने ॥
बन बन में मारे मारे फिरते रहे बिचारे
सब लग गये किनारे मालाके मान दाने ॥

तप तपके पंच अग्नी कितनोंने तन जलाया
हिम वार कष्ट सहकर कितने लगे ठिकाने ॥
मिलने का तेरे मारग बस प्रेम हमने पाया
है इसमें जो सुखानँद प्रेमी, ही उसको जानै ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

आया शरण तुम्हारी सुनके सुयश तुम्हारा ।
करुणा-निधान केशव दीजै मुझै सहारा ॥
भव-सिन्धु में फँसी है झँझरीसी नाथ नैया
आता नहीं लखाई इस सिन्धु का किनारा ॥
हित बंधु मित्र सबको स्वारथकी धुन लगीहै
देखा जो आज़माकर कोई नहीं हमारा ॥
करिये नज़र दयाकी हरिये विषाद मेरा
सुखनन्द का नहींहै अन्यत्र अब गुज़ारा ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

तू दीन-बन्धु स्वामी मैं दीन दास तेरा ।
अपनी अमित दया से कर ताप दूर मेरा ॥

अज्ञानता से मैंने स्वामी तुझे बिसारा
आयाहूं अब शरण में करदे मेरा निबेरा ॥
विषयोंमें मन लगाया नर तन रतन गँवाया
मद मोह लोभ मत्सर मायाने मुझको घेरा ॥
अवगुण मेरे बिसारो अपनी तरफ़ निहारो
सुखनन्द को उबारो जो है अनन्य चेरा ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

दुर्वासना हमारे मन में समा रही है ;
माया के जाल में वह हमको फँसा रही है ॥
दुष्कर्म जो किये हैं भय-भीत होरहाहूं
केवल दयाकी आशा धीरज धरा रही है ॥
मेरे अघों पै स्वामी हरगिज़ नज़र नकरना
दीनोंपै आपकी तो करुणा सदा रही है ॥
सुखनन्ददास को अब भव-सिन्धु से उबारो
नैया भँवरमें उसकी यह डिगमिगा रही है ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

तू दूर फिर रहाहै है पास ईश तेरे ।
जो मन में बसरहाहै क्यों उसको दूर हेरे ॥
घट घट का मर्म जाने मौजूद सब ठिकाने
भटका है क्यों दिवाने उसको निहार नेरे ॥
कोई जगह नहीं है जिसमें कि वह नहीं है
मत चूक रे सुखानंद गहिले सरन सवेरे ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

हर रंग में वो अपना जलवा दिखा रहाहै ।
उसको जुदा न जानो सब में समा रहा है ॥
इच्छा से अपनी पल में संसार को रचाया
माया का जाल जग में अपना बिछा रहाहै ॥
संहार सबका करके करता प्रलय वही है
कुदरत का खेल सबको खेली खिला रहाहै ॥
पारख है प्रेम का वह प्रेमी से प्रेम रखता
सुखनंद यह अमीफल प्रेमी ही खा रहाहैं ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

मन के महल में छिपकर बैठाहै मेरा प्यारा ।
मैं खोजमें वृथाही फिरताथा मारा मारा ॥
थी नाभि में सुगन्धी मृग ने पता न पाया
चारों दिशा को धाया और दौड़ दौड़ हारा ॥
पय में दुरा है माखन लेकिनहै सार मंथन
जब तक न होगा साधन होगा नहीं निज़ारा ॥
पीले अरे सुखानँद हरि प्रेम का अमीरस
संदेह कुछ नहीं है पावैगा हरि का द्वारा ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

वृन्दा विपिनविहारी सुधि क्यों मेरी बिसारी ।
आयाहूं तेरे दर पर दर्शन का हूं भिखारी ॥
दिल को क़रार मेरे आता नहीं है एक पल
जिसदिनसे वह मनोहर छबिकी छटा निहारी ॥
बन बन को छानआया तीरथ अनेक न्हाया
चारोंही धाम धाया सातों पुरी निहारीं ॥

जब ज्ञान उर समाया और प्रेमको दृढाया
तब घटही में सुखानँद आया नज़र मुरारी ॥

(गज़ल ताल ३)

अज्ञानथा हमारा तेरा पता न पाना ।
कुछ जानकर ये जाना दिलहै तेरा ठिकाना ॥
दिल पर दुई का परदा अज्ञानताने डाला
हमसे अलग नहीं है जब सबमें है समाना ॥
दिल ही के आइने में तसवीर यार की है
जो देखना विचारै गर्दन ज़रा झुकाना ॥
उन्मत्त है सुखानँद वह होश में नहीं है
उसके कहे सुने पर हे नाथ तुम न जाना ॥

(गज़ल ताल ३)

ग़फ़लत में तूने खोई अफ़सोस उम्र सारी ॥
बेज़ा है बेक़रारी बेसूद आहो ज़ारी ॥
अब कूच का मुसाफ़िर बजनेलगा नक़ारा
तैयार क़ाफ़िला है मौजूद है सवारी

छाई है कैसी ग़फ़लत सोया पड़ाहै अबतक
मंजिल कड़ी है सिरपर है साथ बोझ भारी ॥
तू चेतरे सुखानँद बेबस पड़ैगा चलना
क्या मौत से किसीने पाई है रुस्तगारी ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

दुनियां को तूने जाना जागीर है हमारी ।
यह है नहीं किसीकी करतीहै सबकी ख़्वारी ॥
थी यह सराये फ़ानी जो अपनी तूने जानी
करताहै आना कानी जानेकी सुधि बिसारी ॥
कोई सदा रहाहै फिर सोच फ़िक्र क्याहै
पासा पलट चुकाहै बाजी ये तूने हारी ॥
सुखनन्द हरि सुमिरले करना जोहो सो करले
परलोककी ख़बरले दुनियांकी छोड़ यारी ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

प्रीतम कहाँ छिपे हो देते नहीं दिखाई ।
करना उचित नहीं है ऐसी कठोरताई ॥

दुनियांको मैंने छोड़ा मित्रोंसे मुंहको मोड़ा
तुमने जो नेह तोड़ा इसमें नहीं भलाई ॥
जब से तुम्हें निहारा फिरता विरहका मारा
सबसे किया किनारा तन मनकी सुधि भुलाई ॥
सुखनँद आपका है दुख द्वंद में फँसा है
दूजा न आसरा है तुमसेही लौ लगाई ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

मनमें बसाहै जबसे वह सांवरा बिहारी ।
बौरीसी होगई हूं तन मन की सुधि बिसारी ॥
मैं जलभरनको निकली अच्छी भली सखीरी
मारग में देख मुझको उन मोहिनीसी डारी ॥
बाँकी छबीं मनोहर नैनन में बस गई है
कीने जतन अनेकन निकरी नहीं निकारी ॥
चाखाहै प्रेम का रस मन होगयाहै परबस
वा रूप पै सुखानँद कुल कान वार डारी ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

घनस्याम ने बँसुरिया कैसी मधुर बजाई ।

सुनतेही तान सजनी तन की सुरत भुलाई ॥
वह माधुरी सी मूरति बिसरत नहीं बिसारे
कानन में धुन बसी है मन में बसे कन्हाई ॥
नट खट चतुर बिहारी झट दुरगयो विपिनमें
पंचम के फिर सुरनमें बिरहाकी तान गाई ॥
उन एकही झलक में दीनों सखी सुखानँद
बरनी न जात मोपै वा रूपकी निकाई ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

हेरी सुघर सहेली तनकी तपन बुझादे ।
है पीर जो हिये में प्यारी उसे मिटादे ॥
चित चोर स्याम सुंदर मन लेगया चुराके
उसको किसी जतन से लाकर मुझे मिलादे ॥
जाकर निठुर से कहना बेदर्द अब दया कर
व्याकुलबियोगिनीको मुखकी झलक दिखादे ॥
दरसाय चन्द्र आनन बरसाय प्रेम का घन
सरसाय के सुखानँद मन की कली खिलादे ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

आवागवन का चक्कर जगमें चला हुवाहै ।
बंधनमें इसके प्राणी बेबस बँधा हुवा है ॥
मद मोह के नशे में मत भंग होगई हैं
तन में अनङ्ग आरिका डेरा लगा हुवाहै ॥
कर्तव्य कर्म करले हरि-नाम को सुमिरले
परिणाम की खबर ले अंतक खड़ा हुवाहै ॥
अवसर न चूक प्यारे अज्ञान को मिटारे
सुखनंद चेतजारे अवसर मिला हुवाहै ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

बुद बुद ने कहा सागर जो तूहै सोई मैं हूं ।
हम तुम में नहीं अन्तर जो तूहै सोई मैं हूं ॥
तुझसे ही जनम पाया तुझपरही रहा छाया
तेरी है प्रबल माया जो तूहै सोई मैं हूं ॥
उठताहूं उभरताहूं दम तेरा ही भरता हूं
चरता हूं विचरता हूं जो तूहै सोई मैं हूं ॥

माया का कटै फंदा मिटजाय ये दुखद्वंदा
मिलजाय सुखानन्दा जो तूहै सोई मैं हूं ॥

(गज़ल ताल ३)

वृन्दाविपिन बिहारी आया शरण तुम्हारी ।
चरणों से मन लगाया दुर्वासना विसारी ॥
जिसने शरण गही है उसकी सँवर रही है
उसने विपति सही है जिसने तजे मुरारी ॥
गजराज ने बुलाया बाहन को छोड़ धाया
वह ग्राह से छुड़ाया दारुण विपति निवारी ॥
पापी सभा में लाया करनेको नग्न काया
तनका बसन बढ़ाया जब द्रोपदी पुकारी ॥
केते अघी विचारे करके दया उवारे
गाताहै गुण तुम्हारे सुखनन्द नाम धारी ॥

(गज़ल ताल ३)

समझो कियाहै क्याक्या गोपालजीने आकर ।
उपदेश क्या दिया है गैया चराचरा कर ॥

लेकर लकुट कमरिया बनबन में घूमतेथे
भरते थे मोद मनमें मुरली बजा बजाकर ॥
सब ग्वाल बाल उनसे रखते थे प्रेम पूरा
करतेथे उनपै करुणा यदुकुल कमल दिवाकर ॥
बरताव मित्रताका धन-हीन दीन द्विज से
दरसा दिया था देखो द्विजके चरण दबाकर ॥
अर्जुन का प्रेम लखकर कितनी सहायतादी
खुद सारथी बने थे भारत समर में जाकर ॥
जब द्रोपदी पुकारी सारी में आ समाये
राखी सभा में लज्जा पट अंगका बढ़ाकर ॥
भज छल कपटको तजकर चर्णारविन्द हरिके
रख प्रेम उसका उरमें सुखनन्द तू छिपाकर ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

हरिनाम प्रेम रस का एक जाम ले पियारे ।
आयेंगे आसमां के दिनमें नज़र सितारे ॥
जिसने इसे पियाहै उसने मज़ा लियाहै

वेशक वो लगगयाहै भव-सिन्धु के किनारे ॥
ध्रू ने इसे पियाहै आसन अटल लिया है
जिसने विसर दियाहै सर्वस्व सुख विसारे ॥
हट छोड़ दे हटीले ले ले हँसी खुशी ले
रे सुखअनंद पीले इसको विना विचारे ॥

(गज़ल ताल ३)

सुनरी सखी सयानी मेरी विकट कहानी ।
तिरछी नज़र की बरछी उरमें मेरे समानी ॥
सिरपर मुकुट विराजै मुरली अधरपै साजै
लख कांति चन्द्र लाजै ता हाथ मैं बिकानी ॥
जब से उन्हें निहारा वहती है अश्रु धारा
जाता नहीं विसारा दर्शन की मनमें ठानी ॥
अब उन से लौ लगाई कुल कान है नसाई
सुखनन्द मति गँवाई मैं होगई दिवानी ॥

(गज़ल ताल ३)

अज्ञान वश अधिकतर तृष्णा बढ़ी हमारी ।

पुनि ईर्षा भी सिरपर करने लगी सवारी ॥
उत्कर्ष दूसरों का जाता नहीं सहारा
लख उन्नती किसीकी चलतीहै दिलपै आरी ॥
ऐसा करो कि रक्खूं सबपर समान दृष्टी
मिटजाय द्वेष मनका दुर्भाव दूं बिसारी ॥
छल छिद्र और कपटको दिलसे निकाल फैंकूं
यह सुखआनंद कीहै विनती विपिन विहारी ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

शिव आपकी जटा में गङ्गा सुहा रही है ।
छविकी छटा मनोहर क्या जगमगा रही है ॥
लहरा रही है धारा स्यामल सघन चिकुरपर
विद्युत मनों घटामें अति चमचमा रही है ॥
पतितों के तारनेका बाँधाहै जिसने वाना
अघ ओघ कालिमा को धोकर बहा रही है ॥
देती पवित्र धारा यम किंकरों को धमकी
सुरधाम का सुखानँद मारग दिखा रही है ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

यह जानता नहीं हूं कैसे तुम्हें रिझाऊं ।
पूजूं मैं किस विधी से क्या चीज़ भेट लाऊं ॥
मैं मंद मति हूं स्वामी तुम साम के गवैया
किस मुँहसे हे दयामय गायन तुम्हें सुनाऊं ॥
देवों के हित रची है तुमने ही सोम बल्ली
मिसरीकी इक डलीका क्या भोग मैं लगाऊं ॥
रच चंद्र सूर्य तारे तुमने किया उजाला
है भूल यह सरासर दीपक तुम्हें दिखाऊं ॥
तुमने ही चर अचर को भूषण बसन दिये हैं
जामा बना तुम्हारा क्योंकर न मैं लजाऊं ॥
जग पावनी हुई है पदको परस के गंगा
फिर कैसे कूप जल से मज्जन तुम्हें कराऊं ॥
बन बन में तुमने लाखों चंदन विटप उगाये
अज्ञानता है मेरी चंदन जो घिस लगाऊं ॥
सारे सुमन सुगंधित तुमही ने हैं खिलाये

पुरुषार्थ इसमें क्याहै दो फूल जो चढ़ाऊं ॥
चैतन्य ब्रह्म तुमहो दिन रात जागते हो
घंटा बजा सुखानँद क्या आपको जगाऊं ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

खोय[1] दिया अनमोल रतन
हरि का गुण गाना छोड़ दिया ॥ टेक ॥
अज्ञान बिवस बिसराय दिया जो शुभ अवसर
तूने पाया । बोय दिया विष कंटक बन फल
फूल उगाना छोड़ दिया ॥ १ ॥
अधरामृत के रसके चसके हरिनामामृत का
पान तजा । इंद्रिन के पीछे मन रूपी हाथी
मस्ताना छोड़ दिया ॥ २ ॥
कीना सतसंग न हरि सुमिरन बसमें न किया
यह चंचल मन । मुख से न उचारा सत्य

१ प्रीति का वादा करके सनम तैंने प्रीति
निभाना छोड़ दिया.

वचन सद्धर्म कमाना छोड़ दिया ॥ ३ ॥
कर चौरासी लख योनि भ्रमन कठिनाई से
पाया नर तन । जो था सुख आनँद का
साधन वह माल ख़ज़ाना छोड़ दिया ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

स्वारथ में आयु बिताय दई
परमारथ का नहिं काम किया ॥ टेक
बालापन खेलन में खोया योवन में तरुणिन
संग रमा । विषयारस में लवलीन रहा
निष्फल अपना परिणाम किया ॥ १ ॥
हरि ने सब सुखके साज दिये धन धान्य दिये
गज बाज दिये । सो करुणा-सागर त्यागदिया
यह कैसा कुत्सित काम किया ॥ २ ॥
शुभ अवसर बीता जाता है चढ़ काल भयंकर
आता है । सुखआनँद तू मद माता है मानव
वपु को बदनाम किया ॥ ३ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

करुणा करके करुणा-सागर
भवसागर पार उतार मुझे ॥ टेक
है सिन्धु अगम कुछ थाह नहीं नैय्या झंझरी
मल्लाह नहीं । जाती उस पार निगाह नहीं
दीखत है धार ही धार मुझे ॥ १ ॥
नाकू और ग्राह भयंकर हैं मुँह खोल रहे बहु
जलचर हैं । गम्भीर भँवर के चक्करहैं गजराज
समान उबार मुझे ॥ २ ॥
हित बन्धु सभी सँग छोड़गये सुत बनितादिक
मुख मोड़ गये । शिथिलाय नयन, कर गोड़
गये तुम बिन नहीं आन अधार मुझे ॥ ३ ॥
सुखआनँद आतुर आरत है श्रीचरण कमल
हिय धारत है । यही बारम्बार पुकारत है
शरणागत हूं निस्तार मुझे ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

मन मूरख हाय अनर्थ किया

हरि का गुण गाना छोड़ दिया ॥ टेक
उस क़ौल क़रार को भूल गया जो था गर्भमें
हरि से तूने किया । ए वादा शिकन न निभाया
परन ये भला न किया हित तोड़ दिया ॥१॥
की जिसने कभी न किसीसे वफ़ा उसी दुनियां
पर तू लुभाय गया । जो है सांचा सुहृद हित
कारि तेरा उसी मालिक से मुख मोड़ दिया ॥
माया में तू भरमाय गया मृगतृष्णा में
ललचाय गया । सुन्दरता लख फिसलाय
गया माया से नाता जोड़ दिया ॥ ३ ॥
हरि प्रेम अमीरस स्वाद तजा सत्संगति सुख
सम्वाद तजा । अनहद का अनुपम नाद तजा
सुखआनँद भाँडा फोड़ दिया ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

हे दीन-दयालु कृपालु प्रभू
यह दीन अधीन तुम्हारा है ॥ टेक

भव-सिन्धु अगम में आय फँसा तुम बिन अब रक्षक है न कोई। करुणा कर संकट दूर करो जैसे गजराज उबारा है ॥ १ ॥

विश्वेश, रमेश, सुरेश, विभो शरणागत का दुख दूर करो। अज्ञान अविद्या चूर करो जिसने यह जाल पसारा है ॥ २ ॥

अघ अवगुण मेरे क्षार करो जन वत्सलता विस्तार करो। नैय्या भवसागर पार करो जो डूब रही मझधारा है ॥ ३ ॥

निश्चै वह भोग विलासी है पै नाथ मधुपुरी बासी है। सुखआनँद अवगुण रासीहैं लेकिन निज दास तुम्हारा है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

यही सोचत रैन बिताय रही
केहि भांति करूं पियसों बतिया ॥ टेक
मनही मन में पछताय रही नित नैनन नीर

बहाय रही । मुरझाय रही दुख पाय रही कर्मन की ना जानी गतियां ॥ १ ॥
निरमोही यह न सन्देश दियो कित ओर गयो केहि देश छयो । निस द्यौस विशेष अँदेश रह्यौ पठवहुँ केहि भांति विनय पतियां ॥२॥
रही भूल विषय विष चाखन में न रही पिय के मन राखनमें । सुखआनँद नींद न आंखिन में दुख पाय बितावत हूं रतियाँ ॥ ३ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

कोऊ नीको उपाय बताय सखी
घनस्याम को लाय मिलाय सखी ॥ टेक
मैं तो घूमत डोली वन वन में ब्रजबीथिन कुंजन कुंजन में । गोकुल मथुरा बृन्दावन में न मिलो मनमोहन हाय सखी ॥ १ ॥
परिवार को मोह बिसार दियो बनी जोगिन तज घरबार दियो । तन मन धन उन पर वार

दियो करूं कौन उपाय बताय सखी ॥ २ ॥
घन आँनँद है वह मोर हूं मैं वह सागर है तो हिलोर हूं मैं । ब्रजचन्द की चाह चकोर हूं मैं मुख चन्द्र पियूष पियाय सखी ॥ ३ ॥
सुखआनँद प्रभु सुखराशी है जगमें वही ज्योति प्रकाशी है । विरहाकुल भटकत दासी है उरकौ यह ताप सिराय सखी ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

अभिलाष भरी उर दर्शन की
बड़ी वार से द्वार पै नाथ खड़ी ॥ टेक
परिवार तजा घर-द्वार तजा हितु बन्धु तजे संसार तजा । ग्रह काज तजा सुख साज तजा महाराज के द्वार पै आय अड़ी ॥ १ ॥
अब जीवन के दिन बीत चले कच सेत भये सब दांत हले । बहु रोग अहर्निश देत दले नित होत शरीर में पीर बड़ी ॥ २ ॥

तुम दीन अनेकन तार दिये अघ खान कितेक उबार दिये। बहु पातक पुंज पजार दिये मुहि तारनकी नहीं बात बड़ी ॥ ३ ॥

सुखआनँद दास पुकार कहै जग जीवन के दिन चार रहे। करुणा की दृष्टि मुरारि रहै अबतो चरणन में आन पड़ी ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

वय भोग विलास में वीत चली
अब तो प्रभु का गुण गान करो ॥ टेक
नर देह अकारथ खोय दई विष बेलि उरस्थल बोयदई। भव-वारिध नाव डबोय दई मन चेत करो मत हानि करो ॥ १ ॥
जग पाप कितेक कमाय लिये। तिहुँ भाँतिन ताप तपाय लिये। इतराय लिये सतराय लिये परमारथ का अब ध्यान करो ॥ २ ॥
बिन ज्ञान परम्पद नाहिं गहै सतसंग बिना

नहिं ज्ञान लहै । मन मूरख तू यदि मुक्ति चहै
गुरु संतन को सन्मान करो ॥ ३ ॥
सुख आनँद हरिसों प्रेम करो हरिनाम भजन
को नेम करो । संचय न रतन धन हेम करो
यह सीख सयानी कान करो ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

रैन गई परभात हुवा
अब चलने का सामान करो ॥ टेक
वह कूच नक़ारा बाजगया साथी सब चलते
जाते हैं । क्यों ग़फ़लत में हो पड़े हुये
है मंज़िल भारी ध्यान करो ॥ १ ॥
यह निश्चै जानो जानाहै रहनेका नहीं ठिकाना
है । तोशा बांधो कुछ धर्म करो सत कर्म
करो कुछ दान करो ॥ २ ॥
मारग में चोर उचक्के हैं जो दाव घात के पक्के
हैं । अवधान करो संधान करो अज्ञान

बिसारो ज्ञान करो ॥ ३ ॥
जो खाली हाथों जाओगे सुखआनँद तो पछताओगे । इस कारण हम समझाते हैं कुछ लेकर साथ पयान करो ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

आज़ाद रहा दिलशाद रहा
जिसने दुनियां को छोड़ दिया ॥ टेक
मशगूल रहा जो दुनियां के असबाब फ़राहम करनेमें । उसने अंजाम बिगाड़ लिया मालिक से नाता तोड़ दिया ॥ १ ॥
दुशमन तो तेरे बुग़्ज़ो हसद और किब्रो रियाओ कीना हैं । बैरी दुनियां में रहा नहीं जब सिर पांचों का फोड़ दिया ॥ २ ॥
सुखआनँद नातेदारों से इमदाद नहीं मिल सकती है । सुख चैन तू पावैगा प्यारे जब हरि से नाता जोड़ दिया ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाला)

पूरण भक्तन की आस करैं
कैलाश निवासी बमभोला ॥ टेक
गिरजा अर्धंग विराजत है डिम डिम डिम
डमरू बाजत है। द्युति लख मनसिज मन
लाजत है तन साजत भस्मी को चोला ॥१॥
पावन करनी निर्मल गंगा राजति मस्तक पर
अघ भंगा। सर्पन को आभूषण अंगा संग
भंग धतूरे को झोला ॥ २ ॥
बाघम्बर मृगछाला धारी है वृषभराज की
असवारी। भक्तन को सुख आँनद कारी
जिन मुक्ति द्वार का पट खोला ॥ ३ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

जिन प्रेम सुधारस पान किया
पंचामृत पान किया न किया ॥ टेक
जिन प्रेम भक्ति हरि चरनन के मन का मल

दूर नहीं होता। मन का मल जिनने धोय लिया गंगा असनान किया न किया॥ १ ॥
जिन मिथ्या भाषण त्याग दिया सत्य:व्रत से अनुराग किया। सब विषयों से वैराग किया जप जोग विधान किया न किया॥ २॥
सब में हरि को व्यापक देखा हिंसा न करी और द्वेष तजा। श्रद्धा करके आतिथ्य किया गोदान महान किया न किया॥ ३॥
अपना मन जिसने साध लिया सुखआनँद सोई साधू है। गेरू में वस्त्र रंगे न रंगे आडम्बर आन किया न किया॥ ४॥

(गज़ल क़ौवाली)

मन मूरख तुझको समझाता
ले मान वचन श्रुति संतन का॥ टेक
लख चौरासी भरमाय लिया तब जनम मिला नर योनी में। क्यों नर तन रतन गँवाता है

करता है लोहा कंचन का ॥ १ ॥
मानव तन मुक्ती द्वारा है यह वेदों ने निर्धारा है। क्यों निर्मल ज्ञान बिसारा है धर निस दिन ध्यान निरंजन का ॥ २ ॥
वह सबका पालन करता है रीते भाजन को भरता है। तू तृष्णासे क्यों मरता है क्यों करता संशय भोजन का ॥ ३ ॥
सुखआनँद तीनों ताप तपा विश्वम्भर का नहिं जाप जपा। कच सेत भये पुनि सीस कँपा बजताहै चलने का डंका ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौव्वाली)

चल एरी सखी बनसी बट पै
मुरली घनस्याम बजावत है ॥ टेक
मैं तो तन मनकी सुधि भूलि गई जबसे मधुरी ध्वनि कान पड़ी। उड़ पहुँचूं मोहन पास सखी मन दर्शन को ललचावत है ॥ १ ॥

अब प्रेम के जाल में आय फँसी जिय हाथ नहीं कुल कान नसी। छवि मोहन की उर बीच बसी दिन रैन वही मन भावत है ॥२॥
मैं कौन उपाय करूं सजनी गिन तारे काटत हों रजनी। वा निरमोही के प्रेम सनी जो बरबस जिय तरसावत है ॥ ३ ॥
सुखआनँद नैनन नीर बहै पलहू मन चंचल थिर न रहै। मोहन से कोई जाय कहै बिरहनियां प्रान गमावति है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

हित प्रीति की रीति निबाहत है
ब्रज़चन्द्र मनोहर साँवरिया ॥ टेक
मन मोहन को नहिं दोष अली हम वाकी न जानी सार भली। बिन कारन मान गुमान कियो मदमाती भई ब्रज नागरिया ॥ १ ॥
उन पै निज धेनु दुहावत हैं जलकी गगरी

उचकावत हैं । मन भावते खेल खिलावत हैं
वरनस बजावत बांसुरिया ॥ २ ॥
जो विश्वहिं आप नचाय रह्यौ शशि भानहुको
भरमाय रह्यौं । माखन कन हेत नचावत हैं
ताको ब्रज नागरी बावरियां ॥ ३ ॥
हैं धन्य हमारे भाग सखी सुख आँनँद दरसन
पावत हैं । नित आँनँद मोद बढ़ावत हैं रच
रास रसिक नट नागरिया ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

हरि प्रेम पियाला पान किया
तब क्या पड़ना जग बन्धन में ॥ टेक
कोई फूलन सेज सजाता है कोई मखमल
गिलम बिछाता है । आनन्द हमें आजाता है
भूमी पर कुश के आसन में ॥ १ ॥
कोई इत्र सुगंधि लगाता है कुम कुम सौरभ
चरचता है । हमको मन यह समझाता है

मिल जाना है रज के कन में ॥ २ ॥
कोई छप्पन भोग बनाताहै स्वादिष्ट पदारथ खाता है । संतोष हमें आजाता है रूखे सूखे फल भोजन में ॥ ३ ॥
क्या सुख है शाल दुशाले में मलमल मकड़ी के जाले में । कुछ गुण हैं कम्बल काले में जो भाया व्रजनिधि के मन में ॥ ४ ॥
परि पूरण ब्रह्म विनायक है सुखआनँद मंगल दायक है । करुणानिधि दीन सहायक है व्यापक जड़ चेतन जीवन में ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

क्यों और किसी की आस करै
विश्वम्भर दैने वाला है ॥ टेक
जितने जगके अधिकारी हैं धन शाली विक्रम धारी हैं । उसके ही यार भिखारी हैं सब खदना हैं वह आला है ॥ १ ॥

संतोष से बढ़कर धन क्या है भक्ती से अधिक साधन क्या है। नारी से बड़ा बंधन क्या है क्यों मोह विवश मतवाला है ॥ २ ॥

सुख आनँद क्यों तू डरता है क्या मन में शंका करता है। अब बेड़ा पार उतरता है नारायण खेने वाला है ॥ ३ ॥

(गज़ल क़ौवाली)

पी प्रेम पियाला मस्त हुआ
फिर क्यों दिल मैला करता है ॥ टेक

वह पूरण ब्रह्म सनातन है जब उसका सरना आन लिया। क्या और किसी से काम रहा इस दुनियां पर क्यों मरता है ॥ १ ॥

यद्यपि वह गहरा नाला है हरि पार लगाने वाला है। भय क्यों करता भवसागर का अब छणमें पार उतरता है ॥ २ ॥

यह दुनियां आनी जानी है सपने की संपत्ति

जान इसे। थिर है केवल हरि-नाम अमर
जो जीता है वह मरता है ॥ ३ ॥
सुख आनँद सार इसी में है हरि के चरणों से
ध्यान लगा। जो उसके सरनै आता है
जगमें स्वच्छन्द विचरता है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

माया है अपरम्पार तेरी
क्या विश्व विचित्र बनाय दिया ॥ टेक
पांचों तत्वों का मेल किया पानी में दी है
आग लगा। कैसे कैसे रंग रूप रचे सब सुंदर
साज सजाय दिया ॥ १ ॥
क्या फूल अनूप खिलाये हैं मधुरे मधुरे फल
खाये हैं। बलिहारी तेरी बाजीगर क्या
अनुपम बाग लगाय दिया ॥ २ ॥
छोटे से दाने के भीतर बटवृक्ष विशाल
छिपाया है। पानी के छोटे कतरे से प्राणी

का देह रचाय दिया ॥ ३ ॥
सब का सुखआनँद दाता है विश्वम्भर विश्व विधाता है। सांचा उसही का नाता है झूंठा नाता बिलगाय दिया ॥ ४ ॥

(गज़ल क़ौवाली)

घड़ियाल घड़ी में बाजैगी
हर घड़ी यही बतलाती है ॥ टेक
तू ग़फ़लत में क्यों सोताहै उठ बैठ सुबह का गजर बजा। यह घड़ा जिस घड़ी फूटैगा वह घड़ी पलक में आती है ॥ १ ॥
जिस कारीगर ने इस घट को रच पच कर सुघड़ बनायाहै। हर घड़ी उसी का ध्यान करो पल पल में आयु सिराती हैं ॥ २ ॥
जब काल बली सिर गाजैगा और कूच नक्कारा बाजैगा। फिर नाड़ी नटी न नाचैगी जो ढम ढम ढोल बजाती है ॥ ३ ॥

अर्थी पर घड़ा विराजैगा बाबा का घंटा बाजैगा। तब सुखानन्द घन गाजैगा ज्योती में जोत समाती है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल क़ौवाली)

तुम व्यापक नाथ चराचर में
जल में थलमें नभ मंडल में ॥ टेक
अज आदि अनूपम अविनाशी आनन्द स्वरूपं सुखराशी। वरदायक नायक जगशासी अद्वैत अनन्त अतुल बल में ॥ १ ॥
विश्वम्भर विश्व विनायक हो भक्तन के प्रभु सुखदायक हो। दीनन के पीन सहायक हो दुख निवारत लव छिन पल में ॥ २ ॥
जगके कर्ता धर्ता भर्ता संहर्ता भी हो नाथ तुम्हीं। नारायण आप बिराज रहे सहसानन शैय्यापर जल में ॥ ३ ॥
तुम ही सुख आनँद देते हो दुख दारुण को

हरलेते हो । नैय्या को तुमही खेते हो फँस जाती है जब दल दल में ॥ ४ ॥

(राग प्रभाती)

जय जय जन प्रणतपाल मोहजाल जारौ ॥ टेक

चतुरानन चंद्रभाल सनकादिक लोक पाल शारद शुक मत विशाल अचल ध्यान धारौ ॥
जगपति ज्योती स्वरूप रचना तेरी अनूप माया गंभीर कूप अन्धकार भारौ ॥ २ ॥
पच्छी पशु जीव जंत सुर नर किन्नर अनन्त गावत सब साधु संत नाथ यश तुम्हारौ ॥३॥
सुखानन्द दीनदास राखत है चरण आस टारौ यम त्रास खास दास जान तारौ ॥४॥

(राग प्रभाती)

भजरे मन कृष्णचंद्र गोवर्द्धन धारी ॥ टेक

केसर को तिलक भाल राजत गल गुंज माल कानन कुंडल रसाल भक्तन हितकारी ॥ १ ॥

विहरत बन बन कृपाल संग सकल ग्वाल
बाल नृत्यत नटवर गुपाल हरषत नर नारी ॥
मोहत मन मधुर तान निरखत सुर चढ़ विमान
गावत प्रभु सरस गान देत गोप तारी ॥ ३ ॥
बहत पवन मंद मंद आभा ससि की अमंद
होत दास सुखानंद चरनन बलिहारी ॥ ४ ॥

(राग प्रभाती)

मेरे तुम कृष्णचन्द्र नैनन के तारे ॥ टेक
भक्तन को राख मान असुरन को हरत प्रान
स्वामी को तुम समान सुर मुन रखवारे ॥ १ ॥
अवनी तल भयो भार कीनी देवन पुकार
धारयो अवतार प्रभू भूमि भार टारे ॥ २ ॥
मोह विवस इंद्र कोप दीने ब्रज मेघ रोप
अभय किये ग्वाल गोप गिरवर नख धारे॥३॥
सुखानन्द शोक त्याग हरिजू के प्रेम पाग
कीने अनुराग टरें दारुण दुख भारे ॥ ४ ॥

(राग प्रभाती)

निरखी सखि आज स्याम मूरति मन भावनी ॥
सीस मुकुट तिलक भाल खंजन से दृग रसाल
सोहै बन सुमन माल शोभा सरसावनी ॥१॥
दाडिम से विमल दसन प्रफुलित मुख मन्द हसन
काछै कटि पीत वसन काछनी सुहावनी ॥२॥
नाचत नटवर गुपाल ठुमक ठुमक चलत चाल
छाई नभ सुखानंद रेणु पतित पावनी ॥ ३ ॥

(राग प्रभाती)

केशव करुणानिधान चक्र धारे धाइये ॥ टेक
नयन नीर ढार ढार द्रोपदी रही पुकार
नंद के कुमार आज लाज राख जाइये ॥ १ ॥
दुःशासन गह्यौ चीर गाढ़ी अब परी भीर
कैसे उर धरों धीर दुष्ट सों बचाइये ॥ २ ॥
पांचों पति द्यूत हार बैठे हैं मौन धार
बूड़त मँझधार पार नाव को लगाइये ॥ ३ ॥

संकट को समय जान कीनो तबही पयान
आन मान राख लियो सुखानन्द गाइये ॥४॥

(राग प्रभाती)

चेत मूढ़ कौन हेत पाप भार सिर धरा ॥ टेक
लोभ मोह दंभ द्रोह भेद भाव काम कोह
सुत कलत्र गेह छोह त्याग जान विष भरा ।१।
होत सदा सांझ प्रात आयु वायु नित नसात
आय अकस्मात काल फोर देय खोपरा ॥२॥
थाप जाप राम नाम पाप ताप तज निकाम
काप कोह द्रोह काम लोभ मोह मत्सरा ।३।
सुख अनंद तज विषाद भज गुविंद अज अनादि
त्याग जीभ स्वाद बाद अम्ल मिष्ट चरपरा ।४।

(राग प्रभाती)

जै जै जन प्रणत पाल मोह जाल जारौ ॥टेक
चतुरानन चन्द्रभाल सहसानन लोक पाल
गावत मुनि मत विशाल अमित यश तिहारौ ।१।

योगीजन धरत ध्यान नारद नित करत गान
केशव करुणानिधान करुणा विस्तारौ ॥२॥
रचना राची अतर्क थापे थल स्वर्ग नर्क
तारागण चंद्र अर्क अनुपम उजियारौ ॥३॥
पक्षी पशु जीव जन्तु भूचर खेचर अनन्त
विश्व को विचित्र यंत्र सुन्दर रचि डारौ ।४।
सुख अनंद दीन दास आयो धर अमित आस
टारौ यम त्रास खास आसरो तिहारौ ॥ ५ ॥

(राग प्रभाती)

भजरे मन कृष्णनाम सर्बस सुखदाई ॥ टेक
मोर पच्छ सीस धार कानन कुंडल सँवार
तनकी आभा अपार बरनी नहिं जाई ॥ १ ॥
केसर कौ तिलक भाल राजत उर गुंज माल
पंकज दल दृग विशाल सुखमां सकुचाई ।२।
मोहत मन मधुर तान अमृतरस परत कान
शंकर अज धरत ध्यान चरनन लौ लाई॥३॥

सुखानंद सुधि सँभार अवसर नहिं बार बार
भवनिधि के होय पार कृष्ण सुमिर भाई ॥४॥

(राग प्रभाती)

खेलत सिर काल व्याल भजरे यदुराई ॥ टेक
काली सौं नाग नाथ कीनौ जानै सनाथ
ताके पद नाय माथ लेहु मुक्ति भाई ॥ १ ॥
मानव तन रत्न खान दीनौ करुणानिधान
याकूं कर धन्य मान धर्म लै कमाई ॥ २ ॥
जल के बुद बुद समान देह जान नासमान
करिलै हरि ज्ञान ध्यान ठान ना बुराई ॥३॥
सुखानंद चेत चेत चरत काल आयु खेत
भये केस सेत सीस काल घटा छाई ॥ ४ ॥

(राग प्रभाती)

कालिंदी पुलिन सुखद छिटकी उजियारी ॥टेक
शोभित प्रफुलित कदंब मौंलसिरी ताल अम्ब
झूमि झूमि चूमि रहीं बृच्छन की डारी ॥ १ ॥

नाचत नटवर गुपाल लीने संग ग्वाल बाल
बाजत मुरली रसाल गावत ब्रज नारी ॥२॥
बंसी अधरान धरौ पंचम की तान भरौ
मुनि जन कौ ध्यान हरौ बांकुरे बिहारी ॥३॥
राचत लीला ललाम सुखद नित्त सुघर स्याम
बिहरत ब्रज धाम सुखानंदा बलिहारी ॥४॥

(राग प्रभाती)

हेली हरि कुंज गलिन बांसुरी बजावै ॥ टेक
राजै गल गुंज माल लाजै जेहि लख प्रबाल
पंकज लोचन विशाल मधुर तान गावै ॥१॥
मुरली की सरस तान लागै अमृत समान
योगिन को योग ध्यान मोहनी नसावै ॥२॥
यमुना जल गहत मौन अविचलहो रुकत पौन
ऐसो जग बीच कौन जाहि नाहिं भावै ॥३॥
रूपराशि लख अपार लज्जित अति होत मार
सुखानंद प्रेम बार नैनते बहावै ॥ ४ ॥

(राग प्र ाती)

जय जय प्रभु दीनबन्धु कठिन क्लेश नाशी ॥टेक

जय जय देवादि देव अच्युत अद्भुत अभेव
अजर अमर अभय एव अविचल अविनाशी १
तेरी महिमा अपार गाय रहे वेद चार
निर्मल शुचि निर्विकार निर्गुण गुणराशी ॥२॥
कर्ता कमनीय कृत्य भर्ता सर्वज्ञ सत्य
ब्रह्मादिक देव भृत्य सेवक कैलाशी ॥ ३ ॥
अखिलेश्वर विश्व भूप अद्वितीय अज अनूप
सुखानन्द सुख स्वरूप काटो यम पाशी ॥४॥

(राग प्रभाती)

जय जन रंजन भव भय भंजन जै श्री कृष्णमुरारी
सुर नर मुनि नित ध्यान धरत हैं वेद सुयश
निस्तारी ॥ १ ॥ जय जय जय प्रभु असुर
निकंदन भक्तनके सुखकारी ॥ २ ॥ शेष सहस
मुख यश कथ हारे गिरा गाय गुण हारी॥३॥

अगम अगोचर अतुल अनूपम अज अद्वैत अपारी ॥ ४ ॥ अच्युत अजर अमर अविनाशी अद्भुत लीला कारी ॥ ५ ॥ सुखानंद दायक जगनायक सुखानन्द बलिहारी ॥ ६ ॥

(राग प्रभाती)

बीती रैन छिपेतारागण भोरहुआ उठजागरे । टेक
जो हरि सुमिरै हंस वहीहै कामी क्रोधी कागरे १
जिसने प्रभुसे प्रेम पगाया धन्य उसीका भागरे २
जन्म मरणका संशय जावै करहरिसेअनुरागरे ३
सुखानंद निश्चल मनकरके चरणकमलसेलागरे ४

(राग प्रभाती)

ध्यानधार प्यारेहरिजूका कालअचानकआवै ॥
टाला टलैनहीं छिनभरको पलमें मार गिरावै १
मंतर जंतर जादू टौना कुछभी काम न आवै २
हिकमत अपनी चला चलाकर ईसा भी पछतावै ३
दुनियांका सामान सुखानँद दुनियांमें रहजावै ४

(राग श्याम कल्याण)

गाय गाय राम नाम जन्म सफल कीजिये ॥ टेक
संतन के संग लाग, काम क्रोध मोह त्याग,
हरिजूके प्रेम पाग, अमृत रस पीज़िये ॥ १ ॥
सांचा है राम एक, भक्तन की रखै टेक,
मन में करके विवेक, चर्णन चित्त दीजिये ॥२॥
जीनाहै दिना चार, अवसर नहिं बार बार,
होकर भवसिन्धु पार, निश्चल पद लीजिये ॥३॥
सुखानंद चेत चेत, उजरत है आयु खेत,
हरिसों कर मूढ़ हेत, छिन छिन तन छीजिये ।४।

(राग श्याम कल्याण)

बीतत दिन रैन आयु काल निकटआरहा॥ टेक
करता नित पीन पाप, तपता है तीन ताप,
बनता परवीन आप, माया मद छारहा ॥१॥
विषयन हित बार बार, पच पच मरता गँवार
हिंसा करके अपार, जीवों को खा रहा ॥२॥

झूठा जग का पसार, झूठे हित बंधु यार,
झूठन के भरे थार, खाय के अवारहा ॥ ३ ॥
चेत चेत सुखानंद, काट डार मोह फंद,
भजरे मूरख गुविंद, काल निकट आरहा ॥४॥

(राग श्याम कल्याण)

मैं अनन्य दास हूं राख शरण श्री हरी ॥ टेक
निर्गुण अज निर्विकार, अखिल विश्वके अधार,
करिये भवसिन्धु पार, राख शरण श्रीहरी॥१॥
मैं हूं मति मंद दीन, कामी खल मन मलीन,
तेरी है आस पीन, राखशरण श्रीहरी ॥ २ ॥
सुखानंद कर पसार, मांगत प्रभु वारवार,
करुणा करिकै अपार, राख शरण श्रीहरी ॥३॥

(राग श्याम कल्याण)

दीन के दयालु नैक दीन पै दया करौ ॥ टेक
वार बार जन्म धार, यातना सही अपार,
आयो प्रभु द्वार हार, दीन पै दया करौ ॥१॥

पाप भार सीस धार, द्वार द्वार कर पसार,
सही यातना अपार, दीन पै दया करौ ॥ २ ॥
मोहन माधव मुकुंद, दूर करौ दोष द्वंद,
विनवत यह सुखानंद, दीनपै दया करौ ॥३॥

(राग श्याम कल्याण)

जाग जाग भोर भई अल्प रात शेष रही ॥टेक
लहै नाहिं कर विचार, मनुष देह बार बार,
मान सार बात यही, अल्प रात शेष रही॥१॥
पुत्र नारि बन्धु मीत, स्वार्थ हेत करत प्रीति,
जाय अंत देह दही, अल्प रात शेष रही ॥२॥
चेत सुखानन्द दास, त्याग भोग रस बिलास,
मत गँवाय रही सही, अल्प रात शेष रही॥३॥

(राग श्याम कल्याण)

होत भोर रैन ढली आयु वायु जात चली ॥टेक
वहत पौन मंद मंद, भयो ज्योति हीन चंद,
चटचटात कंज कली, आयु वायु जात चली १

भज गुविन्द तज सयान, धार स्वच्छ ब्रह्मज्ञान,
कर प्रमाण बात भली, आयु वायु जात चली२
धीर वीर राव रंक, होत जात काल फंक,
काहु की न दाल गली आयु वायु जात चली।३।
सुखअनंद कर विचार, अंतकी सुरत सँभार,
काल ते कोईन बली आयु वायु जात चली।।४।।

(राग श्याम कल्याण)

आज स्याम हेरी अली आये चले मेरी गली ।।
नैन चपल भुज विशाल, धार कंठ गुंज माल,
बेल आस सफल फली, आये चले मेरी गली १
मधुर बैन मंद हसन, दाड़िम से सुभग दसन,
मनो खिली चंप कली, आये चले मेरी गली२
मंद मंद चलत चाल, लजत ताहि लख मराल,
मूरति उर मांहिं सली, आये चले मेरी गली।।३।।
मुरली की मधुर तान, मुनिजन को हरतध्यान
सुखानंद छैल छली, आये चले मेरी गली ।।४।।

(राग श्याम कल्याण)

एक बीनती मेरी नाथ आज मानिये ॥ टेक
बार बार जन्म धार, यातना सहीं अपार,
अब तो भव समुद्र पार, बेग मोहि आनिये।१।
पातिकी अनेक नाथ, आपने किये सनाथ,
गहन हेत मोर हाथ, अब न रार ठानिये ॥२॥
काम क्रोध लोभ मोह, शान मान दंभ द्रोह,
देत दुःख आरि गिरोह, ताहि नाथ भानिये॥३॥
सुखअनंद है अधीन, राख रह्यौ आस पीन,
ताहि एक दास दीन, आपनो पिछानिये ॥४॥

(गज़ल राग देस)

सुकुमारि[१] ब्रजकी नारि ऊधो कठिन योगहै॥टेक
प्राणायाम कष्ट धाम, करै बाम अष्ट जाम,
त्याग सुखद स्याम नाम, यह अयोग है ॥१॥
बांसुरीकी मधुर तान, कान्हजी का सरस गान,

१ बैराग योग कठिन ऊधो हमों न करब हो।

सुना नहीं जबसे कान, बिरह रोग है ॥ २ ॥
ऊधो तुम ज्ञान मान, हम हैं अबला अजान,
देहु हमें प्राण दान, सुख संयोग हैं ॥ ३ ॥
नेम धरम ज्ञान ध्यान, है न नाम के समान,
सुखानंद कृष्ण नाम, जाप जोग है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग देल)

हरिनाम ना बिसार झुकी काल रातहै ॥ टेक
संपति धन धरनि माल, नासतहै सबहि काल,
तातें तज मोह जाल, क्यों सँकात है ॥ १ ॥
भाई बंधु पुत्र नारि, स्वारथ के सबहि यार,
माया ममता बिसार, सार बात है ॥ २ ॥
जेते जग विषय भोग, सबही हैं विषम रोग,
होगा इनसे वियोग, क्या लखात है ॥ ३ ॥
सुखानंद कर विचार, होना भवसिन्धु पार,
ज्ञानहीन बीच धार, डूब जात है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग देस)

विश्वेश सर्व बिश्वका तूही अधार है ॥ टेक
भूमि तेज बार पवन, चंद्र सूर्य्य राशि गगन,
तेरा दश चार भवन में पसार है ॥ १ ॥
थल-जल-नभचर अनंत, देव दनुज तेज वंत,
तेरी सब रचना तू चित्रकार है ॥ २ ॥
दीन बन्धु दीन नाथ, भक्तन के रहत साथ,
भव-निधि सों नाव तुही करत पार है ॥३॥
सुंदर घनस्याम बरण, जनके त्रैताप हरण,
विनवत जन सुखानंद बार बार है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग देस)

सुकुमार गोपिका हैं ऊधो कठिन योग है॥ टेक
कोमल तन सुमन तूल, कोमल धारैं दुकूल,
भाषत प्रतिकूल तुम्हें वायु रोग है ॥ १ ॥
बिसरत नहीं नैक स्याम, जपत रहत ताको नाम
उन बिन हम हैं निकाम अति कुयोगहै ॥२॥

हृदय वज्रके समान, बधिक मनो मूर्तिमान,
निर्दय मथुरा को हमरे जान लोगहै ॥ ३ ॥
भावत है रस बिलास, मधुर वचन मंद हास,
हमको सुखानन्द दास रुचत भोगहै ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग देस)

हरिनाम ना बिसार यही सार बात है ॥ टेक
नृपति सैन्य सचिव माल, विनसत हैं हालहाल
सबही को अंत-काल काल खात है ॥ १ ॥
कीनो जो पुण्य पाप, भोगत फल बिवस आप
आवत नहीं काम बाप भ्रात मात है ॥ २ ॥
सुंदर रमणीक धाम, बंधु सुहृद पुत्र वाम,
प्राण गये कोई नहीं संग जात है ॥ ३ ॥
झूठे हैं ठाट बाट, माया को जाल काट,
सुखानंद चेत मूढ़ क्यों सँकात है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग देस)

सब है असार राम का एक नाम सारहै ॥ टेक

सुत नारि तात भ्रात डुबाते हैं बीच भार
भवसिन्धु तारनेका हरीही अधार है ॥ १ ॥
इस ज़िन्दगी का कुछभी भरोसा नहीं यहां
आया न आया दम का किसे ऐतबारहै ॥२॥
कर कर के जोर कितने यहां से चले गये
अंजाम कार मौत का हर इक शिकारहै ॥३॥
गुलकी शिगुफ्तगी पै सुखानंद तू न फूल
तावै खिज़ां के बाग़ेजहां की बहार है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग देस)

ऊधौ असह्य कृष्णका हमको वियोगहै ॥ टेक
लाये हौ तुम पयाम जो मोहन के पास से
सुनकर उसे हिये में हुआ शूल रोगहै ॥ १ ॥
क्या खूब कृष्ण प्यारे ने हमसे किया सलूक
कुबजाको भोग हमको दिया भेज योगहै ॥२॥
भरना दिलों में योग का मंजूर है तुम्हें
लेकिन जगह नहीं कि भरा उनमें सोगहै ॥३॥

सोहवत में जिनकी जाके हुए स्याम बे वफ़ा
ऐसा विचित्र आपकी मथुराका लोगहै॥ ४ ॥
दिल स्याम से लगानेका जो कुछ मज़ा मिला
सुख नंद दास अपने ही कर्मोंका भोगहै ॥५॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

सुनो[१] हे दयासिन्धु विनती हमारी
शरण आपकी आगयाहूं मुरारी ॥ टेक
बहुत थकगया नाथ आवागमन में
भटकता हुआ फिर रहा हूं दुखारी ॥ १ ॥
विषय भोग के दुर-व्यसन में फँसाहूं
बढ़ी है बहुत बेकली बेक़रारी ॥ २ ॥
मददगार कोई नहीं दूसरा है
सुनै जो कि इस दीनकी आहोज़ारी ॥ ३ ॥
सुखानंद नाचार मायूस होकर
बना आपके दर का सायल भिखारी ॥ ४ ॥

१ किसी मस्त के आने की आरज़ू है ।
कि साक़ी लिये साग़रे मुश्कबू है ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

पड़ाहूं मैं चरणों में आकर तुम्हारे
क्षमा कीजिये दोष अवगुण हमारे ॥ टेक
फँसी है भँवर में मेरी नाथ नैय्या
लगा दीजिये आज इसको किनारे ॥ १ ॥
झुकी है मेरी शर्म से गरचे गर्दन
कि लहवो लअब में बहुत दिन गुज़ारे ॥ २ ॥
मगर आपका नाम है दीन-बंधू
सुनाहै पतित आपको हैं पियारे ॥ ३ ॥
सुखानंद आया यही आस करके
बनेगी न मुझको दयानिधि बिसारे ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

कुमति छोड़दे अब निकट मौत आई
जहांतक बने कर भजन और भलाई ॥ टेक
विषय भोग की लालसा दूर कर तू
बहुत होचुकी अब न कर बेहयाई ॥ १ ॥

निशाना हुआ चाहता है अजल का
नहीं उससे मिलनी किसीको रिहाई ॥ २ ॥
बहुत बढ़गया है गुनाहों का खाता
वहां जाके दैनी पड़ैगी सफ़ाई ॥ ३ ॥
सुखानंद थोड़ा रहा वक्त बाक़ी
न समझा तो होगी बड़ी जग हँसाई ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

हुई उम्र बेकार बरबाद सारी
न अबतक गई अपनी ग़फ़लत शआरी ॥ टेक
जमा माल करते रहे मकरो फ़नसे
इसी को समझते रहे होशियारी ॥ १ ॥
कभी बेकसों पर न कुछ तर्स खाया
चलाई ग़रीबों की गर्दन पै आरी ॥ २ ॥
रहे फ़र्दे जुल्मो सितम के अमल में
ज़बांके लिये जान जीवों की मारी ॥ ३ ॥
सुखानंद इसका मज़ा अब मिलैगा

निकल जायगी सब मशीख़त तुम्हारी ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

गया वक्त फिर हाथ आना नहीं है
मनुष देह हरबार पाना नहीं है ॥ टेक
वो हरिका हुवा जिसने हरिको भजा है
कभी चूकता यह निशाना नहीं है ॥ १ ॥
छुड़ावै जो आवा-गमन के दुखों से
कोई दूसरा तो ठिकाना नहीं है ॥ २ ॥
हुआ वक्त पूरा चलो इस सरा से
बहुत अब यहां आवो दाना नहीं है ॥ ३ ॥
सफ़र का सुखानन्द ले साथ तोशा
चितौनी समझ इसको गाना नहीं है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

कथा योगकी मन को भाती नहीं है
तेरी छेड़ ऊधौ सुहाती नहीं है ॥ टेक
जो लाया है तू दूसरों से लिखाकर

भुभी विपकी कातीं है पाती नहीं है ॥ १ ॥
लिखेंगे हमें स्याम ऐसा सँदेसा
समझ में तो यह बात आती नहीं है ॥ २ ॥
बसी है जो नैनों में मोहन की मूरति
बिसारी किसी भांति जाती नहीं है ॥ ३ ॥
सुखानंद रो रो के दिन काटती हैं
कभी रात को नींद आती नहीं है ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

अरे मूढ़ मन सोच जीवन है थोड़ा
शिथिल तन हुवा काल आताहै दौड़ा ॥ टेक
बिना राम कोई सहायक नहीं है
सगे साथियों ने तेरा साथ छोड़ा ॥ १ ॥
कुटुम नारि परिवार ने हित बिसारा
लिया छीन सबकुछ जो था तूने जोड़ा ॥ २ ॥
हुई सबको अब तेरी सूरत से नफ़रत
जरा ने रुधिर तेरे तनका निचोड़ा ॥ ३ ॥

सुखानंद उस वक्त रोना पड़ैगा
कि जिसदम पड़े पीठपर जमका कोड़ा ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

सुमिर ले हरी को निकट मौत आई
जहांतक बनै तुझसे कर ले भलाई ॥ टेक
नहीं वक्त फ़ुरसत का बाकी रहा है
घड़ी पल में आते हैं जमके सिपाई ॥ १ ॥
वो जब आन कर तेरी मुश्कें कसेंगे
नहीं कर सकैगा तू उनसे लड़ाई ॥ २ ॥
वहां जबकि होगी तेरी रूबकारी
तू क्या सामने यम के देगा सफ़ाई ॥ ३ ॥
सुखानंद जिनके लिये पाप करता
मददगार होंगे न बेटा न भाई ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

अगर चाहता है तू अपनी भलाई
विषय भोग की छोड़दे आशनाई ॥ टेक

जिन्हें तू समझता है अपना यहांपर
कठिन कालमें वे न होंगे सहाई ॥ १ ॥
तेरे पाप के वे न भागी बनेंगे
उड़ा खा रहे हैं जो तेरी कमाई ॥ २ ॥
बुरा है बुराई का परिणाम प्यारे
भला है इसी में कि तजदे बुराई ॥ ३ ॥
सुखानन्द है इसमें कल्याण तेरा
कुमति छोड़दे कर सुमति से सगाई ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

सकल विश्व के नाथ नायक तुम्हींहो
दुखी दीन-जन के सहायक तुम्हीं हो ॥ टेक
चराचर जगत आश्रित है तुम्हारा
शुभाशुभ गती के विधायक तुम्हीं हो ॥ १ ॥
मैं अल्पज्ञ गाऊंगा क्या गुण तुम्हारा
कि सामादि वेदोंके गायक तुम्हींहो ॥ २ ॥
अकथनीय है नाथ लीला तुम्हारी

ज़गत के सुखानँद दायक तुम्हीं हो ॥ ३ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

पड़ाहूं मैं चरणों में आकर तुम्हारे
लगाओ मुझे सिन्धु भव के किनारे ॥ टेक
बनाहै नहीं कोई सत्कर्म मुझ से
सदा सीस पर भार पापों के धारे ॥ १ ॥
न संचय करी धर्म की राशि मैंने
कुपथ में निरन्तर रहा पग पसारे ॥ २ ॥
न सतसंग मैंने किया संत जन का
विषय भोग में आयु के दिन गुज़ारे ॥ ३ ॥
सुखानंद वह पातकी है कि जिसने
सकल अवगुणोंको गहा गुण बिसारे ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

न दुनियां के बन्धनमें दिलको फँसाना
हरी के भज़न में सदा दिल लगाना ॥ टेक
सभी को समझ अंश परमात्मा का

किसीका न हरगिज़ कभी दिल दुखाना ॥ १ ॥
अहिंसा परम धर्म अपना समझकर
जहांतक बने जान सबकी बचाना ॥ २ ॥
वही ब्रह्म है एक व्यापक जगत में
पता उसका अपने ही दिलमें लगाना ॥ ३ ॥
सुखानंद वह प्रेम का पारखी है
बिना प्रेम मुशकिलहै मिलना ठिकाना ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

नज़र आगया जबसे जलवा तुम्हारा
हुवा हूं मैं बेदाम बन्दा तुम्हारा ॥ टेक
जहां देखता हूं तुम्हें देखता हूं
हरेक शै में मिलताहै हुलिया तुम्हारा ॥ १ ॥
मिटे हैं सभी नक़्श लौहे जिवीं के
मुनाक़िश हुआ दिलपै नक़शा तुम्हारा ॥ २ ॥
दुई जब गई तू ही तू चार सू है
नज़र आरहा है निज़ारा तुम्हारा ॥ ३ ॥

सुखानंद सादिक हुई यह मसल है
तुम्हारा हमारा हमारा तुम्हारा ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल राग पीलू)

तेरा नूर फैला हुआ चार सू है
जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है ॥ टेक
यही सर्व पर क़ुमरियां गा रही हैं
तुही एक तू है तुही एक तू है ॥ १ ॥
जहां में नहीं कोई तेरे सिवा है
चमन के गुलों में तेरा रंगो बू है ॥ २ ॥
बिछाया जो सब्जेने कालीने मखमल
पसे पर्दा उसमें भी तेरी नमू है ॥ ३ ॥
सुखानंद दायक विनायक जगत का
नहीं और कोई जो है तू ही तू है ॥ ४ ॥

(राग पीलू चलित)

जीवन के दिन बीत चलेरे
मोह त्याग हरिको भजलेरे ॥ टेक

अजहू चेत हेत करि हरिसों
बिगरे कारज होंहिं भलेरे ॥ १ ॥
करि सत्संगत साधु समागम
हरि विमुखन की छांह न लैरे ॥ २ ॥
आंख पसार देख नित केते
इष्ट मित्र सब जात चले रे ॥ ३ ॥
सुखानंद बीती सो बीती
आगेकी सामा करिलै रे ॥ ४ ॥

(राग पील चलित)

दीनदयाल भक्त हितकारी
दूर करौ भव-व्यथा हमारी ॥ टेक
भव भय मोचन नाम तुम्हारा
करत सदा जन की रखवारी ॥ १ ॥
शरण गही अब चरण कमलकी
अभयदान अब देहु मुरारी ॥ २ ॥
भक्तन पर जब भीर परी है

कर करुणा तुमने निर्वारी ॥ ३ ॥
मेरी बेर अबेर करत क्यों
सुखानंद की सुनहु पुकारी ॥ ४ ॥

(राग पीलू चलित)

जहां ज्ञान तहां द्वंद न होई
भेद भाव रहता नहिं कोई ॥ टेक
बाद बिबाद नहीं करता है
ज्ञान युक्त है साधू सोई ॥ १ ॥
सबको एक दृष्टि से देखै
सार गहै सद्‌-ग्रंथ बिलोई ॥ २ ॥
संशय भ्रम मनमें नहिं लावै
डारै सकल बासना धोई ॥ ३ ॥
सुखानन्द ऐसा नर ज्ञानी
जीवन मुक्त ब्रह्म मय होई ॥ ४ ॥

(राग पीलू चलित)

सत-संगति करिये मन लाई

जाकी महिमां श्रुति ने गाई ॥ टेक

जान अजान परस पारस को
पलट लोह कंचन बन जाई ॥ १ ॥

विटप सुवास पाय चंदन की
पावत चन्दन की गुरुताई ॥ २ ॥

नवका रूप संत संगति है
देत सदा भव-सिन्धु तराई ॥ ३ ॥

सरल उपाय यही मुक्ती को
सुखानन्द गावत हरषाई ॥ ४ ॥

(राग पीलू चलित)

हैं जगमें जेते अज्ञानी
सबहि आपको मानत ज्ञानी ॥ टेक

हर्ष शोक जाको नहिं व्यापै
ज्ञानी की है यही निशानी ॥ १ ॥

जगके सब व्यवहार चलावै
हर्ष शोक त्यागै व्रत ठानी ॥ २ ॥

अहंकार मन में नहिं राखै
समदृष्टी ताकै सब प्रानी ॥ ३ ॥
सुखानंद विषयन को त्यागै
पावै मुक्ति सोई निज्ञानी ॥ ४ ॥

(राग पील् चलित)

जाऊँ कहां तजि चरन तिहारे
तुमही तारत पतित करारे ॥ टेक
काकौ नाम पतित पावन है
काकों हैं जन दीन पियारे ॥ १ ॥
चाल कुचाल न हेरत कबहूं
जो आये शरणागत तारे ॥ २ ॥
त्रिभुवन विदित प्रताप आपको
वर्णत वेद पुराण मुरारे ॥ ३ ॥
सुखानँद की और कौन गति
बनि है नाथ ताहि निस्तारे ॥ ४ ॥

(राग पीलू चलित)

साधौ सोई देश हमारा
जहां बसत है प्रीतम प्यारा ॥ टेक
बिन घन जहां बीजरी चमकै
बिन ससि भानु जहां उजियारा ॥ १ ॥
अनहद बाजे बाज रहे हैं
ताल तमूर मृदंग सितारा ॥ २ ॥
गगन महल फूली फुलवारी
बहत सुवास समीर अपारा ॥ ३ ॥
सुखआनँद की सीमा नाहीं
नसत शोक श्रम संशय सारा ॥ ४ ॥

(राग धनाश्री)

मन[१] तें क्यों झूठी हठ ठानी ॥ टेक
बार बार विषयनको धावै राखै ऐंचातानी
मानतनाहिं सीखगुरुजनकीकरतसदामनमानी १

१ अब हम जाची देह बुढ़ाना ।

पढ़े पुराण भागवत गीता सुनी संतजन ज्ञानी
तौहू तोकूं ज्ञान न आयौ रजकी रसरी भानी२
घटही में अमृत रस पावै होय न हितकी हानी
अजहूं चेत हेतकर हरिसों सुखानंद अभिमानी३

(राग धनाश्री)

मन तू क्यों इतना इतराता ॥ टेक
सत-पथ त्यागकुमारग चलतापदपदठोकरखाता
सीख सयानी कान न धरता हुआविषयमदमाता
बारबार तुझको समुझाया नहीं ध्यान में लाता
हरि-पदपद्म सुखदसे चितकोकिंचित नहींलगाता
तजतानहीं कुकर्म कुसंगति भजत नहीं जन त्राता
परतिय परधनको निसबासर सुखानंद ललचाता

(राग धनाश्री)

रेमन सीख नहीं तैं मानी ॥ टेक
हरि-पद विमुख विषय रस लोलुप करत सदा
मनमानी, तजत न नेह गेह घरनी को भजत

न सारंग पानी ॥१॥ भ्रमत निकाज बिगारत कारज संचारत हित हानी, त्रिविध ताप कंचन तन जारत तेरी मति बौरानी ॥ २ ॥ सुत दारा परिवार संपदा तैं अपनी कर मानी, नस्स्वर अथिर अनित्य जगत की माया उर लपटानी ॥ ३ ॥ भज पद-पद्म हरी के निसादिन जेहि सुमिरत मुनि ज्ञानी, उर में धार परम हित मानी सुखानंद की बानी ॥ ४ ॥

(राग धनाश्री)

मन तोहि अजहू लाज न आई ॥ टेक

नर तन पाय न परसे हरिके पद सरोज मन लाई, करी नहीं संतन की संगति आयु अकाज गँवाई ॥ १ ॥ विषयन सों अनुराग राखिकै करत रह्यो मन भाई, पर धन पर तिय हरन हेतु बहु ठठीं कपट चतुराई ॥ २ ॥ धर्म अधर्म विवेक बिसार्‍यो सुखद सुमति बिसराई,

ज्ञान भानु बिन तम उर छायो नैनन जोति नसाई ॥ ३ ॥ सुखानंद शुभ अवसर बीत्यो काल घड़ी नियराई, बिनस जायगो यम के द्वारे परै नर्क की खाई ॥ ४ ॥

(राग धुन ताल ३)

जो हरि चरण शरण नहिं आया
कैसे होगा निस्तारा रे ॥ टेक
भव निधि अगम अगाध भयानक है प्रचंड जिसकी धारा रे । नैया तेरी पड़ी भँवर में कैसे पावैगा पारा रे ॥ १ ॥ उदर हेत निज धर्म गँवाया सिर धारा अघका भारा रे । भटका श्वान समान चहूं दिशि द्वार द्वार मारा मारा रे ॥ २ ॥ भज अद्वैत ब्रह्म अविनाशी निर्विकार विश्वाधारा रे । तज दुर्मति दुर्भाव दुराशा विषय वासना व्यभिचारा रे ॥ ३ ॥ सुखानंद शुभ अवसर पाया नर तन मुक्तीका

द्वारा रे। जो यह तूने व्यर्थ गँवाया देखैगा यम का द्वारा रे ॥ ४ ॥

(राग धुन ताल १)

हरि सुमिरन में करता देरी
बीती जात उमरिया तेरी ॥ टेक

काम क्रोध मद लोभ मोह की भारी हुई गठरिया तेरी। मंजिल कड़ी दूर जानाहै टूट न जाय कमरिया तेरी ॥ १ ॥ राख जतन से इसको प्यारे मैली हुई चदरिया तेरी । मैले पट से मान घटैगा नीची होय नजरिया तेरी ॥ २ ॥ अन्धकार मय हुई ज्ञान बिन उर की राम कुठरिया तेरी । ब्रह्म-ज्ञानका कर उजियाला होय बिमल दिन-चर्य्या तेरी ॥ ३ ॥ छिन छिन आयु वार छीजत है तनकी रिसत गगरिया तेरी । सुखानंद हरि को मत बिसरै जो नित लेत खबरिया तेरी ॥ ४ ॥

(राग धुन ताल ३)

दुस्तर यह भवसिन्धु अपारा
है केवल हरिनाम सहारा ॥ टेक
नाव पड़ी मँझधार भँवरमें हरिही पार लगावन हारा । उसका ही धर ध्यान निरंतर जो चाहैं अपना निस्तारा ॥ १ ॥ जग नायक जगदीश जगत पति जग व्यापक जगका आधारा । सब उसके आधीन जगत में ईसा मूसा कौन विचारा ॥ २ ॥ धर्म कर्म सबका फल दायक जड़ चेतन का सिरजन हारा । पालन करे वही संहारे केवल उससे ध्यान हमारा ॥३॥ मूरख मन क्यों इत उत भटकै तीरथ है क्या उससे न्यारा । जमना में है ज्योति उसी की गंगा में है उसकी धारा ॥ ४ ॥ नस्स्वर हैं सुख साज जगत के मायाका मिथ्या विस्तारा । दुखियासबसंसारदेखतू सुखानंदहरिनामअधारा

(राग धुन ताल ३)

इसमें मत मनको भटकावै
झूंठी जगकी माया है रे ॥ टेक

जो इसमें दिलको उलझावै, नर तन रतन अमोल गँवावै, कौड़ी तेरे हाथ न आवै, जिनसे कंचन कायाहैरे ॥ १ ॥ रहा नहीं पुनि रहै न कोई, जो आया जावैगा सोई, मांटीमें मिल मांटी होई, क्या मल मल कर न्हायाहैरे ॥२॥ क्यों दुनियां से प्रीति लगाई, झूंठीहै जगकी असनाई, साथ न जावें लोग लुगाई, जिनमें मन लपटायाहैरे ॥ ३ ॥ एक हरीसे नाता जोड़ो, मोह जाल का तांता तोड़ो, लोभ ललक का खाता छोड़ो किस बल पर इतराया है रे ॥४॥ सुखानन्द हरि भजले प्यारे, त्याग विषय के संगम सारे, लग जाना भव-सिन्धु किनारे, मारग सुगम दिखायाहै रे ॥ ५ ॥

(राग धुन ताल धीमा)

छीजती दिन रैन काया आयु बीती जायरे॥टेक
खेल में शिशुता गँवाई जब गया तरुणायरे।
भोग विषयोंमें लुभाया और कुछ न सुहायरे १
आयकर कामादि शत्रू तन गये लिपटायरे।
इन सभों के दल प्रबलने तुझको घेरा आयरे २
बढ़ गया कुछ काल में परिवारका समुदायरे।
लालसा धन की बढ़ी घूमा चहूंदिश धायरे ३
पुनि जरा आई सुखानंद तन गया शिथिलायरे।
यत्न कर अब काल आया गुण हरीका गायरे ४

(राग धुन ताल धीमा)

भोरहै प्यारे मुसाफिर खोल आंखें जागरे॥ टेक
तेरे साथी त्याग तुझको चल दिये वेलाग रे।
दूर जानाहैं तुझे भी राह अपनी लाग रे १
तीन तापों की तेरे तन में लगी है आग रे।
शान्ती दाता हरी है उससे कर अनुराग रे २

आगया डसने तुझे वह काल काला नाग रे।
अब गरुड़गामी के पद से बेग जाकर लागरे ३
मन हुआ मुँहज़ोर घोड़ा खैंच इसकी बागरे।
चेत सुखआनँद लेकर यह न जाये भागरे ४

(राग धुन ताल धीमा)

मान मेरी बात मूरख बात मेरी मानरे ॥ टेक
है यह तन जल का बबूला पीपरीका पानरे।
जैसे बिजलीकी चमक है इसको चंचल मानरे १
रूप यौवन का तनक भी मत करै अभिमानरे।
थिर नहीं रहता सदा यह इसको निश्चयजानरे २
कर भजन निसदिन हरीका होय तब कल्यान रे।
सिन्धुमें हरि-नाम अंकित तरगये पाषान रे ३
कर अरे सत्कर्म तन में जब तलक है जान रे।
खो न सुख आनंद अवसर सीख मेरी मानरे ४

(राग धुन ताल धीमा)

राम से कर नेह प्यारे कृष्ण से कर हेत रे ॥टेक

जब जनकपुरी में आये पुरबासी लख हर्षाये
धनुभंजा सियबरलायेजी राजोंके मदमथडाले॥
लखराजतिलकतैयारी केकई कुमति चितधारी
तुम पिता प्रतिज्ञापारीजी बनधाये संगसियाले॥
जब सुरसरि तीर पधारे केवट ने चरण पखारे
तब सरिता पारउतारेजी भवसागर तारनवाले॥
जब निर्जन बनमें आये निश्चर भयभीत कराये
रच पर्णकुटी हरषायेजी महलोंके रहनेवाले॥
मारीच कपट तनधारा रावणअनुमतिअनुसारा
ताकूं तुमने संहाराजी शर चाप चढ़ानेवाले॥
रावणको भी पुनि मारा बोले सुर जै जै कारा
यश सुखानँदउच्चाराजी निजभक्तसदाप्रतिपाले

(लावनी कौव्वाली)

जैशिव शंकर भोलानाथ शृंगीनादबजानेवाले॥
सुरसरिता सीस विराजै मस्तकमयंक छबिछाजै
बामाङ्ग भवानी राजैजी तन भस्म रमानेवाले॥

कैलाशअनूपमधामा आभा असीम अभिरामा
तहांविहरैं पूरणकामाजी तनलिपटेविषधरकाले
बैठे पद्मासन मारे बाघम्बर तनपर धारे
हरि प्रेम मद्य मतवारेजी पीतेनितभरकरप्याले॥
जो नर श्रद्धासे ध्यावै कर प्रेम चरण चितलावै
मनवांछितफलको पावैजी कटजावेंकष्टकसाले॥
रावण तपकियातुम्हारा बरदीना उसको भारा
यह प्रबल प्रताप निहाराजी प्रभुताकेदैनेवाले॥
सुर करत तुम्हारी सेवा तुमही देवन के देवा
को जाने प्रभुका भेवाजी तुमअतुलपराक्रमवाले
तुम सुखानन्द के स्वामी घट २ के अंतर्यामी
शरणागतईशनमामीजीतुमविपतिबिडारनवाले

(ग़ज़ल ताल क़ौवाली)

भजलोराधावरघनस्यामबिहरोश्रीवृन्दावनधाम
नवधाभक्ति हिये में धारौ जारौ क्रोधरु काम
लोभमोहमदतृष्णामारौ तकौ न परकी बाम॥

वल विक्रमकुलरहा न वाकी चलते लाठी थाम
मुँहसेलेकिनलगाहुवाहै अबतक माले हराम ॥
जिनके हित दुष्कर्म किये वे करतेनहीं कलाम
वाकी नहीं आव आदर अब हारेकेहरिनाम ॥
सुखानंद बिन रामभजनके नहीं मिलै आराम
मुक्ति हेत भज रामनाम तू निसदिनआठोंजाम॥

(ग़ज़ल ताल क़ौवाली)

आया पंछीधरअवतार आया हरिकी अपरंपार॥
मात पिता ने मोद वढ़ाया मुदित हुवा परिवार
घरकी नारी मोद वढ़ावें साजें साज शृंगार ॥
भाई बंधु नात हित आये बाजी नौवत द्वार
सबने मिलके खुशी मनाई गाये मंगलचार ॥
खेल कूद में गया बालपन युवा सुहाई नारि
विषयभोगकी भई कामना वढ़ा मनोज विकार।
वृद्ध हुए तव थाकी काया मनने मानी हार
सुखानन्द जप नाम हरीका होगा बेड़ा पार।

(राग खम्माच ताल ३)

करहु नाथ अघ दूर हमारे
जिम अगणित तुम अधम उधारे ॥ टेक
व्याध, निषाद, अजामिल, गणिका
केते पतित पातकी तारे ॥१॥ कर०
भव भय भंजन नाम तिहारो
शरनागत के राखन हारे ॥२॥ कर०
गजकी टेर सुनत उठ धाये
प्रबल ग्राह ते प्राण उबारे ॥३॥ कर०
सुखानंद शरनागत आयो
दृढ़ विश्वास हिये में धारे ॥४॥ कर०

(राग खम्माच ताल ३)

जगत पिता जगदीश नमामी
अलख अगोचर अंतरयामी ॥ टेक
मैं हूं पतित दीन अपराधी
पतित उधारन तुमहो स्वामी ॥१॥ जगत०

तरे सकल भज नाम तुम्हारो
अगणित अपराधी खल कामी ॥ २ ॥जगत०
विमुख जीव नहिं सद्गति पावै
होत अभक्त नर्कको गामी ॥ ३ ॥जगत०
सुखानंद है शरण तुम्हारी
श्रीपति क्षीरसिंधु विश्रामी ॥ ४ ॥जगत०

(राग खम्माच ताल ३)

तुमही जगके सिर्जन हारे
सकल विश्व आधीन तुम्हारे ॥ टेक
शसि और भानु प्रकाशे तुमने
चमकाये नभ मंडल तारे ॥ १ ॥ तुमही०
बुद्धि विक्रम बल पाय आपको
सीस धरा सहसानन धारे ॥ २ ॥ तुमही०
सर सरिता सागर प्रगटाये
महि पर राचे भूधर भारे ॥ ३ ॥ तुमही०
महिमा अकथ आपकी स्वामी

सुखानंद केहि भांति उचारे ॥ ४ ॥ तुमही०

(राग खम्माच ताल ३)

प्रभु तुम दीनन के रखवारे
सदा सुरन के काज सँवारे ॥ टेक
जब जब भीर परी संतन पै
तब तब तुम कीने निस्तारे ॥ १ ॥ प्रभु०
राव रंक को भेद न राखत
ऊंच नीच मानत इकसारे ॥ २ ॥ प्रभु०
भरई की सुन टेर समर में
बचन पर गज घंटा डारे ॥ ३ ॥ प्रभु०
शवरी के झूँठे फल खाये
प्रेमी के तुम प्राण पियारे ॥ ४ ॥ प्रभु०
सुखानँद गुण कैसे बरणौं
शेष सहस मुख गावत हारे ॥ ५ ॥ प्रभु०

(राग खम्माच ताल ३)

दरसन हित जियरा तरसत है

एजी तरसतहै तरसावत है ॥ टेक
कल न परत निस नींद न आवत
बिरह पीर उर सरसत है ॥ १ ॥ दर०
मन में बसी माधुरी मूरति
बिसराये नहिं बिसरत है ॥ २ ॥ दर०
चुभी हिये में बांकी चितवन
निस बासर उर कसकत है ॥ ३ ॥ दर०
सुखानंद बिन दरस स्याम के
नैनन ते झर बरसत है ॥ ४ ॥ दर०

(राग खम्माच ताल ३)

मन मूरख इत उत भटकत है
एजी भटकत है भटकावत है ॥ टेक
थिर न रहत बरजौ नहिं मानत
इत उतकूं उठ सटकत है ॥ १ ॥ मन०
रूप रंग के लोभ लुभानो
विषम विषय-फल गटकत है ॥ २ ॥ मन०

नथनी में नलिनी के शुक सम
लटकन बन के लटकत है ॥ ३ ॥ मन०
सुखानन्द नित काच बटोरत
हरि हीरा धर पटकत है ॥ ४ ॥ मन०

(राग खम्माच ताल ३)

दिन बिन हरि भजन बिहाय रहे
जाय रहे बिनसाय रहे ॥ टेक
यौवन गया जरा तन छाई
तन अवयव शिथिलाय रहे ॥ १ ॥ दिन०
आयु बिताय विषय भोगन में
नर तन रतन गँवाय रहे ॥ २ ॥ दिन०
काल बली जब सिर पर आया
हो व्याकुल पछताय रहे ॥ ३ ॥ दिन०
सुखानन्द हरिके सुमिरन बिन
तीनहु ताप तपाय रहे ॥ ४ ॥ दिन०

(राग खम्माच ताल ३)

मुखते हरिनाम उचारहुरे
उचारहुरे चित धारहुरे ॥ टेक
काम क्रोध मद लोभ मोहको
मन ते वेग निकारहु रे ॥ १ ॥ मुख०
जीतहु चौरासी की बाजी
जन्म जुवा जन हारहु रे ॥ २ ॥ मुख०
बीती घनी रही है थोरी
निज परलोक सुधारहु रे ॥ ३ ॥ मुख०
सुखानंद हरि के चरनन पर
सब तन मन धन वारहु रे ॥ ४ ॥ मुख०

(राग खम्माच ताल ३)

अनहद बाजे उर बाज रहे
बाज रहे घन गाज रहे ॥ टेक
बाजत बीन सितार तमूरा
सकल ताल सुर साज रहे ॥ १ ॥ अन०

ओर पास सब देव जुरे हैं
बीचमें नाथ बिराज रहे ॥ २ ॥ अन०
कीनों भजन ध्यान नहिं हरिको
भटकत भिनही काज रहे ॥ ३ ॥ अन०
सुखानंद कर सुमिरन निसदिन
जासों तेरी लाज रहे ॥ ४ ॥ अन०

(राग खम्माच ताल ३)

मेरी सुरतिसुहागिनि जाग रही
जाग रही सुख पाग रही ॥ टेक
त्रिकुटि महलमें जाय बिराजी
खेल पिया संग फाग रही ॥ १ ॥ मेरी०
प्रीतम प्रेम अमीरस पागी
गाय अनूपम राग रही ॥ २ ॥ मेरी०
चुन चुन कलियां सेज बिछाई
पियके उर सों लाग रही ॥ ३ ॥ मेरी०
सुखानंद मन मोद बढ़ावत

भ्रम भय संशय त्याग रही ॥ ४ ॥ मेरी०

(राग खम्माच ताल ३)

सुधि मिली पिया घर आवनकी
आवन सुख सरसावन की ॥ टेक
नसी निरासा बिरह पिपासा
आस भई उर लावन की ॥ १ ॥ सुधि०
जग मग जोति हिये में चमकी
जैसे बिजुरी सावन की ॥ २ ॥ सुधि०
बाजत गगन महल में बाजे
सजी सेज मन भावन की ॥ ३ ॥ सुधि०
सुखानंद घनस्याम लाल की
चेरी भई बिन दामन की ॥ ४ ॥ सुधि०

(राग खम्माच ताल ३)

मोहि पियको दरस दिखायसखी
दरसन की प्यास बुझाय सखी ॥ टेक
ऐसो कोई जतन कर आली

तन की तपन सिराय सखी ॥१॥ मोहि०
बिन देखे उर धीर न धारत
वेगहि लाय मिलाय सखी ॥ २ ॥ मोहि०
प्यारे के उर मोद बढ़ाऊँ
गाय बजाय रिझाय सखी ॥ ३ ॥ मोहि०
सुखानंद केतो दुख पायो
प्रीतम को बिसराय सखी ॥ ४ ॥ मोहि०

(ध्रुवपद ताल ४)

सुमिरौ गणपति गणेश मेटत जो भव कलेश
विघनन कों कर अशेष शोक मोह टारे ॥१॥
गौरी त्रिपुरारि सुवन बुद्धि राशि सिद्धि सदन
वरदायक हानि हरन भक्तन रखवारे ॥ २ ॥
एक रदन भुज विशाल गौर वरन तिलक भाल
राजत उर सुमन माल करिवर मुख धारे ॥३॥
सुखानंद गुणनिधान क्षमा शील ज्ञानवान
देहु आज भक्तिदान नासहु दुख भारे ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

नागर नटवर गुपाल शोभित उर सुमन माल
केसर कौ तिलक भाल मुरली कर धारी ॥१॥
मेघ वरण पीत बसन कंज नयन कुंद दसन
मोहत मृदु मंद हसन संतन सुखकारी ॥ २ ॥
दीन बंधु प्राणनाथ भक्तन को गहत हाथ
संतन के रहत साथ दीनन हितकारी ॥ ३ ॥
सुखानन्द प्रणतपाल काटत भव कठिन जाल
दयासिंधु नन्दलाल गोवर्धन धारी ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

शंकर कैलाश पती जन कों शुभ देत गती
वाम अंग पारवती सागर सुखमाके ॥ १ ॥
भुज विशाल चन्द्रभाल लसत ग्रीव मुंडमाल
लोचन त्रै लाल लाल भंग रंग छाके ॥ २ ॥
भस्म अंग सीस गंग वाहन है बृषभ संग
लिपट रहे तन भुजंग भक्ति ढंग पाके ॥ ३ ॥

सुखानन्द दीन दास करुणा की करत आस
कीजै अघ ओघ नास नाथ शैलजाके ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

केशव करुणा निधान ईश सर्व शक्तिमान
तेरो नित धरत ध्यान शंकर त्रिपुरारी ॥ १ ॥
महिमा तेरी अनन्त सेवत पद साधु सन्त
नारायण रमा कंत गिरवर नख धारी ॥ २ ॥
गावत गुण गण महेश नारद शारद सुरेश
नासत जनके कलेश सुर मुनि सुखकारी ॥३॥
जग पति जग सूत्रधार निर्गुण शुचि निर्विकार
सुखानंद दीन द्वार आय आस धारी ॥ ४ ॥

(ध्रुवपद ताल ४)

देवन के देव नाथ नावत हूं चरण माथ
करिये जनको सनाथ आसरौ तिहारौ ॥ १ ॥
जन पर जब परत भीर तबही तुम हरत पीर
बाहत धीरज समीर देत हौ सहारौ ॥ २ ॥

मानत सम ऊंच नीच देत प्रेम बार सींच
धोवत कल कलुष कीच भेद भाव टारौ ॥३॥
सुखानँद दीन हीन मन मलीन पाप पीन
प्रभुकी अब शरण लीन करुणा विस्तारौ ॥४॥

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

जग सृजनहार जगके अधार, बहु रूप धार प्रभु
वार बार, हरो भूमि भार, सुर मुनि हितकारी ॥
प्रभु विश्वपाल भुजबल विशाल, असुरनके काल
जनके कृपाल, रच मोहजाल लीला विस्तारी ॥
अशरण के शरण त्रैताप हरण, मंगल के करण
घनस्याम वरण, चरअचर भरण जगके प्रतिपारी
सुखनंद दीन प्रभु तव अधीन, यद्यपि मलीन
आचारहीन, प्रभु शरण लीन हरो भव भय भारी

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

सुन मन अजान मेरी सीख मान, तजदे गुमान
जग नाशमान, धर ईश ध्यान भय बीतचसी ॥

विनहरिके भजन नहिंआनजतन,गहप्रभुकीशरन तिहुँ ताप हरन,मिटै जन्ममरन यही बात भली। करिकरि विचार रहे मौन धार, अज वदनचार मुनि मत उदार,गये मानहार सीमा न मिली। सुखनंद अरे हरिको भजरे, नहिं काज सरे प्रभु को बिसरे, सब जात मरे आई न टली ॥

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

यशुदाकोलाल गोगणको पाल,दियेतिलकभाल गरै गुंज माल, लिये ग्वालबाल मुरली बजावै। घन स्यामवरण पंकजसेचरण,अशरणको शरण भव भीत हरण,मन मोद भरण संतन मन भावै। बन सुमनहार गर मांहिं डार, सिर मुकुट धार सुखमा अपार, जमुना किनार गैया चरावै। सुन ब्रजकी बाम मुरली ललाम, निज त्याग धाम भई बिवस काम, गई निकट स्याम, सुखनन्दन गावै ॥

(राग सारंग ठुमरी ताल ३)

कैसे चलुंगी डगर मग रोकत लँगर, मेरी बारी सी उमर वहतो बड़ोही चतुर, तक मारत नज़र, बड़े दाव चलावै ॥ १ ॥ कैसे०

वह तो पकड़त कर जकड़त कसकर, मेरी लचकी कमर गई बाहियां उतर, वाकूं लागत न डर, मेरो जिय घबरावै ॥ २ ॥ कैसे०

वह तो मारत सयन नचकावत नयन, वापै छायोरी मयन बोले रस के बयन, वाकूं काऊ कौ भय न, हँस हँस बतरावै ॥ ३ ॥ कैसे०

कैसे राखूँरी लाज बचूं कवने व्याज, वाकौ ब्रज में राज कहां जाऊंरी भाज, सुख अनँद साज, मेरो मन ललचावै ॥ ४ ॥ कैसे०

(ठुमरी खम्माच)

रस भरी रे स्याम तेरी बतियां ॥ टेक,

झरत सुमन मुख भरत श्रवण सुख पीर दरत

मन धरत धीर सुनि सुनि उमगतिहैं छतियां १
सुनत सकल दुख टरत मिलत सुख बढ़त प्रेम
हिय मढ़त मोद मन ऐसी लिखी किन पतियां २
चलत चढ़त रथ गढ़ गयौ अनरथ जरत हीय
बिरहानल सों नहीं कटत बिरह की रतियां ३
सुखानंद मुख चंद्र दिखावहु हरहु बिरह की
विषम पीर अब आय सिरावहु छतियां ४

(ठुमरी खम्माच)

छाँड़ो छाँड़ो जी स्याम मोरी बहियां ॥ टेक
बहियाँझटकमोरीगगरीपटक दीनीचुरियाँकरक
गई मुरकीकलाई नहींनीकीलागैऐसीलँगरैयां १
सिगरी सुरंग मोरी चुनरिभीजगई दधिहु बिखर
गयो मटकी चटक गई जनिकरो ऐसीजबरैयां २
जाय पुकारूंगी मैं कंसरायपै पकर मँगावै तब
परै कठिनाई सब भूल जाहु लरकैयां ॥ ३ ॥
सुखानंद तुम निपट ढीठ भये करत सदां अट-

पटे ही काज गईं ब्रज की नारि उकतैंयां ॥४॥

(ठुमरी खम्माच)

तेरी सामरी सुरत मन भाई रे ॥ टेक

गरवा लसत गुंजन की माला खंजन गंजन नैन विशाला अधरनमें अरुणाई रे ॥ १ ॥

कानन कंचन कुंडल साजै मस्तक केसर खौर विराजै मुरली मधुर बजाई रे ॥ २ ॥

सुन्दर पीत वसन तन सोहै छबि सुर नर मुनि कौ मन मोहै अतुलित रूप निकाई रे ॥ ३ ॥

सुखानंद दायक गिरधारी नाथ गही है शरण तिहारी लेहु बेग अपनाईरे ॥ ४ ॥

(ठुमरी खम्माच)

दरसन बिन जिय घबरावै ॥ टेक

मोहनी सुरत पर तन मन वार दीनो छिन न परत बिन दरस चैन निस वासर बिरहा सतावै १

जबसे निहारी सखी सांवरी सुरत प्यारी बसीही

रहत वही सुरतनयन विच नहिं कछु औरसुहावै २
जायके सँदेसो ऊधौ कहियो यही हरिजूसों आय
के सुनावें ब्रजमधुरबयन बांकीचितवनमनभावै ३
सुखआनँद प्रभु फेरहुदरसदीजो कीजियोविहारी
फिर सुखद अयन जासों धीरज मनमें आवै॥४॥

(राग कस्तूरी ताल ३)

दयासिन्धु जगदीश करत
भक्तन की रखवारी ॥ टेक
हरनाकुश ने करी भगत के बध की तैयारी
अभय कियो प्रहलाद लियो नरसिंह रूप धारी १
घेर लियो गजराज ग्राह ने भीर परी भारी
गजकी सुनीं पुकार विपति ताकी तुम निर्वारी २
द्रुपद सुता की लाज सभामें राखी गिरधारी
दुस्सासन की भुजा चीर ऐंचत ऐंचत हारी ३
अचल धुरूको कियो भक्तिकी महिमा विस्तारी
सुखानंद मतमंद चरण पंकजकी बलिहारी ४

(राग कसूरी ताल ३)

धर जोगिनि का भेस
पिया की खोज लगाऊँगी ॥ टेक
जटा जूट सिर धार अंग में भस्म रमाऊंगी
सेली झोली डाल जोगिया बसन रँगाऊंगी॥१॥
बरसाने नँदगांव काम बन गोकुल जाऊंगी
घर २ सिंगी नाद बजाकर अलख जगाऊंगी ।२।
ब्रज चौरासी कोस छान काशी को जाऊंगी
सुखानंद करखोज पियाको कंठ लगाऊंगी॥३॥

(राग कसूरीं ताल ३)

भजले सीताराम भरोसा नहीं एक दमका ॥टेक
बीता जीवनकाल काल अब सिरपर आ धमका
रोका कफ़ ने कंठ रुका कोकिल सुर पंचम का १
आये लैने दूत दिखाया परवाना जमका
सुध बुध भई बिलीन पड़ा सिरपर गोला बमका२
कूच नगारा लगा पीटने डंका ढम ढम का

काठी ऊपर चढ़ो तजौ हित घोड़ा टमटमका ।३।
मखमल गद्दी उठी बिछाहै बिस्तर मातम का
सुखानन्द छिपगया तड़ितकासा जोथा चमका४

(राग कसूरी ताल ३)

लज्जा तेरे हाथ नाथ मैं चरणोंमें आया ॥टेक
जिन गहलीनी सरन उसीको तुमने अपनाया
यही गुरूसे सुना यही है वेदों ने गाया ॥ १ ॥
देखे चारों धाम जगत में कितना भरमाया
माया का जंजाल जाल हर जगह बिछा पाया २
नदी सरोवर ताल अनेकन जा जा कर न्हाया
धुला न मन का मैल रहा मायामें लिपटाया ३
सुखानंद घट बीच दरस तेरा प्यारे पाया
हुवा शोक श्रम दूर प्रेमसे गुण तेरा गाया ॥४॥

(राग कसूरी ताल ३)

जनम सफल होजाय
लगा चित हरिके चरनन से ॥ टेक

मानुषतन रत्न अमोल मिलाहै पिछले करमनसे
निंदित करनी क्यों करै बँधेगा इनके बंधनसे १
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी प्रीत लगी धन से
सबको तज कर हंस अकेला उड़जावै तन से २
रहता क्यों नहीं परै अरे माया के उलझन से
कर दुनियांके काम लिप्त मतहो इनमें मनसे ३
पवन रूप यह प्राण निकल कर जावैगा सनसे
सुखानन्द कर प्रेम चरण पंकज के सुमिरनसे ४

(राग कस्तूरी ताल ३)

शरण गहे की लाज
आज तुम राखो गिरधारी ॥ टेक
बरबस लायो पकड़ सभा में दुष्ट दुराचारी
लीनौ चाहैं लाज उतारत नारीकी सारी ॥१॥
गुरुजन बैठे मौन गई है इनकी मत मारी
अत्याचार निहाररहे भीषम द्रोणाचारी ॥२॥
पांचों पति रणधीर चित्र से भये लाज टारी

भयो धर्मको नाश गईहै सबकी मति मारी ।३।
सुखानँद सुन टेर समाये पट में असुरारी
ऐंच ऐंच थकगयो दुष्ट दुस्सासन बलधारी।।४।।

(राग कसूरी ताल ३)

ऊधौ गोपीनाथ कहौ कब ब्रजमें आवेंगे ।।टेक
रूप अनूप दिखाय हिये की प्यास बुझावेंगे
रासविलास रचाय मोद मनमें सरसावेंगे ॥१॥
मोर मुकुट की लटकन में मनकूं लटकावेंगे
निज कर वैनी गुंथ प्रेमके फंद फँसावेंगे ॥ २॥
गहवर वन के बीच बांसुरी मधुर बजावेंगे
लै हम सबके नाम विपिनमें टेर बुलावेंगे ।।३।।
सुखानंद सरसाय आय कब कंठ लगावेंगे
ऊधौ कहियो जाय हमें कौलों तरसावेंगे ॥ ४ ॥

(राग कसूरी ताल ३)

मान पिताका वचन रामजी वनको जातेहैं ।।टेक
माताको लख दुखी नीति उसको समझाते हैं

विधि के अंक प्रमाण नहीं ये मेटे जातेहैं ॥१॥
सियका किया प्रबोध विपति घनकी दिखलातेहैं
लख उत्साह सप्रेम उसे फिर संग लगातेहैं॥२॥
लषण हुए तैयार प्रेम के अश्रु बहाते हैं
करुणासागर राम साथ उनको लेजातेहैं ॥३॥
पुरवासी भये विकल भक्ति अपनी दिखलाते हैं
सुखानंद श्रीराम सभीको धीर धराते हैं ॥४॥

(राग रासड़ा)

कर कोट यतन इस चंचल मन को मारनारे।
हरिजू का अमृत नाम हियेमें धारनारे॥ टेक
चंचल मन वसमें नहीं आवै, बार बार विषयन
को धावै, करते रहो निरंतर इसकी तारनारे १
बालपनेमें खेल खिलावै, तरुण कामिनी हित
ललचावै,वृद्ध भये तृष्णाने करी पसारनारे। २॥
बड़े वेगसे चहुँदिस धावै,जो पकड़ो तो हाथ न
आवैं, गहकर ज्ञान कमान इसे संहारनारे ॥३॥

जिसने इसको जीत लियाहै, जन्म उसी का
सफलहुआहै,सुखानंददृढ़नेम यहीउरधारनारे ४

(राग रासड़ा)

जन्म तेरा बिन भजन अकारथ जायगारे ।
जो सुमिरै हरिनाम अमरफल पायगारे ॥ टेक
भवसागरकी गहरी धारा, तरने का हरिनाम
सहारा,हरिही तेरा बेड़ा पार लगायगारे ॥१॥
माया जाल बिछा जग मांहीं, गह लेता लखकर
परछाहीं,हरिकरुणासे यह बंधन कटजायगारे २
तू करताहै मेरा मेरा, सोच यहां कोई नहिं तेरा
छोड़ कुटुम परिवार अकेला जायगारे ॥ ३ ॥
करता धरता वही विधाता,भज उसको तज जग
का नाता,सुखानंद फिर निश्चैहरि-पदपायगारे ४

(राग रासड़ा)

हरि चरन कमलका किया कभी तैं ध्याननारे ।
वेद गुरूकी सीख धरी है कान ना रे ॥ टेक

भय निद्रा मैथुन आहारा,हैं नरमें पशुके अनु-
सारा, करता क्यों मूरख हरिका गुणगान नारे१
गर्भवास का ग्यान बिसारा,भूलगया सब कौल
करारा,लख चौरासी फेर पड़ैगा छाननारे ॥२॥
भूला तू धन दौलत पाकर, वहां एक हैं ठाकुर
चाकर,ऊंच नीच का कर मिथ्याअभिमाननारे३
जो तू हरिमें चित लगावै, जन्म मरणकी संशय
जावै, सुखानंद यह बात हमारी माननारे॥४॥

(राग रालड़ा)

आओ आओ रे साँवरिया ब्रज फिर आवनारे।
कर करुणाकी कोर दरस दिखलावनारे ॥ टेक
तुम बिन छाई परम उदासी, दुख आरतहैं ब्रज
के वासी,गोपी दरस पियासी प्यासबुझावनारे१
व्याकुल होकर गायरम्हातीं,शोकातुर नहीं पीती
खातीं, नाआओतो तजो गुपाल कहावनारे ।२।
कुबरीबरीकंसकी दासी,तजींगोपिका प्रेमउपासी

कुबरीनाथ कहाय लाज बिसरावनारे ॥ ३ ॥
सुखानंद हस जोग न धारें, प्रेम पंथसे पग नहिं
टारें, बसन जोगिया कुबरीकूं पहिरावनारे ॥४॥

(राग रासड़ा)

श्री रामनाम सुखधाम हिये में धारनारे ।
यह नर तन रत्न अमोल वृथा जनिहारनारे॥टेक
है हरिनाम चमकता हीरा,लगै नहीं इसको घुन
कीरा, विषय कांचके भाव इसे न बिसारनारे ।१।
यह जगहै स्वप्नेकी माया, चलती फिरती तरु
की छाया, इस मायाका फंद गलेसे टारनारे २
क्यों करतेहो मेरा मेरा,बीतगई निस हुवा उजेरा
अबतो है पल छिनमें पांव पसारनारे ॥ ३ ॥
मुखानंद जो रही सही है, सुधिले उसकी सार
यहीहै,हरि सुमिरन कर आवागवननिवारनारे ४

(राग रासड़ा)

तू सुनरी सखी सयानी भवनिध तारियेरी ।

बिन हरिके सुमिरन जनम जुआजनिहारियेरी ॥
जल थल पावक गगन समीरा, पंच रचित यह अधम शरीरा,इसदेहीका ममतामोहविसारियेरी
सुख दुखकाहै आना जाना,विषय भोगमें मनन लगाना,मन चंचल को यत्नपूर्वक मारियेरी ।२।
नीच कुसंगति है दुखदाई, इसमें कुछभी नहीं भलाई, सतसँगतिमें बैठ सुमति संचारियेरी ३
सुखानंद जगकी यह रीती, स्वारथ हेत करें सब प्रीती, मोहजालका बंधन काट निवारियेरी॥४॥

(राग जिला ठुमरी ताल ३)

हरि सुमिरन की है यही बिरिया ।
चेत अचेत बिहात उमिरिया ॥ टेक
केती आयू वाद बिताई, दिन प्रतिदिन तृष्णा अधिकाई, भारी लादी पाप गठरिया ॥ १ ॥
मोह भई ममता उर जागी,विपय बासना अजहुँ न त्यागी, कबहुँ न ओढ़ी ग्यान गुदरिया॥२॥

वृद्ध भयो बीती तरुणाई, कालघटा सिरऊपर छाई, विबस तजै सुत संपति तिरिया ॥ ३ ॥
सुखानंद अब हुआ सवेरा, जगमें नहीं संघाती तेरा, हरि बिन कौन धरावै धिरिया ॥ ४ ॥

(राग ज़िला ठुमरी ताल ३)

दुरमति तज उर धार सुमतिया ।
बिसर न पलछिन पियकी सुरतिया ॥ टेक
बौरी नित नियरात गवनवाँ जाय बिदेसन पिय के भवनवाँ, तजत नैहरवा धरकै छतिया ॥ १ ॥
फिर गुरियनको खेल न होई, इन सखियन सों मेल न होई, सुनिहै प्रीतमकी रस बतियाँ ॥२॥
साज सिंगार अनूप सुहायो, जो चाहै पियके मनभायो, बिन गुन होय अधिक दुर गतिया ३
लख कुचाल प्रीतम बिसरावै, होय निरादर बहु दुख पावै, सुखानन्द नहीं मिलै मुकतिया ॥४॥

(राग ज़िला ठुमरी ताल ३)

सुनि विनती मेरी आज सँवरिया ।
बूड़त है नैया मँझधरिया ॥ टेक
भवसागरकी गहरी धारा, लख न परत कछु
वारा पारा, वहरही प्रबल प्रचंड बयरिया ॥१॥
बिन मांझी है झँझरी नैया, दैया तूही एक
खिवैया, सरनागतकी राख खबरिया ॥ २ ॥
मेरे अवगुण चित जनि धारो,पतित उधारननाम
तिहारो, होय दयाकी नाथ नज़रिया ॥ ३ ॥
जिस तुम अधम अनेक उधारे,क्षमाकरहु अप-
राध हमारे,सुखानन्द आसा चित धरिया ॥४॥

(राग ज़िला ठुमरी ताल ३)

भज मन राम चरण सुखदाई ।
आवागवन सहज मिटजाई ॥ टेक
नर तन दुर्लभ है सो पाया, क्यों कौड़ी के मोल
गँवाया, पुनि यह अवसर मिलहि न भाई॥१॥

विषयनमें चितको भरमाया, त्याग अमर फल विष मन भाया, सुमति कहां तैंने विसराई।२।
पल पल आयू जात सिरानी, जिम फूटेघट छीजत पानी, आई जरा गई तरुणाई ॥ ३ ॥
यह औसर फिर हाथ न आवै, बेबस होकर प्राण गँवावै, सुखानंद कर मुक्ति उपाई ॥४॥

(राग ज़िला ठुमरी ताल ३)

आस नहीं है एक पल छिन की।
करलेरे सुधि मोक्षु जतन की॥ टेक
बालपने के मित्र सिधारे, तुझको भी है चलना प्यारे, कर चिन्ता अब बाट चलन की ॥१॥
कर विचार क्या करी कमाई, पाप किये या करी भलाई, कर चतुराई नेक चलनकी ॥२॥
धन दारा सुत मित्र घनेरे, स्वारथ के संगी सब तेरे, क्यों सिर धरी पोट पापन की ॥ ३ ॥
सुखानंद मत काल गँवावै, गया समय फिर हाथ न आवै, बेग शरण गह हरिचरननकी ॥४॥

(ग़ज़ल ताल ३)

श्याम[१] बिन ऊधौ हमें दिनरैन कलआतीनहीं
होगई बेज़ार जी से जिन्दगी भाती नहीं ॥१॥
चाहती हैं उड़के पहुँचें अपने मनमोहन के पास
पर नहीं पर इसलिये कुछ पार बसियातीनहीं २
श्याम से ऊधौ हमारा हाल कहना मू ब मू
यहभी कहदेना कि फिर ऐसी लिखें पाती नहीं ३
प्रेम सुखआनंद है उरमें हमारे भर रहा
हम कभी उस साँवरी सूरतको बिसराती नहीं ४

(ग़ज़ल ताल ३)

सुखमें बिसरातामहूं दुखमें याद आतेहो तुम्हीं ॥
दुखमई जीवनको सुखसे भर दिखातेहो तुम्हीं १
दूर होजाताहै उरका एकदम सब अन्धकार
चंद्रआननकी छटा जब जगमगाते हो तुम्हीं २

---

१ श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं।

भक्तकी आंखोंसे जब बहती है धारा प्रेम की
प्रेमसागरमें दयामय डूबजाते हो तुम्हीं ॥३॥
भूल सुखआनंद जाता है सकल संसार को
ध्यानमें आंखोंके आगे जबकि आतेहो तुम्हीं ४

(गज़ल ताल ३)

कहरहाहूं जो मुझे है आज भगवन मांगना।
है नहीं प्यारे मुझे कंचन रतन धन मांगना॥१॥
है प्रतिष्ठाकी न कुछ सन्मानकी इच्छा मुझे
हैनहीं सम्पत्ति वैभव राज-शासन मांगना ।२।
सिद्धियां आठों नहीं स्वामी मुझे दरकार हैं
नव-निधों को भी न चाहूं हूं निरंजनमांगना ३
प्रेम ऐसा दो लखूं मैं प्रेम मय संसार को
चाहता सेवक सुखानँद प्रेम-जीवन मांगना ४

(गज़ल ताल ३)

आपकी है धन्य माया धन्यहो तुम धन्यहो।
आपने यह जग बनाया धन्यहो तुम धन्यहो १

चंद्र सूरजमें प्रकाशित आपही की ज्योति है
नभको कैसा जगमगाया धन्यहो तुम धन्यहो २
वेद चारों आपही का गान करते हैं सुयश
गुण गिराने खूब गाया धन्यहों तुम धन्यहो ३
दीजिये दर्शन दयामय दास सुखआनन्द को
आपकागुणजिसनेगाया धन्यहो तुम धन्यहो ४

(ग़ज़ल ताल ३)

विश्वको तुमने रचाया धन्यहो तुम धन्यहो ॥
खेल यह अच्छा दिखाया धन्यहो तुम धन्यहो १
सूक्ष्म से भी सूक्ष्म तुमहो प्राण के तुम प्राणहो
सबमें व्यापक तुमकोपाया धन्यहो तुम धन्यहो २
पास रहकर भी सदा रहते नज़र से दूर हो
कैसा अपनेको छिपाया धन्यहो तुम धन्यहो ३
मोह ममता से बचाओ दास सुखआनंद को
वह तजे अपना पराया धन्यहो तुम धन्यहो ४

(ग़ज़ल ताल ३)

सब में व्यापक देख तुमको आपकी आया सरन
आपसे मनको लगाया आपकी आया सरन १
मन रहै तुम में हमारा तुम सदा मन में रहो
यह मेरे मन में समाया आपकी आया सरन २
द्रोपदी को नग्न दुस्सासन जभी करनेलगा
चीर तब तुमने बढ़ाया आपकी आया सरन ३
तुमहो सुखआनंद दायक दीनजनके हे प्रभू
जनको संकटसे बचाया आपकी आया सरन ४

(ग़ज़ल ताल ३)

गुलके दामिनमें बशकले बू निहां तूही तो था
बाग़े दुनियां में बहारे वे खिजां तूही तो था १
सर्व था तू बाग़ में क़ुमरी तुही था शाख पर
आरिज़ेगुल और अनादिलकी फुग़ाँतूहीतोथा २
कैः। और लैला बना फ़रहाद और शीरी कभी
जल्वये माशूक़ो इश्के आशिकां तूही तो था ३

शाद दुनियां में नहीं तेरे सिवा कुछ और है
महरबां था तो तुही नामहरबां तूही तो था॥४॥

(गज़ल ताल ३)

लेचली मुझको वहाकर नाथ भवसागरकीधार
ऐ हज़ारों कानवाले जल्द सुन मेरी पुकार ।१।
चल रहे हैं तेज़ तर झोके हवाये हिर्स के
मैं नहीफ़ो ज़ार और यह बहरे ना पैदाकिनार२
लोभकी लहरें तहो बाला किये देती हैं अब
हाथसे हैहात निकली बल्लिये सब्रो क़रार ३
नीरहै गम्भीर माया थाह कुछ इसकी नहीं
दास सुखआनंद का बेड़ा लगादे जल्द पार ।४।

(गज़ल ताल ३)

आपड़ी भव-सिन्धुमें स्वामी हमारी जाने ज़ार
जीवहैं इसमें भयंकर मैं हुवा इनका शिकार १
यह नहंगे काम लपकाहै जो मुंहको खोलकर
एक़ही लुक़मे में यह खूँख़ार जाताहै डकार २

दम गयाहै फूल और बाक़ी नहीं बाज़ूमें ज़ोर
आफँसीहै सख़्त मुशकिलमें हयाते मुस्तआर ३
शक्ल बचनेकी यहां कोई नज़र आती नहीं
बस तेरी रहमतका सुखआनंद है उम्मीदवार ४

(ग़ज़ल ताल ३)

है न इस भव-सिन्धुमें शक्ले तहफ्फुज़ आशकार
होगये गुम इसमें पड़कर होके बेबस बेशुमार।१।
इसमेंआज़महै जो एक किश्ती तहफ्फुज़के लिये
रोकते हैं उसके चढ़नेकोजनों फ़रज़िन्दो यार २
कोई बन आती नहीं तदबीर मुझसे क्या करूं
किसतरह आवै दिले ग़मग़ीनको सब्रो क़रार ३
आसरा तेरा लिया है दास सुखआनन्द ने
पारकर उसको दयानिधि दीनजनकीसुनपुकार४

(ग़ज़ल ताल ३)

होगये दुनियांमें कितनेही शहाने नामदार।
हैनहीं कोई रहैगा भी न कोई बरक़रार ॥१॥

कर अभी जोकुछ कि करनाचाहताहै आज तू
जिन्दगानीका नहीं है इस जहांमें ऐतबार॥२॥
चश्मे दिलसे अहले दुनियांकी हक़ीक़त देखली
अपने मतलबसे यहांपर हरबशररखताहैकार ३
कर भजन हरिकासुखानँद दममेंदम जबतककिहै
कालसे ग़ाफ़िल नहो जोहै तेरे सिरपरसवार ४

(ग़ज़ल ताल ३)

बहरे दुनियां में तेरी हस्ती येहै मिस्ले हुबाब।
चन्दरोज़ा इस चमनमें आरिज़े गुलपरहैआब १
चश्में इबरत बीं कुशाओ हाले शाहां रा निगर
गर्दिशे गरदूने गरदां कर्द ईशांरा खराब ॥२॥
पर्दादारी मी कुनद बर क़स्रे क़ैसर अनकबूत
चुग्द नौबत मीज़नद बर गुम्बदे अफ़रॉसियाब ३
है यही तेरी सियहकारी तो सुखआनंद तू
नामए ऐमालका मालिकको क्यादेगा ज़वाब ४

(ग़ज़ल ताल ३)

हरिके चरण को छोड़कर
किसकी शरण गहिलीजिये ॥ टेक
वह विश्वका करतार है संसार का आधार है
एकपलमें बेड़ा पारहैं उसका भरोसा कीजिये १
उसकाभजन मत त्यागकर नाऔरसेअनुरागकर
मायासे कोसों भागकर हरिनामअमृतपीजिये २
सब तीरथोंमें है वही उससे नहीं न्यारा कोई
उसकोसमझकरजगमई घट प्रेमसेभरलीजिये ३
उसके भजनका नैमकर हरदम उसीसे प्रेम कर
जीवनबिता सुख क्षेमकर वैकुंठवासा लीजिये ४

(ग़ज़ल ताल ३)

कर जाप तू हरि नाम का
निश्चै अमर हो जायगा ॥ टेक
कोई नहीं हरिके सिवा आवागवन जो दे छुड़ा
उससेविमुखजो तू हुआ पछतायगापछतायगा १

कर ध्यान उसका प्रेमसे जप जाप उसका नेमसे
वहही रखैगा क्षेमसे हरगिज़ नहींदुखपायगा २
जगका वही करतारहै सब विश्व का भरतार है
वह मोक्षका दातारहै आवागवन बिनसायगा ३
भूलाहै सुखआनन्द क्यों रहता नहीं निर्द्वंद क्यों
फँसताहैभवके फंदक्यों नरतन अकारथजायगा ४

(ग़ज़ल ताल ३)

हरि का भजन करता नहीं
नर तन अकारथ जारहा ॥ टेक
घटघटमें व्यापकहै हरी सब जानता खोटी खरी
बातेंनकरछलकीभरी विश्वासक्योंबिनसा रहा १
माला कपटकी हाथमें है छलकी झोली साथमें
टीकाकलंकित माथ में बहुरूपिया बनतारहा २
भगवे बसन किसकामके साधू बने जो नाम के
रटने बिना हरिनामके उरमें छिदा कांटारहा ३
सुखनँद भज हरिनाम कुछ बनजायतेराकामकुछ

कौड़ी लगैना दामकुछ सौदा बहुत सस्तारहा ४

(ग़ज़ल ताल ३)

मान ले कहना हमारा
हित हरी से जोड़ दे ॥ टेक
चारदिनकी चांदनी है फिर अँधेरा पाख है
थिर नहीं यौवन रहैगा बाग मनकी मोड़दे १
जिनको अपना जानताहै हैं सभी स्वारथके मीत
नर्क में लेजांयगे तू प्रीति इनसे तोड़ दे २
भोग विषयोंका अरे नादान दुख का मूल है
दुर्व्यसन दुर्वासना का यत्न करके छोड़ दे ३
द्वार मुक्तीका यहीहै फिर न नर तन पायगा
रत्न यह सुखनंद अपने हाथ से मत फोड़दे ४

(ग़ज़ल ताल ३)

हरिभजन करले इसी में तेरा बेड़ा पारहै ॥ टेक
लाखचौरासी भटककर एक शुभअवसर मिला
जीतका है दाव अवसर चूकने में हारहै ॥१॥

डालदे हरिनामका पासा कि तेरी जीत हो
हारकी तो होचुकी भरमार वारम्बार है ॥ २॥
छल कपटकी चालसे क़ाबू में वह आता नहीं
साफ़दिलसे खेल बाजी वहबड़ाहुशियारहै॥ ३॥
मूढ़ सुखआनंद हरगिज़ चूकना मत चालको
जाल मायाका बिछाहै दार या दीदारहै ॥४॥

(ग़ज़ल ताल ३)

धन्य चतुराई उसी की
विश्व जिसने रचा दिया ॥ टेक
जीव अन-गिनतीबनाये जिनकीकुछसंख्यानहीं
रंगरूपअनूपसबको गुणस्वभाव ज़ुदादिया॥१॥
कोई जलचर कोई थलचर कोई नभचारी बना
कामक्रोधअहारमैथुन सबकेसाथ लगादिया २
वाटिका यह विश्वकी कैसी बनाई वाह वाह
जिसकी रचनाने सभीकी बुद्धिको चकरादिया ३
देखकर रचना अनूपम होके मोहित प्रेम से

दास सुखआनंदने प्यारे तेरा गुण गादिया॥४॥

(गज़ल ताल ३)

दीन-बन्धु दयालु केशव
यह विनय सुन लीजिये ॥ टेक
देर से यह दास विनती कररहा है द्वार पर
कीजिये करुणा भिखारीको दरस देदीजिये॥१॥
देव सब याचक तुम्हारे किसके हम याचक बनें
आपही से याचना यहहै कि अपना लीजिये।२।
डूबती है नाव मेरी पड़ गई मँझधार में
नाथ भवसागरसे इसको पारही करदीजिये।३।
जो शरण आया उसीकी बांह पकड़ी आपने
दीन सुखआनंदकी भी आस पूरीकीजिये॥४॥

(गज़ल ताल ३)

किया गर्भ में जो क़रार था
तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ टेक
जब ऊर्ध्वमुख लटके रहे रज रक्तको गटके रहे

बनकर बटा नटकेरहे तुम्हेंयादहोकि नयादहो १
पिछले जनमका ध्यानथा उस ब्रह्मकासन्मानथा
मदथानकुछ अभिमानथा तुम्हेंयादहोकि०।.२॥
करते यही थे प्रार्थना भूलोगे तुम परमार्थ ना
अब छोड़ते क्यों स्वार्थ ना तुम्हें० ॥ ३ ॥
वो विचार परमानंदका वो बिसारनादुखद्वंदका
वही भाव सुखआनंद का तुम्हें० ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

जोशे रहमत से हुवा दिल कुलज़मे तूफाँ मेरा।
सोज़े फुरक़तने किया हर उस्तखाँबिरियाँमेरा १
तेरे शौक़े दीद में हूं मुज़्तरिब सुबहो मसा
नालाकश दिलहै मिसाले बुलबुले बुस्ताँ मेरा २
कुलफ़ते इसियाँ से हूं मग़मूम मैं सुबहो मसा
बेदकी मानिन्दहै क़ल्बे हज़ीं लरज़ां मेरा॥३॥
अश्क़े हसरत दम्बदम गिरते हैं चश्मे ज़ार से
चूं गुले बिशि गुफ्ताहै ज़ख़्मे जिगर खंदांमेरा४

शाद शरहे राज़े ग़म करता रहूं कबतक रक़म
करही देगा आख़िरश फ़रयादरस दरमां मेरा ५

(ग़ज़ल ताल ३)

राम रसका ज़ायक़ा रसनापै जिसकी आगया
वह विषयरस भोगके व्यवहार से घबरागया १
राम रसका पान श्री प्रहलादजी ने जब किया
तेज तब नरसिंह अपना भक्तको दिखलागया २
रामरस पीकर ध्रुवने ली अमर पदवी अटल
विष हुआ मीराको अमृत यशमहीपरछागया ३
रामरस पीकर गये हरिधामको कितने अघी
उसकी महिमा देखकर यमराज भी थर्रागया ४
जिसने यह रस पीलिया जीवन उसीकाहै सफल
जो विमुख इससे रहा सुखनंद धक्के खागया ५

(ग़ज़ल ताल ३)

ये आना जाना लगा रहैगा समय सदा सम
नहीं रहैगा । मकान क़ायम नहीं रहैगा

मकीं भी दायम नहीं रहैगा ॥ १ ॥
अँधेरी आई तो रोज़े रोशन उसी के पीछे लगा हुवा है। खुशी की घड़ियां नहीं रहीं गर तो दौरे मातम नहीं रहैगा ॥ २ ॥
उदू के मरनेकी शादमानी मनाओ हरगिज़ न यारे जानी। कि तुझको भी खौफ़ मर्ग का है हमेशा खुर्रम नहीं रहैगा ॥ ३ ॥
खिज़ां के पीछे बहार ही है बहार के बाद फिर खिज़ां है। नहीं रही गर बहारे गुलशन खिज़ांका मौसम नहीं रहैगा ॥ ४ ॥
गुज़र रहे हैं शबाब के दिन अबस सुखानन्द इसका है ग़म। सुमिर हरीका तू नाम हरदम तो चश्म पुरनम नहीं रहैगा ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

तृष्णा को त्यागो हत-भागो क्यों ममता मोह बढ़ाते हो। तुम यथा लाभ संतोष करो

देखो कैसा सुख पाते हो ॥ १ ॥
संसारी झगड़ों में फँसकर क्यों जीवन व्यर्थ बिताते हो । इस सौदे में कुछ लाभ नहीं क्यों इन में मन उलझाते हो ॥ २ ॥
हरिनाम अमर फल मीठा है क्यों उससे निर्मुख जाते हो । है घातक विष का भरा हुआ बेकार विषय फल खाते हो ॥ ३ ॥
उर के उद्यान मनोहर में क्यों विष की बेलि लगाते हो । उरवरा भूमि है मानव तन क्यों ऊसर इसे बनाते हो ॥ ४ ॥
क्यों अपने सुख के मारग में तुम कुशकंटक उपजाते हो । यह सीख हमारी कान धरो क्यों सुखानंद अनखाते हो ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

यह दुनियाँ जाये क़याम नहीं दो दिन में जग से ज़ाना है । क्यों धन दौलत पर

करते हो किस कारण तंबू ताना है ॥ १ ॥ जो दुनियां के दम में आया दाना कब है नादाना है । इसके फंदे में जो फँसता मरदाना नहीं ज़नानाहै ॥ २ ॥ क्यों अपनी जान खिपाते हो क्या इसमें तुमको पाना है । उज़रात तुम्हारे झूंठे हैं सब हीला और बहाना है ॥ ३ ॥ सुखआनंद शरण गहो हरिकी जो आवागवन छुड़ाना है । पछताओगे वरना पीछे कुछ हाथ न आना जाना है ॥ ४ ॥

(गज़ल)

तंदूर गरम है तृष्णाका क्यों इस के अन्दर भुनताहै । काकुल का सौदा मोल लिया इस उलझन में सिर धुनता है ॥ १ ॥ फूलों को मलता पैरों से कांटे जंगल के चुनताहै । तन का लक्कड़ जल जावैगा जो सदा निरन्तर घुनता है ॥ २ ॥ सुखआनंद कितना समझ...

तू नहीं ज़रा भी सुनताहै । कर-गहा घ..
ममता का ताना बाना सा बुनता है ॥ ३ ।

(ग़ज़ल ताल ३)

हे मूढ़मन अब चेतकर हरिको सुमर हरि को
सुमर । बीती ये जाती है उमर हरिको० ॥१॥
उस दिन न कोई यार है सारा जगत अग़ियारहै
आख़िर उसी से कार है हरिको० ॥ २ ॥
है जग कलेवा कालका अभिमानमतकरमालका
कर ध्यान श्री नन्दलाल का हरिको० ॥ ३ ॥
समझाहै तू अपना जिन्हें मरताहै जिनकी चाह
कोई नहीं साथी तेरा हरिको० ॥ ४ ॥
सुखनंद क्यों भूलाहै तू माया पै क्या फूला
यह आग है पूला है तू हरिको० ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल)

बनको सीता के सहित राम लखन जाते हैं
मान माता का बचन छोड़ वतन जाते हैं ।

सल्तनत हाथसे जानेका नहीं रंजो मलाल
अपने कर्तव्यके पालन से मगन जातेहैं ॥२॥
हाथमें तीरो कमाँ सिरपै जटा नंगे पांव
जोगियों केसे पहन तन पै बसन जाते हैं ॥३॥
जाके जंगलमें बितायेंगे वहां चौदह साल
पूरा करनेको पिताजीका परन जाते हैं ॥४॥
भार भूमी का उतारेंगे सुखानंद दयालु
बात असलीहै यही जीतने रन जाते हैं ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल)

है बहारे बाग़े दुनियां चार दिन
ज़िन्दगी का है तमाशा चार दिन ॥ १ ॥
तू मुसाफ़िरहै यह दुनियां है सराय
है फ़क़त तेरा बसेरा चार दिन ॥ २ ॥
नामियों के मिटगये नामो निशां
बजगया नौबत नक्कारा चार दिन ॥ ३ ॥
लोभ लालच में न दुनियां के फँसो

है ये माया का पसारा चार दिन ॥ ४ ॥
ध्यान सुखआनंद तुम हरिका करो
जबतलक है तनमें यारा चार दिन ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

हरिनाम प्रेम पियूषका जो मज़ा गुरू ने चखा दिया। जो ललक थी भोग विलास की उसे दिलसे मेरे हटा दिया ॥ १ ॥ जो विषयकी मन में उमंगथी जो विवेको मोह की जंगथी। जो अनंग जात तरंग थी उन्हें उर से धोके बहादिया ॥ २ ॥ जिसे खोजता था जहांतहां न मिलाथा जिसका कहीं निशां। उसी बेनिशान को बे गुमां मेरे दिलके बीच दिखादिया॥३॥ रहा ज्ञानशून्य अचेत मैं गया ज्ञान पाते ही चेत मैं। जो अपूर्व रत्न था रेत में सुखनंद वह मुझे लादिया ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल ताल ३)

क़ुदरत का ज़र्रा ज़र्रा जलवा दिखारहाहै ।
हर वर्गोबार तेरी सनअत जता रहाहै ॥१॥
जो जग मगा रहे हैं शमसो क़मर सितारे
तेराही नूर उनके अन्दर समा रहा है ॥ २ ॥
मख़लूक़ के लिये तू सर चश्मये करम है
रहमत का अपने दरिया हरसू बहारहाहै ॥३॥
औसाफ़ तेरे लिखना आसां नहीं बशर को
सुखनंद तेरे दर पर गरदन झुका रहाहै ॥४॥

(ग़ज़ल ताल ३)

तू दीन-बन्धु स्वामी मैं दीन दास तेरा ।
तेरी शरणमें आया कर आसरा घनेरा ॥१॥
प्रभुकी दयालुता का ऐसा सुयश सुना है
कितनेही पापियोंका छिनमें किया निवेरा॥२॥
इस ज्ञानका दिवाकर जबसे कि मन में आया
तम दूर होगयाहै उरका गया अँधेरा ॥ ३ ॥

सुखनन्द दास को तुम भव-सिन्धु से उबारो
जिसने कि गह लियाहै तेरे चरनका बेरा ॥४॥

(ग़ज़ल ताल ३)

हो एक नज़र इधरभी ओ आसमान वाले ।
मुझको बना निशाना बांकी कमान वाले ॥१॥
किस बनमें तुझको ढूंढूं और कौन धाम धाऊं
कुछतो निशां बतादे ओ बेनिशान वाले ॥२॥
किससे करूं मुफ़स्सिल दर्याफ्त हाल तेरा
चुपहैं यक़ीन वाले गुमहैं गुमान वाले ॥ ३ ॥
आंखों में नूर तेरा दिल में सरूर तेरा
है सब ज़हूर तेरा ऐ आन बान वाले ॥ ४ ॥
सुखनन्द है यह बहतर कर जां निसार उसपर
कितने मिटे यहांपर नामो निशान वाले ॥५॥

(ग़ज़ल ताल ३)

सितम न करना जफ़ा न करना, ग़रूरो ग़ीबत
कभी न करना । बदीका समरा बदीहै बेशक,
बदों से बचना बदी न करना ॥ १ ॥

सखुन वह खुशकुन जुबांसे कहना, कि सुनने वालेका दिल लुभावे। है खूब कोयलकी खुश नवाई, तू ज़ाग़ की हमसरी न करना ॥ २ ॥
गुज़ार नेकी से ज़िन्दगानी, रहेगा क़ायम न जिस्मे फ़ानी। नफ़ा रसानी में तावइमकाँ, दरेग़ो पहलू तिही न करना ॥ ३ ॥
ये ज़ाले दुनियां है बे-मुरव्वत, किसीसे इसको नहीं है उलफ़त। न दाम में इसके "शाद" आना,इसीसे तुम दिल लगी न करना ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल)

सराय है ये मुसाफ़िरों की, है चन्दरोज़ा क़याम तेरा। रहा न कोई यहां हमेशा, रहेगा कैसे मुक़ाम तेरा ॥ १ ॥
बड़े बड़े नामवर यहां से, चले गये हैं क़याम करके। अमल वह करना है तुझको लाजिम, रहे जो नेकों में नाम तेरा ॥ २ ॥

दवाम का इन्तज़ाम करना, यह सर ब सर है तेरी हिमाक़त। रहैगा तू बर क़रार दायम, ख़याल है यह तो ख़ाम तेरा ॥ ३ ॥

हिसाबे ऐमाल रोज़ लिखकर तू "शाद" अपनी नज़र में रखना। सियाहकारीसे तोबा करना यह विर्दहो सुबहो शाम तेरा॥ ४ ॥

(ग़ज़ल)

सुभग समुज्ज्वल सुयश तुम्हारा, निगम अगम नाथ गारहे हैं। तुम्हाराही ध्यान धर निरंतर, समाधि शंकर लगा रहे हैं ॥ १ ॥

जपा है ब्रह्मा ने चार मुखसे, तुम्हाराही नाम मेरे स्वामी। सहस्र आनन से शेष निसादिन, तुम्हारी महिमा सुनारहे हैं ॥ ४ ॥

थकित हुई शारदा बिचारी, चली न उसकी भी होशियारी। अगरचे बीना के तार अब तक लगाके धुन खटखटा रहे हैं ॥ ३ ॥

तलाश में आपकी ही नारद, भटकते फिरतेहैं "शाद" हरसू। बजा तमूरे को आपका गुण, मुनीशजी गुन गुना रहे हैं ॥ ४ ॥

(२)

ज़मीं पै कोहे गरां हज़ारों, तुम्हारी रफ़अत बता रहे हैं। फ़लक पै शमसो क़मर सितारे, तुम्हारा जलवा दिखा रहे हैं ॥ १ ॥

तराना गाती हैं अन्दलीबें, तुम्हारी रहमत का शाख़े गुल पर। लिबास रंगीन जेब तन कर, चमनमें गुल खिल खिलारहे हैं ॥ २ ॥

लदे हुए खुश मज़ा फलों से दरख़्त बाग़ों में झूमते हैं। जो तुमने बख़्शीहै उनको न्यामत, वो बे-तअम्मुल लुटा रहे हैं ॥ ३ ॥

हर इन्सोजां को ग़िज़ा मुनासिब तुम्हीं तो रज़्ज़ाक़ देरहेहो। नज़र तरः हमको "शाद" पर हो, दिन उसके नज़दीक आरहे हैं ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल)

अजल का पैग़ाम आरहा है, तुम्हें कुछ इस का ख़्याल भी है। जो वक़्ते फ़ुरसत था जा रहाहै, कुछ इसका रंजो मलाल भी है ॥ १ ॥
ये जिस्मे अशरफ़ दियाथा हक़ ने, किया वो लहवो लअब में ज़ायल। बजाये कारे सवाब सरपर, लिया गुनह का वबाल भी है ॥ २ ॥
ग़रीबो बेकस पै ज़ुल्म ढाया, सितम शआरी में नाम पाया। ख़राब सौहबतका हज़ उठाया, बदी में हासिल कमाल भी है ॥ ३ ॥
क़रीब पुरसिश का है ज़माना, वहां न चलता कोई बहाना। ग़लत शिफ़ाअत का है फ़िसाना, किसी की गलती न दाल भी है॥४॥
तेरे गुनाहों का है जो दफ्तर, न रख सकैगा उसे छिपाकर। जवाब क्या देगा 'शाद' जाकर यही तो टेढा सवाल भी है ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल)

दयानिधि आपकी महिमां निरंतर मुख से गाऊंगा । चरण-पंकजकी रज पावन सदा सिर पर चढ़ाऊंगा ॥१॥ विराजो नाथ तुम आकर मेरेही उरके मन्दिरमें । सुगान्धित प्रेम पुष्पों की सुखद शैय्या बिछाऊंगा ॥ २ ॥ दगों से अश्रु धारा की प्रवाहित प्रेम सरिता है । इसी जल से मेरे स्वामी तुम्हें मज्जन कराऊंगा ३ घिसूं अज्ञान कुमकुमको निरंतर ज्ञानकी सिल पर । मुदित होकर परम हितसे वही चन्दन लगाऊंगा ॥ ४ ॥ प्रज्वल्लित प्रेम ज्योती से प्रभूकी आरती होगी । ध्वनी अनहदकी होतीहै वही झालर बजाऊंगा ॥ ५ ॥ परम स्वादिष्ट जो उरमें भरी है निश्चला भक्ती । उसी का भोग मनमोहन मुदित मनसे लगाऊंगा ॥ ६ ॥ तुम्हारा खास सेवकहै सुखानंद

जिसको कहते हैं । तुम्हें चितसे बिसारूंगा तो फिर किसका कहाऊंगा ॥ ७ ॥

(ग़ज़ल)

करुणा निधान केशव बिगड़ी मेरी सुधारौ ।
भव सिन्धु में फँसी है नैया मेरी उबारौ ॥१॥
तुम दीन-बन्धु स्वामी मैं दीन-जन तुम्हारा ।
आयाहूं आस करके मेरी तरफ़ निहारौ ॥२॥
पाषान थी अहिल्या उर वज्र सम है मेरा ।
परसाय निज चरणरज मुझकोभी नाथ तारौ ३
तम पुंज रूप निश्चर उर में मेरे घुसा है ।
तुमहो असुरनिकंदन फिर क्योंन इसकोमारौ ४
जितने अधम उधारे उतने कहां हैं तारे ।
जैसे बनै विचारे सुखनंद को उबारौ ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल)

मित्रो उसी से हमने अब ध्यानहै लगाया ।
जिस नटने विश्व-नाटक रचकर हमें दिखाया १

है सूत्रधार जगका कैसा सुघड़ खिलाड़ी
इस रंग-भूमि को है सुन्दर सुखद सजाया ॥२॥
परदे में बैठा बैठा सब स्वांग रच रहाहै
जलवे से अपने उसने महफ़िलको जगमगाया ३
अपना अजब तमाशा वह आप देखता है
अनहद का साज़ लेकर सोहं का गीत गाया॥४
कर दिव्य दृष्टि देखो वह सबमें रम रहाहै
हर शै में जब समाया हर हर तभी कहाया ॥५
जबजबकि पापियोंका दल बल बढ़ा सुखानंद
तब रूप कोई धरकर दुष्टोंको आ दबाया ॥६॥

❀ श्रीरामविवाह की मुबारिकबादी ❀

छबीला अचपला चंचल बना बनठनके आयाहै
शरदका चन्द्रमा पूरण निरख छविको लजायाहै
जड़ा अनमोल हीरोंसे मुकुट सिर जगमगायाहै
झलकनेउसकीइसनिसमेंनया दिनकरदिखायाहै
बनेका चांदसा मुखड़ा नज़र बद से बचाने को

नए गुलकार महरेने अजब ढगसे छिपायाहै ॥
सुरँग रँग रेशमी जामा सजा सलमें सितारोंसे
बनाया जालविद्रुमका कि जिसमें दिलफँसायाहै
गज़ब महँदी रचाली है अजब पानोंकी लालीहै
छड़ी फूलोंकी क्या लीहै सितम भालाउठायाहै
यह मीठी रसभरी बातें कि मुखसे फूल झड़ते हैं
है गोया मोहनी मन्तर हरएकका दिल लुभायाहै
बना बन्नी फलैं फूलैं हमेशा शाद कामी हो
सुखानन्दने मुदित मनसे मुबारिकबादगायाहै॥

❀ सीताजीका अशोक-वाटिकामें विलाप ❀

बिना श्री राम के देखे हमें जीना न भाताहै ।
यह सब संसार सूनासा मेरी नज़रोंमें आताहै॥
अरे जाकर कहो कोई मेरी हालत दयानिधिसे ।
कि दम घुटताहै सीनेमें कलेजा मुँहको आताहै॥
कियेहैं दुष्ट रावण ने सितम लाखों मेरे ऊपर ।

हज़ारों धमकियां देकर हमें पापी डराताहै ॥
अकेली निश्चरों के बीचमें दिन रात रोतीहूं ।
खबर महाराज कब लेंगे नहीं कोई बताताहै ॥
मेरीसुध क्योंनलीस्वामी मुझेक्यों भूलबैठेहो ।
यही दासीकोरहरहकर बड़ाअफ़सोसआताहै ॥
मेरे स्वामीभी बनबनमें भटकते फिररहे होंगे ।
उन्हेंभी बिन मेरे देखे भला कब चैन आताहै ॥
यही कहकहके रोती थी श्री सीता महारानी ।
पवनसुत पेड़से उनपर अँगूठी को गिराताहै ॥
लिया पहचान सीताने अँगूठीहैयह रघुबरकी ।
लगी तब सोचनेदिलमें कि इसकोकौनलाताहै ॥
हुएहनुमान तब ज़ाहिर कही कुशलातरघुबरकी ।
हुआआनन्दतबदिलको यहसुखआनंदगाताहै ॥

❀ सुलोचना चिता पर बैठी कहती है ❀

घटा काली अरीआली निराली गमकी छाईहै
अलमकी जिसने सीनेपर मेरे बिजली गिराईहै ।

ग़ज़बहै बेकली दिलको तड़फ़तीहूं सिसकती हूं
बिरहने प्राणप्यारेके अगन तनमें लगाई है ॥
नहींमालूमथासुझको कियहकिस्मतमेंलिखाहै
करमकी रेख विधसे भी नहीं मिटती मिटाईहै॥
बिना स्वामीके नारीको नहीं संसार में सुखहै
चितामें जलमरूं अबतो यही मनमें समाईहै॥
करें सबनारि हितचितसे पतिव्रत-धर्मका पालन
यही है राह मुक्ती की जो वेदों ने बताई हैं ॥
करें नित प्रेम से सेवा पती को देवता मानें
विधी जप ध्यान पूजाकी ये नारीको बताईहै॥
निहारै पर पुरुषको जो कदाचित भूलकर कोई
तो यह समझे पिताहै पुत्रहै या अपना भाईहै॥
पराई नारिको देखें न नर हरगिज़ नज़र बदसे
नतीजा देखलो इसका बुराई है बुराई है ॥
भरोसा कुछ नहीं दमका ये पानी का बबूलाहै
समझतेहैं जिसे अपनी वो धन दौलत पराई है॥

चलेंगे धर्म के पथपर तो सुखआनंद पावेंगे
यही कहकर सुनयनाने चिता अपनी जलाई है।

❀ जनकपुर की ज्यौनार ❀

मिथिला पति ने भोजन के हित
अवध नरेश बुलाये ॥ टेक ॥
सकलबरातिन कूं सँगलैके नृपति मुदितमनआये
प्रेमसहित आलिङ्गन कीना जनक परमसुखपाये
कंचनकलश विमल जल लैके चरणसरोजधुवाये
कोमलसुखदगिलगिलेआसनपरमपवित्रबिछाये
कंचन झारी रतन कटोरी सुवरणथार सजाये।
रुचिसों व्यंजन विविध परोसे सुखानंद मनभाये

(२)

जनकराय दशरथजी के हित
भोजन विविध बनाये ॥ टेक
मोहनभोग अमृती खजला खुरमा सरस सुहाये
मोदक मोतीचूर मनोहर मेवा डार बनाये

सोहनहलुवा मेवाभाटी मोहनथार भराये
खुरचन रबड़ी दूध मलाई कलाकंद मन भाये
फैनी और जलेबी घेवर मठरी सेव भुकाये
पूरी खस्ता नरम बेढ़ई सुखानंद परसाये ॥

(३)

नृप विदेह ने नाना व्यंजन
रुचिर अनूप बनाये ॥ टेक
सोंठ छुहारे बड़े पकौड़ी पापड़ तले तलाये
कलमी बड़ा मगौरा टिकिया दहीसने सरसाये
अदरकनीबूमिरच ल्हिसौड़ा आमअचाररचाये
कटहर बड़हर अरवी भिंडी काशीफल मन भाये
मारू बेंगन मूली मेथी बहु घृत घाल बनाये
मीठे और नमकीन रायते सुखआनन्द सुहाये

(४)

भोजन करें अवधि पति रुचिसों
मिथिला नाथ जिमाये ॥ टेक

किशमिसपिस्ता और बदामके बरफ़ीपाक बनाये
कदलीफल अंगूर संतरा सेव सुखद अधिकाये
मिरचौनी जलज़ीरा चटनी चूरन चाट चटाये
छप्पनभोग छतीसों व्यंजन रुचिर सुस्वादसुहाये
सबके नाम कहां लगि बरनूं कर संक्षेप सुनाये
रुचि सों जेंमत सकल बराती सुखआनंद बढ़ाये

(५)

मिथिला पति के महल अवधि-पति
भोजन के हित आये ॥ टेक
मधुर मनोहर बाजे बाजत युवतिन मंगल गाये
शिव विरंचि इंद्रादि देव सब नभ-मण्डलमें छाये
निरखि राममुख परम मनोहर मनमें मोदबढ़ाये
नारिनके अति व्यंगवचनसुन नृपदशरथ हरषाये
हास विलास मनोहर कीने जो जाके मनभाये
बीरा पान प्रेमसों दीने सुखानंद यश गाये



❁ मंगलचार ❁

बिन ऋतु सुत भये चार
सखी नई बात सुनी ॥ टेक
राजा दशरथ ब्याहन आये जुरीं जनकपुर की रमनी । सबके मन आनन्द भयो है गावत मंगलचार, मनोहर कण्ठ ध्वनी ॥१॥ बिन०
बाजत बेला बीन तमूरा साजत साज सकल सजनी । राजत मुखकी छटा अनूपम मंजीरा करतार, मृदंगन घोर घनी ॥ २ ॥ बिन०
सुर नारी पुर नारिन में मिल शोभा निरखत प्रेम सनी । रम्भा रमा उमा इंद्रानी सुखानंद बलिहार, देख सिय राम धनी ॥ ३ ॥ बिन०

(२)

मिल गावत मंगलचार
जनकपुर की रमनी ॥ टेक
लाये संग बरात घनेरी सुरनर मुनि गंधर्व फनी

हित संबंधी सबही लाये क्यों नहिं लाये संग, बहन बूआ जननी ॥ १ ॥ सखी०
कौशिल्या केकई सुमित्रा जोबन मद माती तरुणी । निपट निकाम नृपति उपजाये एक संग सुत चार, यही अचरज सजनी ॥ २ ॥
मुनिकी कृपा चार सुत जाये ऐसी है इनकी करनी । सुखानन्द उत्तर नृप दीजै जासों शंका जाय, भानु-कुल मुकुट मनी ॥ ३ ॥ सखी०

(३)

मिलगावें मंगलचारी जनकपुरकी नारी ॥टेक
दुखने तिखने और चौखने छज्जे अटा अटारी १
सब पुरनारि मुदितमन छाईं भूषनबसन सँवारी २
सजन दरस ते अति सुख पायो भागहमारे भारी ३
रखियोअपनी दयासुखानंदलीनीसरनतिहारी ४

(४)

सुनियोनृप बिनयहमारी सेवानहींबनी तुम्हारी॥

समताकहां भानु उरगणकी करुणाकीनीभारी १
कहां कुँवर रघुकुलके भूषण कहांविदेहकुमारी २
भूलचूकसब क्षमाकीजियो हैंहम निपटअनारी ३
सुखानंद हम दासी दीनी मंदिर देय बुहारी ४

(५)

सब गावैं मंगलगारी जनकपुरकी नारी ॥ टेक
राजादशरथ बुरौ न मानों सांची बात हमारी १
शंका करें जनकपुर वासी ताकूं देहु निवारी २
तुम गोरे कौशिल्या गोरी चन्द्रवदनउजियारी ३
श्याम सलौने राम भये क्यों सुखानंदबलिहारी ४

(६)

सब गावैं मंगलगारी जनकपुरकी नारी ॥ टेक
तुम बूढ़े युवती सब रानी जोवनकी मतवारी १
मुनिकी खीरखाय सुत जाये यह करतूत तिहारी २
सुनत बराती मगनभये सब मीठी मंगलगारी ३
सुखानंद अवसरकी गारी सदा होय सुखकारी ४

❀ कँकना ❀

मिथिला पति के राजमहल में
जुरीं जनकपुर की सब नारी ॥ टेक
खोलत राम सिया को कँकना खुल नहीं
आवत गांठ सुखारी ॥ १ ॥ इकटक नारि
राममुखहेरत हँसिहँसि सखी बजावत तारी॥२
कैसे लाल धनुष तुम तोरौ कहां गई वह
शक्ति तिहारी ॥ ३ ॥ लै किन आये संग
लालजी घरते कौशिल्या महतारी ॥ ४ ॥
सुखानंद सिय ने जब खोली कँकन गांठ हँसीं
दै तारी ॥ ५ ॥ मिथिलापति०

(ग़ज़ल)

सुनो विनती हमारी कृष्ण प्यारे ।
नहीं कोई हमारा बिन तुम्हारे ॥ १ ॥
पड़ा मँझधार में बेड़ा हमारा ।
लगादो इसको करुणाकर किनारे ॥ २ ॥

हुआहै कौन पापी मुझसे बढ़कर ।
बहुत से आपने पहिले जो तारे ॥ ३ ॥
गिनाचाहो मेरे पातक तो गिनलो ।
मही के रेणुकण और नभके तारे ॥ ४ ॥
भरोसा और किसका है सुखानन्द ।
जो इस भव सिन्धु से मुझको उबारे ॥ ५ ॥

❀ रुबाइयात (१) ❀

हिर्स है एक बलाये बे दरमान ।
चैन देती नहीं कभी एक आन ॥ १ ॥
करलिया जिसको हिर्स ने महबूस ।
"शाद" जातीहै उस बशरकी जान ॥ २ ॥

(२)

है हसद भी तो हिर्स का भाई ।
जो कराता है खूब रुस्वाई ॥ १ ॥
गर सुखानन्द चाहते हो तुम ।
हो न हरगिज़ हसद के शैदाई ॥ २ ॥

(३)

जो कोई है बखील या कंजूस ।
उसको कहता है हर बशर मनहूस ॥ १ ॥
लेगया साथ माल्लोजर को सखी ।
"शाद" खाली गयाहै मक्खीचूस ॥ २ ॥

(४)

बुग्ज़ हरगिज़ न तुम किसीसे करो ।
ब्रह्म है सबमें एक ध्यान धरो ॥ १ ॥
द्वेष और ईर्षा हैं दुख दाई ।
प्रेम पीयूष उरके घट में भरो ॥ २ ॥

(५)

सत्य को अपने उर में धारो तुम ।
झूठकी बान को बिसारो तुम ॥ १ ॥
तप नहीं सत्य के समान कोई ।
धर्म अपना कभी न हारौ तुम ॥ २ ॥

(६)

छल कपट द्यूत मद्य पान तजो ।

मत कभी अपने कुलकी कान तजो ॥ १ ॥
न हरो धन किसीका कर अन्याय ।
"शाद" यह बान दुखकी खान तजो ॥ २ ॥

(७)

पर त्रिया पर कभी नज़र न करो ।
ग़ैर के घर को अपना घर न करो ॥ १ ॥
इद्रियों को सदा करो वस में ।
"शाद" फिर तुम कोई ख़तर न करो ॥ २ ॥

(८)

सबसे विद्या का है व्यसन अच्छा ।
सब धनों में यही है धन अच्छा ॥ १ ॥
जिसको विद्या नहीं पशू सम है ।
जाहिलों का नहीं चलन अच्छा ॥ २ ॥

(९)

है असत संग घोर दुख दाई ।
दूर रहना बुरों से ए भाई ॥ १ ॥

जो बुरे संग में फँसा जाकर ।
उसने इज़्ज़त कभी नहीं पाई ॥ २ ॥

(१०)

जीव रक्षा सदैव मन से करो ।
मनको सीतल मृदुल बचनसे करो ॥ १ ॥
मत दुखाओ किसीका दिल हरगिज़ ।
"शाद"उपकार तन व धनसे करो ॥ २ ॥

(ग़ज़ल)

मुझै तुम क्यों अरे भाई अकेला छोड़जातेहौ।
न आंखोंके इशारेसे न मुँहसे कुछ बतातेहौ ॥
तुम्हारी देखकर हालत मेरा दिल बैठाजाताहै ।
पड़ेहौ कैसी ग़फ़लतमें नहीं सिरतक हिलातेहौ ॥
चलेथे तीन मिल घरसे सियाको लेगयारावण ।
अकेला छोड़कर भाई मुझै तुम क्योंरुलातेहौ ॥
सहे संकट कड़े बनमें न लाये चीन चितवनमें ।
ज़रासे बान से रन में पड़े मुरझाये जातेहौ ॥

करो कुछ चेत उठ बैठो बहुत असेंसे सोयेहो।
सुखानंददुखसहैंक्योंकर जोतुमहमकोदिखातेहो

(ग़ज़ल)

विश्वेश रमेश सुरेश प्रभू तेरी मायाका पार नहीं। भवसागर की तरनी है तुही प्राणी का और अधार नहीं ॥ १ ॥ यह रचना तुही रचाताहै आहार तुहीं पहुँचाता है। आखिर तूही विनसाताहै करता कुछ सोच विचार नहीं ॥ २ ॥ निर्गुणहै तू गुणवान भी है प्राणीका जीवनप्राण भी है। निर्देह तदपि बलवानभी है करता बस कार बिकार नहीं ॥ ३ ॥ तू आदि अनादि अनासी है आनन्द मई सुखरासी है। बिस्तरित विश्वका शासी है मालिकहै ताबेदार नहीं ॥ ४ ॥ सबका सुखआनंद दाताहै निस दिन सुख सिन्धु बहाता है। भवसागर पार लगाताहै तज़ता जनको मँझधार नहीं ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल)

तन तरुवर से जिस दिन तेरा मन पंछी उड़ जावेगा । पत्ता लगा रहै नहिं बाकी एक एक झड़ जावेगा ॥ १ ॥ जब इस तनका पतन होइगा बाहर फेंका जावेगा । कौआ गीध स्यार इत्यादिक नोंच नोंच खाजावेगा॥२॥भस्म हुआ तो वायु झकोरा तेरी खाक उड़ावेगा । नाम निशान अरे फिर तेरा कहीं न पाया जावेगा ॥ ३ ॥ जिसने हरिका ध्यान न धारा अन्तकाल पछितावेगा । सुखानंद वह जमदूतों की मार पड़ापड़ खायेगा ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल)

दयासिन्धु करुणा सागर तुम जी की जलन मिटाते हो । प्रेम चातकी की घन आनँद तुमही प्यास बुझाते हौ ॥ १ ॥ नाम तुम्हारा तारन हारा सबका वही सहारा है । टूटी नैया

भवसागर से तुमही पार लगाते हो ॥ २ ॥ जब भारी गर्मी पड़ती है जीव जन्तु अकुलाते हैं। तब तुम जलकी वर्षा करके हरियाली फैलाते हो ॥ ३ ॥ क्षुधा भयंकर रोग हमारा तुम्हीं निवारण करते हो। सुखानंद सब के भोजन को विविध वस्तु उपजाते हो ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल)

दीनदयालु भक्तहितकारी तुम हेनाथ कहातेहो। मुझ से दीन हीन को दिल से क्यों स्वामी बिसरातेहो ॥ १ ॥ तृषावन्त को दर्शन देकर क्यों नहिं प्यास बुझाते हो। ब्रह्मज्ञान का मधुर अमीरस हितसे पान कराते हो ॥ २ ॥ सुख सम्पति में नाथ यदपि हम तुमको बिसरा देते हैं। लेकिन संकट पड़ने पर तुमही दुख दर्द मिटाते हो ॥ ३ ॥ नर तन दिया आपने स्वामी तिसपर भी करुणा करके। विद्या बुद्धि सुमति देते हो सुखानंद सरसाते हो ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल)

रहोगे ग़फ़लत मञ्जाब कब तक, सितम करोगे जनाब कब तक। रहैगी चहरेपै आब कबतक, रहैगा क़ायम शबाब कब तक ॥ १ ॥

ये ऐशो अशरत ये शानो शौक़त, ये किब्रो नख़्वत है चन्दरोजा । रवाँ रहैगी सितम शआरी, फ़िजूँ ज़िहद बेहिसाब कब तक॥२॥

बहारे गुलशन नहीं रहैगी, खिजां का आयेगा दौर दौरा। पियोगे खूने जिगर भी आख़िर, उड़ैगी गुलगूँ शराब कब तक ॥ ३ ॥

बजैगा रुख़सतका जब नक़ारा, छिपैगा किस्मत का यह सितारा। उड़ैगा महफ़िल का रंग सारा, बजैगा चंगो रुबाब कब तक ॥ ४ ॥

मञ्जाल की मू बमू कहानी, तू सुन सुखानंद की जबानी। यहां हरेक शै है आनी जानी, रहोगे खाना ख़राब कब तक ॥ ५ ॥

❀ मुखम्मिस ❀

सुन अरे ग़ाफ़िल कि इस दम का नतीजा है अदम। मिट गये दुनियां में आ लाखों करोड़ों और पदम। ये दमामा दम का है बाहर न रख इससे क़दम। दम्बदम दमरा ग़नी मतदां व हम दम शौ बदम। वाक़िफ़े दम बाशो दमरा दम्बदम बेजा मदम॥

(भजन ताल ३)

अवगुण भरी नाथ मेरी नैया
कैसे लागै पार रे॥ टेक
भवसागरकी थाह नहीं है उमँगिरहींजलधाररे१
आन सहाय नहीं प्रभु कोई तूही खेवनहार रे२
सुखानंद आधीन तिहारे अबकें लेहु उबाररे३

(भजन ताल ३)

भवसागर में नाव पड़ी है
सुनियो नाथ पुकार रे॥ टेक

मोह मई तम उरमेंछायो कीनों घोर अँध्यारेरे १
तृष्णापवनअधिकझकझोरतनसीज्ञानपतवारेरे
सुखानन्दको दयादृष्टिसे दयानिधान निहाररे २

(भजन राग पहाड़ी)

हरिगुण गणको संत कोई गाताहै ॥ टेक
नवधाभक्तिप्रेमपरिपूरण निश्चलध्यानलगाताहै
मनचंचलकोवसमेंरखकरविषयोंसेबिलगाताहै १
मनके मंदिरमें हरिजूकी प्रतिमां को पधराताहै
संयमनियमादिककाप्रेमीनितअभ्यासबढ़ाताहै २
वेदपुराण उपनिषद गीता सुनता और सुनाताहै
विषय भोगकी बुरीवासना दिलसेदूरभगाताहै ३
सुखानंद हिंसासे बचकर सबसे हितसरसाताहै
नासमान इसतनकोतजकरपरमधामकोजाताहै ४

(राग माड़ ताल दादरा)

सुमिरलै कृष्ण मुरारीरे । तेरो जीवन बीतोजाय
नाना योनि जन्म ले लेकर हुवा दुखारी रे ।

नरतनपाय न हरिगुणगाया बात बिगारीरे॥१॥
चूकी चाल सुचाल कुचाली बाजी हारी रे।
गयासमय फिर नहींलौटता होती ख्वारीरे॥२॥
अबभीचेतसुमिरनिसवासर गिरवरधारी रे।
शरणागहेकी लज्जारखता जनहितकारी रे॥३॥
सुखानंद आनंद कंद की ओट करारी रे।
कट जावैगा चौरासी का संकट भारी रे॥४॥

(राग भाड़ ताल दादरा)

तुम्हारे चरणोंमें आया। होकर स्वामी लाचार
कामादिक ने तनको ताया लिपट गई माया।
लोभ मोहने मनललचाया जित तितभरमाया१
दुनियांमें अपना हितकारी नहीं कोई पाया।
सुतदारा परिवार कुटुमको पूरा परचाया॥२॥
भवसागरकी बीच धार में पड़ कर घबराया।
निष्फल हुए यत्न सब मेरे पार नहीं पाया॥३॥
सुखानंदकी नम्र बीनती सुनिये रघुराया।

चरण कमलकी रजपरसाकर विमलकरोकाया४

(दादरा)

चूवन लागी गगरिया हमारी
लीजो रामा खबरिया हमारी ॥ टेक
बिछुड़ गईं सब संगकी सहेली मग नहिं जानूं
निसा अँधियारी ॥ १ ॥ चूवन०
पग पग मगमें कांटे गड़त हैं सुखानंद भई
परम दुखारी ॥ २ ॥ चूवन०

(दादरा)

सखी कहदो साँवलिया से आया करै ।
नित बांकी झलक दिखलाया करै ॥ टेक
ये अँखियां दरसन की प्यासी इनको ना
तरसाया करै ॥ १ ॥ सखी०
बिरह अगन दाहत निस बासर तनकी तपन
बुझाया करै ॥ २ ॥ सखी०
सुखानंद निःशंक आय कै दधि माखन
खा जाया करै ॥ ३ ॥ सखी०

(दादरा)

अब कुल कानि तजेई बनैगी ॥ टेक
लग्यो नेह ब्रजचन्द्र श्याम सों अब का बीर भजेही बनैगी ॥ १ ॥ अब०
उरझो हियो श्याम अलकन में कैसे हू सुरझे ही बनैगी ॥ २ ॥ अब०
गुरुजन त्रास विहाय सुखानन्द साज सनेह सजेही बनैगी ॥ अब०

(दादरा)

हरि नहिं चीन्हा उमिरिया गँवाय दई ॥ टेक
दुनियांके धन्धों में अन्धे बने रहे पापों के फंदे में गर्दन फँसाय दई ॥ १ ॥ हरि०
जाओगे थोड़े दिनोंमें सुखानँद खाओगे मारें पुकारोगे हाय दई ॥ २ ॥ हरि०

(दादरा)

हरिगुण गाना परम पद पाना ॥ टेक

हरि बिन कोई हितू नहीं है हरिके चरन से
सनेहा लगाना ॥ १ ॥ हरि०
सुखानन्द पी प्रेम प्याला ग़म को ग़लत कर
हो मस्ताना ॥ २ ॥ हरि०

(दादरा)

दिल किसी का दुखाना बुरा है ।
ज़ुल्म करना कराना बुरा है ॥ टेक
लिप्त संसार के व्यवहार में ज़िनहार नहो ।
जिसतरह जलमें कँवल रहता है ऐ यार रहो ॥
दिल दुनी से लगाना बुरा है ॥ १ ॥ दिल०
काम जो आजका है कलपै न टालो यारो ।
किसको कलकी है ख़बर होश सँभालो यारो ॥
बेबसी का बहाना बुरा है ॥ २ ॥ दिल०
जलवये यार का हर शै में निज़ारा करलो ।
रास्तबाज़ी से बने जैसे गुज़ारा करलो ॥
लालसा का बढ़ाना बुरा है ॥ ३ ॥ दिल०

ऐ सुखानंद रखो याद हरी को हरदम ।
जब तलक दमके दमामेकी धमक है क़ायम ॥
दिलसे उसका भुलाना बुरा है ॥४॥ दिल०

(ठुमरी)

राम लखन दोऊ बीर, जनकपुर आये ॥ टेक
सुनि आगमन जनक नृप धाये । संग सचिव
शुचि भीर, जनकपुर आये ॥ १ ॥ राम०
जब रघुबर नगरी में आये । भई पुर ज़नकी
भीर, ज़नकपुर आये ॥ २ ॥ राम०
रघुकुल-भानु बिना श्रम भंजौ । शिव पिनाक
गँभीर, जनकपुर आये ॥ ३ ॥ राम०
जय जय ध्वनि नभ मंडल छाई । बरसत
आनंद नीर, जनकपुर आये ॥ ४ ॥ राम०
मान गुमान मिटे भूपन के । दुरजन भये
अधीर, जनकपुर आये ॥ ५ ॥ राम०
सुखानंद श्री ज़नक नन्दिनी । बरी राम

रघुबीर, जनकपुर आये ॥ ६ ॥ राम०

(ठुमरी)

स्वामी मेरे बनकोही लेचलो लिवाय ।
मुझे घर ना छोड़ो जी ॥ टेक
घर पर जो छोड़ोगे श्री महाराजा, जीती न
पाओगे आय ॥ मुझे घर० ॥ १ ॥
नारी का कोई न जग में हितू है, अपने पती
के सिवाय ॥ मुझे घर० ॥ २ ॥
पंखा करूंगी थकावट हरूंगी, दावा करूंगी
मैं पाय ॥ मुझे घर० ॥ ३ ॥
जंगल में मंगल हैं संग में तुम्हारे, नियरै न
आवै बलाय ॥ मुझे घर० ॥ ४ ॥
न्हाऊंगी नई नई नदियों के जल में, खाऊंगी
बनफल अघाय ॥ मुझे घर० ॥ ५ ॥
मुझको सुखानन्द तुम्हारे चरण में, तुम बिन
न कोई सुहाय ॥ मुझे घर ना छोड़ोजी ॥ ६ ॥

(ठुमरी)

विषय से मन बिलगावो रे ॥ टेक
मानव तन का सार यही है हरिगुण गावो रे१
मत अपने अनमोल समयको व्यर्थ गँवावोरे२
सुखानंद कर प्रेम हरीसे हरिपुर जावो रे ॥३॥

(ठुमरी)

साँवरिया ने मन हरलीनौ री ॥ टेक
श्यामहि श्याम रंग दीखतहै जादूसौ कछु कीनौ
री ॥ १ ॥ बिबस भयो मन हाथ न आवत
भयो श्याम लवलीनौ री ॥ २ ॥ सुखानंद
दरसत दसहूदिस रसिक पिया रंगभीनौरी॥३॥

(ठुमरी)

लँगर मोरी बहियाँ झटक गयोरी ॥ टेक
ऐसो नटखटवा, पहुँच पनघटवा, झपट झट
मटुकी पटक गयोरी ॥ १ ॥ लँगर०
कर रस बतियाँ, निहारीं सखी छतियां, अटक

कर घतियाँ सटक गयोरी ॥ २ ॥ लँगर०
मोहनी चलाय गयो, मुख दरसाय गयो,
सुखानंद गर सों लटक गयोरी ॥३॥ लँगर०

(ठुमरी)

लपक मन लैगयोरी नागर नन्द कुमार ॥ टेक
बिन देखे पल छिन कल नाहीं सब जग
लगत उजार ॥ १ ॥ लपक०
बिरहवेदना प्राणहरतहै बहत दृगन जलधार ॥
ऐसो ढीठ निठुररी सजनी सुखानंद रिझवार ॥

[झँझौटी ठुमरी ताल ३]

मुसाफिर भोर भया उठ जागरे ॥ टेक
सिरऊपरहै मंजिलभारी सुखनिंदियाकोत्यागरे १
कूचनक्काराबजनेलागा कर हरिसों अनुरागरे २
नरचोलाजो मिलाअमोला लगानइसमेंदागरे ३
मोहजालसेनिकल सुखानन्द बंधनसेव चभागरे ४

(झंझौटी ठुमरी ताल ३)

भजन बिन किम भव सिन्धु तरे ॥ टेक
जीवनके दिन बाद बिताये नहिं सतकर्म करे १
दीनानाथ भक्तहितकारी हितसों नहिं सुमिरे २
विषयभोगको गर्दभ बनकै अघके भार धरे ३
सुनतनहीं सिख श्रुतिसंतनकी सुखानंद बौरे ४

(झंझौटी ठुमरी ताल ३)

मना तू भजले सीताराम ॥ टेक
हरिकाध्यान हियेमेंधरले तज मद ममताकाम १
कालव्याल आया सिरऊपर जीवनहुवातमाम २
गया अँधेरा हुवा सबेरा आया कूच पयाम ३
सुखानंद भवनिधिकोतरले जायबिहरहरिधाम ४

(झंझौटी ठुमरी ताल ३)

किया तैं कैसा काम निकाम ॥ टेक
विषयभोगमें वयस बिताई लियानहरिकानाम १
सेतभये कच दंतहीन मुख सूखा तनका चाम २

फीकी जोति भई नैननकी बिमुखहुए सुतवाम३
सुखानंद गहिशरण हरीकी करहारिपुरविश्राम४

(झँझौटी ठुमरी ताल ३)

तुम्हीं तो मेरी राखौगे प्रभु लाज ॥ टेक
मैंहूंपतित पतितपावनतुम दीनबन्धु महाराज १
भवसागरसे तारो मेरो औगुण भरो जहाज २
आरतके दुखशोकनिवारहु विस्तारहु सुखसाज३
सुखानंदके सारो स्वामी सर्वस मंगल काज ४

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

निरदैया है बाँको बिहारी रे ।
उन मारी बिरहकी कटारी रे ॥ टेक
आपुनजायमधुपुरीछायो,दासीकरीघरवारी रे१
हमकूंतो वैराग सिखावै,आपकरै दिलदारी रे२
ऊधौ तू सूधौ बनआयो, है कारो विषधारी रे३
जा कहियो सुखआनँद हरिसों, जैसी दशा है हमारी रे ॥ ४ ॥ निरदैया०

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

मेरी लीजो खबर गिरधारी रे ॥ टेक
भरीसभामें दुष्टदुसासन बरबस करत उघारी रे१
बैठे मौनधार पांचोंपति हैंयद्यपि बलधारी रे २
पाहनकी मूरति बनबैठे भीषम द्रोणाचारी रे ३
सुनकरुणानिधिलज्जाराखी सुखानंदबलिहारीरे

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

मेरी लीजो खबरिया मुरारी रे ॥ टेक
गहरी नादिया नावपुरानी बूड़रह्यौ मँझधारीरे१
तुमबिन कौन उबारनहारौ जासोंकरूंपुकारी रे३
कोईनहीं हितूहै अपना स्वारथके व्यापारी रे २
सुखानंदमैंअधमपातिकीतुमप्रभुअधमउधारी रे

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

गहिलीनी प्रभू मैं तेरी शरना ॥ टेक
जोजन तेरे शरणौआया बिसरायाजीना मरना१
मुक्तिपदारथकेतुमदाता मेरेदोष न चितधरना२

भवसागरके नवकारूपी हैंप्रभुके अम्बुजचरना३
सुखानंदपरकोरकृपाकीजगनायकजल्दीकरना४

(राग पहाड़ी ताल केरवा)

क्यों सोया मुसाफिर जानाहै ॥ टेक
जिसकोतूनेघरसमझाहैयहतोमुसाफिरखानाहै१
आबादीकहताहै जिसको लख पूरा वीरानाहै२
लखचौरासीकी चादरका पुररहा तानाबानाहै३
सुखानंद करले तैयारी चलै न एक बहानाहै ४

(राग पहाड़ी ताल धमाल)

सुमिर मन राधावर घनश्याम ।
निस दिन आठों जाम ॥ टेक
क्षणभंगुरहैं साज जगतके रहैं न थिर धनधाम१
सुतदारा परिवार अन्तमें सारत एक न काम२
स्वयं भोगनेहैं पापोंके दुखद विषम परिणाम३
सुखानन्द बिनहरिगुणगाये सुखमेंभलौनचाम४

(राग पहाड़ी ताल धमाल)

मुसाफिरमंजिलभारीरे, क्यासोयाउठजाग।।टेक
चलेगये सब तेरे साथी तूभी आलस त्याग १
राहकठिनहै दूरवतनहै त्यागविषय अनुराग २
मारगमें हैं जीव भयानक विषधर काले नाग ३
सुखानंद बचकरचलसबसे हरिचरननमें लाग ४

(राग पहाड़ी ताल धमाल)

भजनबिनउमिरबिहानीरे करीकैसी नादानीरे ।।
बार बार मनको समुझाया एक न मानी रे १
अबतो चेत त्याग निद्रा को रैन बिहानी रे २
कालबली सिरऊपरआया लख अभिमानी रे ३
सुखानंद बिकराल कालकी बिकट कहानी रे ४

(राग टोडी)

नाथ तुम दीननके प्रतिपाल । जिन गहि
लीनी शरण आपकी कीने तेही निहाल ।। टेक
गजनिर्बलसोंजूझनलाग्यो बलशालीघड़ियाल

ग्राहित्राहिकी आरत वाणी सुनधाये तत्काल १
सुरपति प्रेरित ब्रजपै छाई जब मेघन की माल
नखपर गिरवरधार बचाये तबतुम गोपीग्वाल २
शापविवस यमलार्जुन दोनों रहे विटप बहुकाल
तिनहित निजकरकमलबँधायेदीनानाथदयाल ३
भवभयहारी जनहितकारी करुणासिन्धु कृपाल
सुखानंदजनकोनिर्वारौ कलिमलकठिनकराल ४

[राग टोडी]

भजो मन कृष्णनाम सुखधाम । यमको त्रास
निवारन हारो सुभग सुखद अभिराम ॥ टेक
मनवचकर्म सुमिर पदपंकज प्रेमसहित वसुजाम
परिहरअहंकार मदममता कोहमोह पुनि काम १
गीध निषाद भीलनी गणिका सुमिरगयेहरिधाम
ऊंचनीचको भेद न राखत जनमन पूरणकाम २
काल चक्रके प्रबल बेगसे होती आयु तमाम
जो हरि पदपंकज नहिंध्यावे नहिंपावे विश्राम ३

सुखानंद हरिके सुमिरनमें व्यय नहींहोतछदाम
तातें क्यों न भजै मनमूरख राधावरघनश्याम४

[भजन ताल ३]

भज हरिनाम उमर रही थोरी ॥ टेक
रामनाम संजीवन बूंटी प्रेम अमीरस घोरी। नैन मूंद घट भर पीजाओ जनम मरन की काटहु डोरी ॥ भज० ॥ पानकरी प्रहलाद भक्तने यह बूंटी बरजोरी। भई प्रचंड अनल हिम ताकों भस्मि भई लोहित तन होरी ॥ भज० ॥ सेवनकरी नहीं यह बूंटी तानै विपति बटोरी। सुखानंद विन दाम मिलत है ठूंस ठूंस भर तन की झोरी ॥ भज० ॥

[भजन ताल ३]

सुन ब्रजनिधि प्रभु विनय हमारी ॥ टेक
अघ अवगुण संचारत स्वामी बीती आयु सारी। हरि हीराकी सार न जानी काच बटोर

करी रखवारी ॥ सुन० ॥ वेड़ी मोहजाल की पग में अपनेही कर डारी । सीख गुरू की एक न मानी कुमति कुठारी उर में मारी ॥ सुन० ॥ बिगरी बात सदा भक्तन की तुमही तो नाथ सँवारी । सुखानन्द जनकूं निस्तारहु दयासिन्धु गोवर्धन धारी ॥ सुन० ॥

(जिला टोडी ताल ३)

धर्मही है जीवन का सार ॥ टेक
धर्मबिनायह जन्म विफलहै कहतेवेद पुकार १
धर्मरूप तरणी ही करती भवसागर के पार २
रक्षा करी धर्मकी प्रभु ने धार विविध अवतार ३
धर्मरूप हरिको निसबासर सुखानंद उर धार ४

(जिला टोडी ताल ३)

सराहत बेर बेर हरि बेर ॥ टेक
कर न अवेर बेर दे शवरी कहत प्रभू हरबेर १
मधुर मनोहर सुरस अमीसम लखे नऐसे बेर २

कबहु न भंडारी ने दीने ऐसे मधुरे बेर ३
सुखानंद याही हित ताने पायो नाम कुबेर ४

(जिला टोडी ताल ३)

जानकी बन बन फिरत उदास ॥ टेक
कहांदुखद वह कुशकंटबन कहां सुखद रनवास
कहांसुमनशैय्या सुखसानी सुन्दरभोगविलास १
कहां अनेक रहैं सेवामें दासी दास खवास
कहांनिविड़बन इकली विचरत गहरेलेतउसास २
गती कर्मकी टरत न टारी राखो उर विश्वास
सुखानंद नाहीं विन भोगे होत कर्मको नास ३

(जिला टोडी ताल ३)

बिपति का कौन जगत में मीत । देखा आंख
पसार चारदिस है स्वारथकी प्रीति ॥ टेक
घायलकियावधिकने मृगको छिपाकहींभयभीत
तनश्रोणितने खोजलगाया देख समयविपरीत १
पंकज अनुरागी मधुकर नित गावत मंगलगीत

निरमोहीतवनिकटनआवत करतघातजबसीत२
सुखदछांह फलफूलदेत तरु परस्वारथचितचीत
फलविहीनलखकाटततकोजगजनकरतअनीति
सिया दुखितकुशकंटकवनमें जीवनकरतव्यतीत
एकसमान होतना सबदिन सुखानंद जगरीति४

(जिला टोडी ताल ३)

लगा है उन चरणन में ध्यान ॥ टेक
करतेहैं जिनका निसबासर देव ऋषी गुणगान१
जिनकाचतुराननसहसानन धरतनिरंतरध्यान२
जिनका प्रबलप्रताप उमासे हरने कियाबखान३
सुखानंद सोई पद पंकज हैं मम जीवन प्रान ४

(राग सोरठ)

भोगत भोग सबहि करनी को ॥ टेक
बिनाभोग ना कटतकदापी यहबंधन प्रानींको१
जैसीकरनी वैसीभरनी नियम यही है नीको २
सुखानंद सन्मारगगहिये लहियेसुखअवनीको३

(राग सोरठ)

ऊधौ ज्ञान देतहैं नीको ॥ टेक
सीखहु जोगजुगत ब्रजबाला लेहु सुजस कोटी को १
दोष नहीं कछु नंदनँदन को फल है निजकरनी को २
सुखानँद तुमसों हित त्यागो भयौ श्याम कुवरी को ३

(राग सोरठ)

यामें कहा दोष कुवरी को ॥ टेक
अपने खोटे दाम भयेहैं मोल नहीं बिगरी को १
होत कर्मबस असी हलाहल स्वर्णमेरु माटी को २
सुखानन्द अवछाछ सहेजत श्याम खवैया घी को ३

[राग मंगल ताल ३]

काल बली ने जीता जग को
काल बली ने जीता रे ॥ टेक
देवदनुज नर किन्नर उससे सब रहते भयभीता रे
जो उसके फन्देमें आया बचा नहीं फिर जीता रे १
जीवन है जल बीच बबूला बालू की सी भीता रे

क्षणभंगुर पोलेचोलेमें लगता अन्त पलीतारे२
मुखसे रामनाम उच्चारहु पढ़ौ भागवत गीता रे
जिससेहोयसफलयहजीवननरतनहोयपुनीतारे३
नहीं रही सोनेकी लंका सर्बस बैभव बीता रे
सुखानंद दशकंधबलीभी चलागयाउठ रीतारे४

(राग मंगल ताल ३)

अन्तकाल आ पहुँचा प्यारे
नीका अवसर बीता रे ॥ टेक
अबक्या सोचविचाररहाहै काल न जातारीतारे
झपट पकड़ पंजेमें लेता जैसे मृगको चीतारे १
रहा न कोई रहै न कोई त्याग जगतकी प्रीतारे
इसभट्टी में सब जलताहै सूखा आला तीतारे२
कोई तेरे संग न जावे कुटुम कबीला मीता रे
त्याग सकलधनधामबखेड़ा उठजानाहै रीतारे३
सुखानंद कहताहै हितकी त्याग कुपंथ कुनीतारे
पीले प्रेम हरीरस प्याले गालेहरिगुणगीतारे ४

(राग मंगल पंजाबी काफी)

तन मन से पर उपकार करो
क्यों निसदिन पाप कमातेहो ॥ टेक
कर से सेवा का ब्रत धारौ, मुखसे मिथ्या मत उच्चारौ, इन्द्री जीतो मन को मारौ, तव देखो क्या फल पाते हो ॥ १ ॥
मृग तृष्णा में मत भरमाओ, चित से विषयों को बिलगाओ, माया में मत मन उलझाओ, क्यों आया दाव चुकाते हो ॥ २ ॥
मिथ्या यह जगत पसाराहै, यह तन भी नहीं तुम्हारा है, आया जम का हरकारा है, बेवस होकर अब जाते हो ॥ ३ ॥
यह जग सपने की माया है, ढलती तरुवरकी छाया है, क्यों इस पर जी ललचाया है, क्यों सुखानन्द इतराते हो ॥ ४ ॥

(राग भैरवी ताल ३)

मन तेंने कैसो नाच नचायो ॥ टेक
मदमाती पांचों इंद्रिनने ढोल मृदंग बजायो १
कामक्रोधमदलोभमोहको राग बेसुरो गायो २
लखचौरासीनाचनाचकै अबलोंनाहिं अघायो ३
सुखानंद धरदेहअनेकन पुनिपुनि जन्मगँवायो ४

(राग भैरवी ताल ३)

हरि सौ मीत न देखौ कोई ॥ टेक
कठिन कालमें दीनहीनकौ वही सहायकहोई १
निजभक्तनकीआसपुजावत राखतलज्जालोई २
जबजब भीरपरी देवनपै धार कोई बपु धोई ३
सुखानंद संतन हितकारी दूजौ और न कोई ४

[राग बिहाग]

गुरूने दीनी अमर जरी ॥ टेक
ताकी महिमा कहा बखानों जीवनमूर खरी ॥
मनको महामोह बिनसायो लोभगांठ कतरी ॥

लागीहै आनन तें प्यारी लेकर सीस धरी ॥
मन भुजंगकी पांचों नागिन देखत ताहि डरीं ॥
सूंघतही तिन प्राणगँवाये बिपदा सहज टरी ॥
निसबासरताको नहिं बिसरतपलछिनपावघरी ॥
सुखानंद हरिनाम जरी ने व्याधा सकल हरी ॥

[राग विहाग]

नाथ यह डाली करौ क़बूल ॥ टेक
हृदय बाटिकासे चुनलाया प्रेम भक्तिके फूल ॥
सेवाकी मेवालायाहूं शक्ति ऋतू अनुकूल ॥
मेरे उरमें उपज रहे हैं केते कंटक शूल ॥
गहिकरुणाकाशस्त्र कीजिये इन सबको निर्मूल ॥
अश्रुबारिसे सींच उरस्थल आर्द्रकरी अघधूलि ॥
कियानराव कुमतिझाड़ीकागहकरज्ञानत्रिशूल ॥
क्षमाकीजियो हुई जो अबतक सुखानंदसेभूल ॥
सेवामें फिर कभी न होगी आगे टालमटूल ॥

[राग विहाग]

रसना रख सांचौ व्यौहार ॥ टेक
रसना रामनाम पूंजीको खोल खुले बाज़ार ॥
तीखे वचननबोलबावरी जिम नहिंसकतसहार ॥
जो कटुद्रव्य नभावै तोको तो कटुवाक्यबिसार॥
सुखानंद सरसावै उर में भाषख सोई उचार ॥

(राग मलार)

झूलत नागर नवल किशोर ॥ टेक
रतनजटितपटुली चटकीली पचरँगरेशमडोर ॥
मुदितझुलावतनवलगोपिका उरआनंदअथोर॥
फूलेसुमन सुगन्धित सुन्दर बहतपवनझकझोर३
घिरींघटा कारी कजरारी गर्जत हैं घन घोर ४
दादुरतालमृदंगबजावत गावत कोकिल मोर ५
सुखानंद ब्रजचंद्रदरसहित चख बनगये चकोर६

(राग मलार)

छाई बदरिया कारी कारी ॥ टेक

बरसत वारि दामिनी लरजत बहत समीर सुभग सुखकारी ॥ १ ॥ नाचत मोर भ्रमर गुंजारत कोकिलकूक लगत अति प्यारी ॥२॥ श्यामा श्याम झूलना झूलत झोटा देत मुदित ब्रजनारी ॥ ३ ॥ सुखानन्द ब्रजकी रज ऊपर त्रिभुवनकी सुखमां बलिहारी ॥४॥

(राग भैरव प्रभाती)

पुरवहु करुणानिधान आज आस मनकी॥टेक पाप पीन पुण्य क्षीन मन मलीन दीनहीन ताय रहे ताप तीन वासना व्यसनकी ॥ १ ॥ कर्म जाल पग बँधाय धर्म हीन दुःस्वभाय सुखप्रद प्रभु पद बिहाय चाहकरी धनकी॥२॥ दीननके तुम दयाल काट देत मोह जाल प्रणतपाल होत ढाल हाल भक्त जनकी ॥३॥ सुखानंद अति अजान पाय पाय दुख महान लीनी प्रभु शरन आन कान राख पन की॥४॥

(होरी काफ़ी)

आवागवनछुड़ाओ नाथऐसी होरीखिलावो ॥
ज्ञान गुलाल अबीर उड़ावो प्रेम रंग बरसावो
नेम धर्म को ढप बजवावो अनहद राग
सुनावो, भरम भो मनको नसावो ॥आवा०॥
कामादिक कों ज्ञानध्यान के गुलचा मार
भगावो। तृष्णा को कारौ मुख करके गलियन
बीच घुमावो, मोहको मूंड़ मुंड़ावो ॥आवा०॥
हरिनामामृतकी पिचकारी मुखमें ताकिलगावो
जन्ममरनको संशय मेटो ऐसो फाग मचावो,
सुखानंद हित सरसावो ॥ आवा० ॥

(होरी काफ़ी)

ईशने कैसी होरी रचाई ॥ टेक
रंग रँगीले बदरा छाये पवन बहत सुखदाई।
मंढप रच्यो गगन को सजनी रवि ससि जोति
जगाई, तड़ित झालर लटकाई ॥ १ ॥

गुल्मलता तरु विटपमनोहर झाड़झुँड समुदाई।
पुष्पित कलित फलित शाखायुत झुके भूमिपर
आई, छई चहुँदिस हरियाई ॥ २ ॥
सागर ताल नदी नद नारे दीने दिव्य बहाई।
अति अगाध निर्मल जल पावन रहे पूर
सुखदाई, प्यास की आग बुझाई ॥ ३ ॥
जीव चराचर बिबिध बनाये कीनी अति
चतुराई। गुण स्वभाव मति गति बल विद्या
प्रथक प्रथक ही बनाई, लखो यह सुन्दरताई ॥
सुखानंद आनन्द कन्द की महिमा बरणि न
जाई। दृगन लगाय ज्ञान को अंजन लीला
ललित लखाई, प्रेम सरिता उमगाई ॥ ५ ॥

(होरी काफ़ी)

सत गुरु रंग भीनो कैसोसुघर खिलाररी ॥टेक
ब्रह्मज्ञानकी भर पिचकारी दई हियेमें माररी॥
प्रेमरंगमें सरबस बोरी चूनत चहचही धाररी ॥

योगध्यानकेसुखदकुमकुमातकमारेरिझवाररी॥
अनहदको मुँहचंग बजायो गायोनेद धमाररी॥
चंचल नैन किये समदरसी रागद्वेश निवाररी॥
ऐसेचतुरखिलारीगुरूकी सुखानंद बलिहाररी॥

(होरी काफ़ी)

रँगभीनौ होरी । खेलत कृष्ण मुरारिरी ॥ टेक
नंदगामके गोप जुरे हैं बरसानेकी ग्वारि री ॥
फैंटगुलाल हाथपिचकारीगावतगोपधमार री ॥
एसो लाल गुलाल उड़ायो भयो गगनअँधियार
री ॥ ग्वालिनि तक तक गुलचा मारैं गोप
हँसत दै तार री ॥ यह छबि लखि नभते बर-
सावत सुरगण सुमन फुहाररी ॥ सुखानंद
ब्रज मण्डल छायो मंगल मोद अपार री ॥

(होरी काफ़ी)

श्याम सौं होरी खेलत प्यारी ॥ टेक
लाल गुलाल कुमकुमा मारत उत प्यारी

पिचकारी। रँगभीने दोऊ रस सरसाने करत केलि सुखकारी, भयो आनंद अपारी ॥ १ ॥

ललिता व्याकुल लख राधाकों गहि लीने गिरिधारी। नैन मूंद कोमल कर पकरे गरमें बहियाँ डारी, भये परबस बनवारी ॥ २ ॥

काजर नैन भाल दै बैंदी सीस उढाई सारी। कर पहुँची पग नूपुर पायल बैनी सुभग सँवारी, बनाये मोहन नारी ॥ ३ ॥

सखियन ने बहु नाच नचायो हँस हँस दीनी तारी। वह छबि निरखि मुदित भई राधा सुखानंद बलिहारी, भई लीला सुखकारी ॥४॥

(होरी काफ़ी)

राधिका हरि खेलत होरी ॥ टेक

फैंट अबीर हाथ पिचकारी भर गुलाल की झोरी केसर रंग भराय कलसमें हिल मिल फाग रचोरी, प्रेमको ओर न छोरी ॥ १ ॥

डारत रंग गुलाल परस्पर युगल अनूपम जोरी। दोऊ प्रेम रंग में बूड़े आनँद सिन्धु बह्यो री, कथों कैसे मति थोरी ॥ २ ॥
देव भये लखि मगन गगन में भूमि उछाह छयोरी। सुखानन्द जिन दर्शन पायो तिन को भाग बड़ोरी, अलौकिक राची होरी ॥३॥

(होरी काफ़ी)

खेलें री रँगभीने होरी ॥ टेक
इत मनमोहनलाल सांवरे उत श्रीराधा गोरी। केसर कीच अबीर परस्पर मेल रहे बरजोरी, बयस दोउनकी थोरी ॥ १ ॥
प्यारी के नैननमें हरिने पकर गुलाल भरोरी। कर ते मीड़त नैन राधिका घूंघट पट उघर्‍यो री, श्याम मुख चूमि लियो री ॥ २ ॥
सखियन निरखि ढिठाई हरि की जुरिआई चहुँ ओरी। कोउ गुलचति कोउ कछनी ऍंचत

कोउ सुख मेलत रोरी, किये रँगमें सरबोरी ३
यह लख राधा ने सखियन की कीनी आय
निहोरी। सुखानंद छुड़वाय लालकों अंकिम
पुलकि गह्योंरी, प्रेम सागर उमग्योरी ॥४॥

(होरी काफी)

श्याम ने मोरी सुरति बिसारी ॥ टेक
उन बिन जीवन बाद जात है सोच यही जिय
भारी। हेर हेर हियरा हहरानो नयनन बरसत
बारी, कहां पाऊं गिरधारी ॥ १ ॥
जोगिनि बनी बिभूति रमाई पहिरी भगुवा
सारी। लोकलाज कुलकान नसाई खोजन
चली बिहारी, डगर कोई देहु बतारी ॥ २ ॥
बिन देखे कल नाहिं परत है बिरहअनल तन
जारी। बेगि सिरावहु आय निर्दई दरस दिखाय
सवारी, आस पुरवहु बलिहारी ॥ ३ ॥
ऐसे निठुर श्याम निर्मोही मारी बिरह कटारी।

कर घायल सखी सुधि ना लीनी दीनी पीर करारी, सुखानन्द नाहिं जियारी ॥ ४ ॥

(होरी काफी)

चपल घनश्याम नें मोहि रँगमें बोर दई।।टेक
मैं दधि बेचन घरतै निकसी चूनरि ओढ़ नई।
रँगमें बोरी गागर फोरी बाँह मरोर दई ॥१॥
गारी गावत ताल बजावत ठानत रार नई।
ऐसो ढीठ लाल जसुमतिको बरबसलाजलई २
कैसे सखी बसें या ब्रजमें नित उठ होत नई।
सुखानंद ब्रजकी लीला लखिसबसुधिबिसरगई

(होरी ठुमरी)

जनि जाओरी आज कोऊ जमुनातीर।
मग ठाढ़ौ श्याम लीने कर अबीर ॥ टेक
केसर रंग भरे पिचकारी संग लिये गोपन की भीर ॥ १ ॥ गाय कबीर बजावत तारी घूंघट टारत गहत चीर ॥ २ ॥ बरजोरी सुख

मलत गुलालहि रंग बोरत मसकत सरीर॥३॥ सुखानन्द ब्रज चाल अनोखी एक भाव यहां नीर छीर ॥ ४ ॥

(होरी कवित्त)

मंजु दृग अंजन सों रंजित नयन कंज गज मद गंजित किशोर वर चाल सों। उफनात आनन पै अमल उदोत जोति जग मग होत मग आभरन जाल सों ॥ मोती मांग माल सज गोरी आड़ भाल रचि गोरी चली होरी खेलवेकों नन्दलालसों। रंग बोरे बसन प्रस्वेद कन थोरेथोरे गोरेगोरेगंडयुग मंडित गुलालसों

(राग बिहार)

हरिके सुमिरन से सुख संपति पाओगे ।
शुभ अवसर खोकर पीछे पछताओगे ॥ टेक
नर चोला बारम्बार नहीं मिलता है,
लख चौरासीमें फिर भी फँसजाओगे ॥

पचपचकर जिस धनका संचय करतेहो,
उसको तजकर खाली हाथों जाओगे ॥
है कूप नर्क का नारि न इसमें डूबौ,
इसमें गिरने से घोर कष्ट पाओगे ॥
नस्वर हैं सुखआनंद भोग दुनियां के,
विषयों को तजकर परमधाम जाओगे ॥

(राग खड़ो बिलावल)

भोर भया तब सोना क्यारे ॥ टेक
नर तन है देवन को दुर्लभ सो पाया अब रौना क्यारे ॥ १ ॥ सुत दारा के लिये पाप का बोझा सिरपर ढोना क्यारे ॥ २ ॥ नर तन रत्न अमोलक हीरा कांच समझ कर खोना क्यारे ॥ ३ ॥ उदर दरी को भर लैनाहै मीठा और सलौना क्यारे ॥ ४ ॥ सुखानंद दोदिन रहनाहै सीस महल सुख भौना क्यारे ॥ ५ ॥

(राग सूहौ बिलावल)

जगमें आय कमाया क्यारे ॥ टेक
कामिनि लखकर मन ललचाया विषय भोग मन भाया क्यारे ॥ १ ॥ मानव देह कल्पतरु पाया इसका फल तैं खाया क्यारे ॥ २ ॥ ना हरि भजा न धर्म बटोरा जीवन व्यर्थ गँवाया क्यारे ॥ ३ ॥ विषय भोग विष फल खा खा कर अब तक नहीं अघाया क्यारे॥४॥ सुखानंद यमपुरिका दर्शन मन को तेरे भाया क्यारे ॥ ५ ॥

(राग ताल ३)

काल बली की चली कटारी ।
बचा नहीं कोई नर नारी ॥ टेक
हुए अनेक नृपति धरनी पै तेज पुंज बिक्रम बलधारी । काल बली ने सबको खाया चले गये निज पौरुष हारी ॥ १ ॥

ब्रह्मा इन्द्र कुबेर देवगण असुर यक्ष किन्नर नर नारी। सबही भ्रम में भूल रहे हैं ऐसी प्रभु माया बिस्तारी ॥ २ ॥

फूली सुमन वाटिका सुन्दर रंग बिरंगी है फुलवारी। देखतही देखत मुरझावत जब चल आवत काल बयारी ॥ ३ ॥

सुखानंद हरिके गुण गावहु अभय होहु भ्रम शोक बिसारी। है भव सिन्धु तरन की नवका नाम राम का मंगल कारी ॥ ४ ॥

(राग ताल ३)

जो निस वासर हरि गुण गावै
सो यम के नहिं फन्द परै रे ॥ टेक

अगम अगोचर अलख निरंजन अविनाशी कों जो सुमिरै रे। ताको यम स्वप्ने नहिं त्रासत रहत सदा यम दूत परै रे ॥ १ ॥

घट घट व्यापक अंतरजामी ता हरिको किन

ध्यान धरै रे। सद्गति लहै परम्पद पावै ब्रह्मलोक सुख सों बिहरै रे॥ २॥

दूर नहीं उर ही में राजत जग मग ताकी जोति जरै रे। नैन मूंदकर निरखि बावरे भटकत इत उत क्यों विचरै रे॥ ३॥

बिना प्रेम विश्वास भक्तिके तीरथ तें कहा काज सरै रे। सुखानंद हरि चरण गहे ते बिगरीहू छिन में सुधरै रे॥ ४॥

(राय ताल ३)

सगुण रूप की भक्ति करै जो
सो प्रेमी हरि दर्शन पावै॥ टेक

सेवा सदा करै तन मन तें पंचामृत असनान करावै। कर शृंगार सुमन मणि माला धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै॥ १॥

निश्चल चित्त आरती करिकै घंटा झालर शंख बजावै। वेद मन्त्र सों करै अस्तुती

लीला ललित मुदित मन गावै ॥ २ ॥
घट में छवि की छटा निहारै उर में ताको
ध्यान लगावै । इस इन्द्रिन को वस में करकै
दिन प्रति दिन हित प्रेम दृढावै ॥ ३ ॥
सगुन उपासक प्रेमी या विधि नवधा भक्ति
मांहि चित लावै । सुखानंद हरिधाम सिधारै
सन्मुख बसै परम पद पावै ॥ ४ ॥

(राग ताल ३)

क्यों तू करै पेट की चिन्ता
विश्वभर दातारा है रे ॥ टेक
तेरे लिये जन्म से पहिले उस ने दूध उतारा
है रे । सब जीवों को वह पहुंचाता नित
उपयुक्त अहारा है रे ॥ १ ॥
मोती हंसों को देता है पशुओं को तृण
चारा है रे । अन्न मूल फल फूल उगाकर
किया अमित उपकारा है रे ॥ २ ॥

मेघ सदा उसकी इच्छासे बरसाते जल धारा हैं रे। भूमि उगाती है पौधों को यही नियम निर्धारा है रे ॥ ३ ॥
सुखानंद कर ध्यान उसीका जो हरि सिरजन हारा है रे। चिन्ता त्याग भरोसा उसका मन में रख यहि सारा है रे ॥ ४ ॥

(राग ताल ३)

रहना नहीं सदा इस जग में
इक दिन तुझको जाना है रे ॥ टेक
कर संधाने काल खड़ा है मारै ताक निशाना है रे। जिसको तूने अपना समझा छिन में होत बिगाना है रे ॥ १ ॥ ऊँचे ऊंच महल चिनाये लम्बा तम्बू तानाहै रे। यह कुछ तेरे साथ न जावै सबको तजकर जाना हैरे ॥ २ ॥ तेरा यहां नहीं है करघा झूठा ताना बानाहै रे भूल कहै जो मेरा मेरा उसका कहां ठिकाना

है रे ॥ ३ ॥ मल मल कर धोता जिस तनको करता गर्व गुमाना है रे। सुखानन्द उसको तो एक दिन मांटी में मिलजाना है रे ॥ ४ ॥

(रासिया)

कैसी मति तेरी बौराई
हरिको भजन कियो ना जाय ॥ टेक
बीती घनी रहीहै थोरी निसदिन आयु सिराय। दांत गिरे सिर हालन लागो नैनन पानी जाय ॥ १ ॥ तृष्णा तरुण भई है तेरी धनकूं मन ललचाय। जोर जोर जमलोक सिधारै कौड़ी संग न जाय ॥ २ ॥ अजहूं चेत मंद मत मूरख हरि चरनन चितलाय। सुखानंद हितकी समझावै ना मानै पछिताय ॥ ३ ॥

(रसिया)

तेरे कहा कुमति मन मानी
प्रानी हरिसों कियो न हेत ॥ टेक

भोग विलास करत निसवासर केस भये सिर सेत। भव भय भंजन कों बिसरायो सोयो सदा अचेत ॥१॥ रामनाम नवका तजदीनी भवसागर की सेत। भव निधि अगम अगाध सिन्धु में बूड़े कुटुम्ब समेत ॥ २ ॥ सुखानंद हरि भजन किये बिन मरे होयगो प्रेत। पछ-ताये फिर होत कहा जब चिरिया चरगई खेत ३

(रसिया)

तेरी गई नाथ मति मारी
मेरी सीख न मानी रे ॥ टेक

कामविबस बौराय गयो कीनी मन मानी रे।
बुद्धि बिबेक बिसार हरी सीता महारानी रे १
रामनामकी महिमा तैंने नेंक न जानी रे।
ज़ाके बलतें अगम सिन्धु पै शिला तरानी रे २
राम बैर ते जाय बिनस तेरी रजधानी रे।
सुखानंद जगमें अपजसकी चलै कहानी रे॥३॥

(रसिया)

सांचीमानसहेली येगई बलमा लैवेग्रावैगो॥टेक
वाकी तैंने सुरति विसारी, करी न चलिवे की तैयारी, श्राय श्रचानक द्वारे प्यारी, जल्दी वड़ी मचावैगो ॥ १ ॥ राह वाट की सामां करलै, कछुतो बांध संगकूं धरलै, हाल हाल फिर तेरे काजें, को पकवान वनावैगो ॥ २ ॥ सुखानन्द तोकों समझावै, आलस में क्यों काल गँवावै । प्रीतम सों लौलाय वही तो बेड़ा पार लगावैगो ॥ ३ ॥

(रसिया)

भजन कियो ना ध्यान अरे मन
पाछे तू पछितावैगो ॥ टेक
बाल पनों हँसि खेल गँवायो, ज्वानीमें कीनों मन भायौ । अब तौ बूढ़ौ भयो काल के मुख में वेगि समावैगो ॥ १ ॥ जिनके काजे पाप

कमायो, बल छल कर धन दौलत लायो। अन्तकाल कोई इनमें ते तेरे काम न आवैगो ॥ २ ॥ सुखानंद तू सीख न मानै, बात गुरु की धरै न कानै। मानस जनम गँवाय बावरे यह अवसर कब पावैगो ॥ ३ ॥

(दादरा बरवै पीलू का जिला)

कर गयौ टौना सखीरी नँदलाला ॥ टेक
मृदु मुसकाय चपल नैननको दैगयो उरमें भाला ॥ सखी० ॥ वाही छिन सों कल न परत है भयोहै हिये बिच साला ॥ सखी० ॥ कैसेहू बिसरत न बिसारे सुन्दर रूप रसाला ॥ सखी० ॥ बरबस मेरे दृगन समाये कंज नयन सुविशाला ॥सखी०॥ मोर मुकुट मकराकृति कुण्डल सोहैं गरे बनमाला ॥ सखी० ॥ सुखानन्द भई दरस दिवानी पी गई प्रेम पियाला ॥ सखी० ॥

(दादरा बरवै पीलू का जिला)

मेरो मन लै गयोरी छलिया छैल छिनाय॥टेक
बौरीसी इत उत चाहि चितवत घर अँगना न सुहाय ॥ मेरो० ॥ मनमोहवा मोहनी डारी मुरली मधुर बजाय ॥ मेरो० ॥ व्याकुल परी बिरह में बरबस सुख आनंद नसाय ॥ मेरो०॥

(जिला झँझौटी)

चपल दृगन्न की छवि मन अटकी ॥ टेक
घाट बाट यमुना तट हेरत बान परी यह नागर नट की ॥ १ ॥ लटकि मटकि झटकी मेरी सारी चौहट में मटुकी चट पटकी ॥२॥ उघर भयौ घूंघट पट पनघट बिसरि गई सुधि बुधि घट पट की ॥ ३ ॥ सुखानन्द बिसरतन बिसारे उरसों लटकनि मोरमुकुटकी॥

(राग बसंत)

जय जय श्री वृषभानु किशोरी
जय श्री राधा प्यारी ॥ टेक

जय ब्रजचन्द्र श्याम घन सुंदर नटवर गिरवर धारी ॥ १ ॥ जय निकुंज भामिनि जग स्वामिनि गजगामिनि सुकुमारी ॥ २ ॥ जय यदुकुल भूषण नँद नन्दन बृन्दाविपिन बिहारी ॥ ३ ॥ जयति बसंत जयति बृन्दावन जयति केलि सुखकारी ॥ ४ ॥ जय जय ध्वनि सुर-गण उच्चारत सुखानन्द बलिहारी ॥ ५ ॥

(भजन काफी)

कर सोलह शृंगाररी सुन चतुर सयानी ॥टेक चलनाहै प्रीतमके घरको सुंदर साज सँवाररी ॥ दिव्य बसन भूषण सज सजनी वसन मलीन उतार री ॥ गुड़िया को अब ख्याल त्याग के प्रीतमकों उर धार री ॥ सुखानंद अवसर बीतत है अब मति करै अबार री ॥

(भजन काफी)

बेग हरीगुण गावहुरे अन्तक नियराना ॥ टेक

लख चौरासी कौ संकट है यातें गौन छुड़ावहु रे ॥ ना मरीचिका तृषा बुझावै मृग तृष्णा बिसरावहु रे ॥ पान करौ हरिनाम अमीरस सीतल कंठ करावहु रे ॥ सुखानन्द हरिनाम गायके जीवन मरन नसावहु रे ॥

(भजन काफ़ी)

कृष्णनाम नितगावहु रे। औसरनबितावो।।टेक
प्रेम भाव हिरदे में राखो सबका भला मनावहु रे ॥ मन से विषय वासना त्यागो हरिसे हेत लगावहु रे ॥ सुखानंद हरिधाम जायके सदा सदा सुख पावहु रे ॥

(राग खम्माच)

नमो नमो ब्रह्मण्य देव तुम
आनँद मंगल कारी हो ॥ टेक
विश्वम्भर विश्वेश विधाता गो द्विज के हितकारीं हो ॥ १ ॥ नेत नेत कह वेद बखानत

गिरा गाय गुण हारी हो ॥ २ ॥ गोपीनाथ गोप कुल भूषण गोपालक गिरधारी हो॥३॥ गावत शिव विरंच और नारद कीरति विमल तिहारी हो ॥ ४ ॥ सहस कान दै सुनि करुणानिधि आरत गिरा हमारी हो ॥ ५ ॥ भव बंधन तुम वेग छुड़ावहु सुखानंद बलिहारी हो ॥ ६ ॥

(राग खम्माच)

तिलक भाल गल गुंज माल है
अलक नागिनी जोरा री ॥ टेक

चंचल चपल चतुर छल बलिया नैननमें मद घोरारी ॥ ललित त्रिभंग माधुरी मूरति बंशी में चित चोरारी ॥ मृदु मुसक्याय नचाय नैन मन प्रेमसिन्धु में बोरारी ॥ सुन्दर श्याम मिलै जोसजनी राखूं हिये हिंडोरा री ॥ सुखानंद तन मन धन वारों जो वारूं सो थोरारी ॥

(राग सारंग)

बधाये बाजिरहे नृप दशरथ के दरबार ॥ टेक
फैल रह्यो आनंद चहूँदिशि राम लियो अव
तार ॥ बधाये० ॥ १ ॥ पूरण शरद चन्द्र
मुख निरखत मुदित सकल नर नारि ॥बधा०
॥ २ ॥ पुरकी नारि सुनत उठिधाईं गावत
मंगल चार ॥ बधाये० ॥ ३ ॥ लोचन लाहु
लेहु किन सजनी समय न बारम्बार ॥ बधाये०
॥ ४ ॥ सुखानंद छायौ नगरी में बरसत
सुमन फुहार ॥ बधाये० ॥ ५ ॥

(राग टोडी ताल ३)

भज मन बृन्दावन सुख धाम । बिहरत जहां
सप्रेम युगल वर ब्रजनिधि श्यामाश्याम ॥ टेक
राजत बिमल कलिन्द नन्दिनी सुंदर सुखद
ललाम । जाके दरस परस नर पावत सहज
सुगति विन दाम ॥ १ ॥ गावत जहां मयूर

कोकिला शुक पिक राधा नाम। भावत भक्त जनन के मनको सो अभिमत अभिराम ॥२॥ सुर समूह जा रज हित तरसत सुखद सोई ब्रजधाम। बृन्दा बिपिन मधुपुरी गोकुल बरसानों नँदगाम ॥ ३ ॥ सहजहि सुलभ जहां हैं चारों धर्म अर्थ गति काम। सुखानंद बड़ भागी पावत तहां निबास बिराम ॥ ४ ॥

(भजन राग मारवाड़ी)

देखो गिरवर नखके ऊपर
धारा नन्द कुमार जी ॥ टेक

इन्द्र कोपकर जल बरसाये, प्रलय काल के मेघ पठाये। कीने अपने मनके भाये, गोपी गोप ग्वाल अकुलाकर हरिसों करें पुकारजी १ शक्र मूढ़ता हरिने जानी, बिहँसि कही सबसों मृदु बानी। पूजो गोबर्धन सुखदानी, करो न प्यारे आना कानी होगा बेड़ा पार जी ॥२॥

इत गिरवर का छत्र बनाया, उत नभ पर निज चक्र चलाया। चारों ओर सुदर्शन धाया, सर्वस जलको सोखजराया कीनासुखसंचारजी ३ अपने भक्तनके हितकारी, ऐसे हैं श्रीकृष्ण मुरारी। बिनती करी इन्द्रने भारी, क्षमाकियो तब कुंजबिहारी सुखानंद बलिहारजी ॥ ४ ॥

(दादरा)

कहैं क्या बुरा ज़माना है ॥ अच्छी बात बुरी लगती है कौन यगाना है। कहैं० ॥ टेक

बात न मानें जब कोई कहना है बेकार। खुदगर्जीने जालबिछाया सबको किया शिकार॥ इसीका चौकी थानाहै ॥ कहैं० ॥ १ ॥

स्वारथ की हित प्रीत निहारी स्वारथ का अनुराग। अपनी अपनी ढपली बाजै अपना अपना राग ॥ यही मशहूर फ़िसानाहै ॥२॥

बुग़्ज़ो हसद और जंगो जदल का गर्महुआ

बाज़ार । इस सौदे के जो गाहक हैं उनका कहां शुमार ॥ अदालत चिड़िया खानाहै॥३॥
पक्षपात से होजाते हैं पंडित भी मति मंद । द्वेश भाव फैला देते हैं खोकर सुखआनन्द ॥ फूट का जाल बिछाना है ॥ कहें० ॥ ४ ॥

(राग कसूरी ताल ३)

श्रीरामनामसुखधाम विघ्नभय हरनेहाराहै॥टेक

जिसने उससे ध्यान लगाया, शोक ताप मन का बिसराया, भवसागर से पार लगाया, मिला किनारा है ॥ १ ॥

कपि ने सिय को बचन सुनाये, ऋष्यमूक पर स्वामी आये, बसन तुम्हारे उनको पाये, मिला सहारा है ॥ २ ॥

कपि दल पर अधिकार जमाया, मुझको सुध के हेत पठाया, तब सेवक सेवामें आया, कारज सारा है ॥ ३ ॥

चिन्ता को माता विसराओ, हरि चरनन से ध्यान लगाओ, सुखानंद अब मत घबराओ, हुआ उबारा है ॥ ४ ॥

[ग़ज़ल]

सुखधाम राम प्यारा दिलमें दमक रहा है ।
भरपूर नूर उसका चख में चमक रहा है ॥
व्यापकहै चर अचरमें हरदिलमें हर जिगरमें ।
हर वर्ग में समर में गुलमें लटक रहा है ॥
हर सीपमें गुहर में हर शाख़ हर शजर में ।
आतिशमें और शररमें खुदही दहक रहाहै ॥
शमशीर में सिपर में हर तीर हर तबर में ।
कमज़ोर में ज़बर में दिखला झलक रहाहै ॥
फैली सुयश सुमनकी जगमें सुखद सुगंधी ।
सौरभ अमोघ वलका हर सू महक रहा है ॥
श्रीरामकी कहानी सुन 'शाद' की ज़ुबानी ।
ऐरे असुर दशानन तू क्यों बहक रहा है ॥

[ग़ज़ल]

विनती यही है भगवन वरदान आज पाऊं ।
तुमसे विलग नहो मन जन आपका कहाऊं ॥
आवागवन छुड़ाना जगमें पुनर न लाना ।
गो लोकमें बसाना इत उत कहीं न जाऊं ॥
मद मोह काम माया डालें न अपनी छाया ।
परिवार नारि जाया इनमें न मन फँसाऊं ॥
विषयों से हो विरक्ती उर में अनन्य भक्ती ।
मन जीतने की शक्ती करुणानिधान पाऊं ॥
पद कंज लुब्ध मधुकर मन हो मेरा निरंतर ।
गुणगण अनूप गाकर बस सुखआनन्द पाऊं ॥

श्रीअनुसूयाजी का श्रीसीताजी को
❀ स्त्री धर्मोपदेश ❀

कहती सीतासे मुनि नारि
तुमको नारी धर्म सुनावैं ॥ टेक
माता पिता भ्रात परिवार, थोड़े सुख के हैं

दातार, देता अमित दान भरतार, निस दिन सुख की नदी बहावै ॥ १ ॥

धीरज धर्म मित्र और नारि, परखे जांय विपति में चार, सुख का साथी सब संसार, दुख में कोई काम न आवै ॥ २ ॥

बूढ़ा होवै दुर्बल दीन, अथवा रोगी नैन बिहीन, तौ भी पति के रहै अधीन, सेवा सुश्रूषा न घटावै ॥ ३ ॥

है वह नारी निपट अजान, करती जो पति का अपमान, उसका जीवन मरण समान, यम की मार नर्क में खावै ॥ ४ ॥

तिय का यही धर्म ब्रत नैम, राखै पति चरनन में प्रेम, उसको मान रतन धन हेम, मन के मन्दिर में पधरावै ॥ ५ ॥

हैं जे पतीब्रता कुल नारि, तिनके भेद जानिये चार, है यह धर्म शास्त्र का सार, सज्जन

संतन के मन भावै ॥ ६ ॥
जानौ उत्तम मध्यम नीच, चौथी अधमाधम जग बीच, देवै प्रेम वेलि को सींच, तब वह सुमन सुगन्धित लावै ॥ ७ ॥
उत्तम राखै मनमें ध्यान, जगमें पुरुष नहीं है आन, मध्यम भ्रात पिता सुत जान, पर पुरुषन की ओर लखावै ॥ ८ ॥
लख के धर्म कर्म की हानि, अथवा करके कुल की कानि, मन की डोरी राखै तानि, ताको नीच नारि श्रुति गावै ॥ ९ ॥
रक्षित रहै सदा जो नारि, अवसर हीन विवस लाचार, भय से हो न सकै व्यभिचार, सो तिय अधमाधम कहलावै ॥ १० ॥
रखतीं पर पुरुषों से प्यार, करतीं पतिसे कपट कुनारि, पड़कर रौरव नर्क मँझार, यम की मार कल्पशत खावै ॥ ११ ॥

खोवै रंचक सुख के काज, तीनों लोकन के सुख साज, ऐसी बुद्धि हीन निर्लाज, अपना जन्म अमोल गँवावै ॥ १२ ॥

मन बच कर्म पतीव्रत धार, बिन श्रम सद्गति लहै सुनारि, धर धर जन्म अनेक कुनारि, तरुणी ही बिधवा होजावै ॥ १३ ॥

शुभ गति पावत जगमें नारि, पतिव्रत नैम हिये में धार, उनका गुण गावै संसार, सुन्दर मान बड़ाई पावै ॥ १४ ॥

सीता सुमिर तुम्हारा नाम, पतिसे प्रेम करैंगी बाम, तुझको प्राण पियारे राम, जिनका निर्मल यश जग गावै ॥ १५ ॥

यह सुन सिया परम सुख पाय, सादर तासु चरण सिरनाय, मन में मुदित हुई सत भाय लीला सुखानंद यह गावै ॥ १६ ॥



❀ भारतवर्ष की हीन दशापर चार आंसू ❀

भारत, देख तेरा यह हाल
पड़ते दिलके अन्दर छाले ॥ टेक
तेरी कहां गई वह शान, जिसपर थी दुनियां
कुरबान, कैसा हुआ हाय बीरान, अन्न हैं
रोटी के भी लाले ॥ १ ॥
था हर इल्मो हुनर में ताक़, सनअत हिरफ़त
में मश्शाक़, करदीं सब सिफ़तें बेबाक़, लग
गये क़िस्मत में अब ताले ॥ २ ॥
आया दुखदाई अदबार, सिरपर आलस हुवा
सवार, दौलत गई सिन्धु के पार, अब तू
सूखे शंख बजाले ॥ ३ ॥
उजड़ी सुख सम्पति की बस्ती, कोई जिन्स
नहीं है सस्ती, प्यारे करके फ़ाक़ा मस्ती,
पीले खूने जिगर ग़म खाले ॥ ४ ॥
जिसके पल्ले नहीं छदाम, उसको मिलै कहा

आराम, रहकर पर आधीन गुलाम, अपनी करनी का फल पाले ॥ ५ ॥
तन को कपड़े हैं नायाब, गाढ़े गज़ी हुए कम ख़्वाब, सरदी अगर करै बेताब, जाकर धूनी कहीं रमाले ॥ ६ ॥
कैसा दूध मलाई माखन, कैसे बरफी पेड़े खुरचन, मिलते नहीं छाछ के दर्शन, न्यामत समझो खुश्क निवाले ॥ ७ ॥
जो थे राजों के महाराज, उनकी नस्ल हुई मुहताज, मिलता सुख से नहीं अनाज, बिलकैं भूखे बच्चे वाले ॥ ८ ॥
पड़ते आये साल अकाल, पीटैं पेटों को कंगाल, होकर बेचारे बेहाल, चौंपे भोगें कष्ट कसाले ॥ ९ ॥
हिन्दू मुसलमान बेकार, जिनपर पड़ी खुदा की मार, करते आपस में तकरार, बनकर

मज़हब के मतवाले ॥ १० ॥

शामत सिर पर हुई सवार, झगड़े लेते मोल उधार, कहला कर मुल्की गद्दार, ज़ाहिल करते हैं मुँह काले ॥ ११ ॥

करके करुणा दीनानाथ, गहलो सुखानंद का हाथ, जगमें हो भारत विख्यात, काले धब्बों को धो डाले ॥ १२ ॥

(लावनी सरल)

कृष्णकंजलोचनकीभक्ती कभीभुलाना नाचाहिये
प्रेमभावउनचर्णों का मनसे बिसराना नाचाहिये
नरतन रत्न विषय भोगोंमें व्यर्थ गँवाना ना०
हरि हीरा मिलगयाहमें अब माल ख़ज़ाना ना०
कर अधर्म अन्याय किसीका मर्म दुखाना ना०
चोरी से परधन को हरके पाप कमाना ना०
दिया किसीको वचन तो वादेसे फिरजानाना०
शरणागति की रक्षा से हरगिज हटजाना ना०

है कुसंग से हानि बुरों को पास बिठाना ना०
बात मर्म की भेद हियेका प्रकट कराना ना०
कटुभाषण की कभी तेज़ तलवार चलाना ना०
आमद्से कर खर्च अधिक निर्धनबनजाना ना०
झूंठी नामवरी लेनेको द्रव्य लुटाना नाचहि०
तजनेको निजधर्म किसीके जालमें आना ना०
याचक बनकर निज गौरव सन्मान घटाना ना०
करने में पुरुषार्थ कभी आलस में आना ना०
वीर पुरुषकी भांति रहो कायरता लाना ना०
किया अगर अहसान ज़बांपर उसकोलाना ना०
बुरा कर्म बनगया अगर उसको दोहराना ना०
जहां नहो सन्मान वहां भूले से जाना ना च०
मित्र शत्रु सम जान बैर का भाव दिखाना ना०
बिन पूछे मालिकके कोई चीज़ उठाना ना०
बिन सोचे परिणाम कामसें हाथ लगाना ना०
बिपति कालमें धीरज मनका कभी नमाना ना०

मन नृपको इन्द्री गण के पंजे में फँसाना ना०
परःब्रह्म से सुखानंद मन को बिलगाना ना०

❀ भरतजी का विलाप ❀

राम लषन सिया वन कूं सिधारे ॥ टेक
राम लषन सिया वनकूं सिधारे, लगे महल में तारे। मनके चीते किये केकई,रोवत सकल अवधपुर वारे ॥ राम० ॥ १ ॥
मात सुमित्रा कौशिल्याके, नैन बहैं जल धारे। नृप दशरथ तन की सुधि भूले बिलख बिलख वैकुंठ पधारे ॥ राम० ॥ २ ॥
गुरु वशिष्ठ ने दूत पठाये भरत अवध पग धारे। तात मरन की सुन दुख पायो सीस सुखानंद दै दै मारे ॥ राम० ॥ ३ ॥

(२)

भये भरत मन अधिक दुखारे ॥ टेक
तात तात कह पुनि पुनि रोवत जनकी सुरति

बिसारे । रघुवर विरह भये मन व्याकुल राम राम हा राम पुकारे ॥ भये० ॥ १ ॥
बहु विधि कियो विलाप भरत ने नैन भये रतनारे । कौशिल्या की बिनती कीनी केकई को कटु वचन उचारे ॥ भये० ॥ २ ॥
जीवहुँ नहीं राम विन देखे लाऊं जाय सकारे । सुखानन्द तज राज वासना रघुवर चरण हिये में धारे ॥ भये० ॥ ३ ॥

(राग जोगिया)

सुन्दर राजकुँवर द्वै सजनी
फुल्ल बगिया में आये हैं री ॥ टेक
छवि की छटा अनूपम छाई निरखत चन्द्र लजाये हैं री ॥ १ ॥ चितवन में चोरत हैं मनको लखि लोचन ललचाये हैं री ॥ २ ॥ रूप अनूप मनोहर सूरति विधि मनौं आप बनाये हैं री ॥ ३ ॥ गूंगे नैन आंधरी रसना

मनही मन पछताये हैं री ॥ ४ ॥ सुखानंद
मानों नारायण नरको तन धरि आये हैं री ॥

(राग जोगिया)

निहरत मुदित सखी फुल बगिया
गौर श्याम सुन्दर दोउ भाई ॥ टेक
भूषन बसन मनोहर राजैं रूप छटा बरनी
नहिं जाई ॥ १ ॥ बदन सरोज मनोजहिं
निंदत दृग मृग खंजन मीन लजाई ॥ २ ॥
तीन लोककी शोभा सर्वस अति लघु लागत
निरखि निकाई ॥ ३ ॥ सुखानंद मुख चन्द्र
निहारत तृषित दृगनकी प्यास बुझाई ॥ ४ ॥

(राग जोगिया)

चारहु भ्रात विदेह नृपति नें
कुँवर कलेवा हेत बुलाये ॥ टेक
छप्पन भोग छतीसों व्यंजन रोचक रुचिर
अनूप बनाये । षट्रस युक्त सरस मन भावन

रूप सुगन्धि स्वाद सरसाये ॥ १ ॥
कंचन रतन जटित सुचि बासन पूरण प्रेम सहित परसाये । नवल अमल कुल बधू छबीली जुरिआई मिल मंगल गाये ॥ २ ॥
अति मनभावन चित हरषावन हित सरसावन गीत सुहाये । मोद भरी रस गारी गावैं निरखत मन आनन्द बढ़ाये ॥ ३ ॥
सुर किन्नर गंधर्व अप्सरा दरस हेत नभ मंडल छाये । सुखानन्द करुणानिधि रघुवर रुचि रुचि भोजन कर हर्षाये ॥ ४ ॥

(राग जोगिया)

रज प्रभाव निज नैनन देख्यो
कैसे नाथ चढ़ावहुँ नैया ॥ टेक
परसत ही पग शिला उड़ानी काठ कहा भारी अधिकैया ॥ १ ॥ यह नैया सर्वस्व हमारो कंचन धन परिवार जिवैया ॥ २ ॥ जो नैया

उड़िजाय गगन में किमि पारहुं सुत मात लुगैया ॥३॥ चरण कमल निज हाथ पखारों बिनती मोर यही रघुरैया ॥ ४ ॥ सुखानंद बिहँसे करुणानिधि पग परसनकीदीन्हरजैया५

(राग रामकली)

केवट कर नैया तैयार ॥ टेक
जो चाहै सो ले उतराई चल सरिता के पार १
चरण प्रताप नाथ जानत हूं ताते करत विचार२
यह नैया जीवन धन मेरो पारत सुत परिवार ३
तरणी तुरत लगाऊं तटपर नेंक न लाऊं बार ४
आयसु होय चरणरज टारों धोवहुँ पांवपखार५
माने बचन दीनबन्धूने दीने पाँव पसार ६
केवटने सुखआनँद पायो सुखानंद बलिहार ७

(राग रामकली)

जाकौ नाम सिन्धु भव तारत ॥ टेक
कोटि अनेक पातकी पापी पल छिन मांहि

उधारत । सो प्रभु सरिता तीर तरणि हित केवट ओर निहारत ॥ १ ॥ जेहि पद पदम पराग निरंतर शिव विरंचि उर धारत । ता हित केवट नाव न लावत शंकित पार उतारत ॥ २ ॥ चरण पखार लियो चरणोदक कीनो जन्म सुकारत । भूरि भाग केवट की महिमा सुखानंद उच्चारत ॥ ३ ॥

(राग गौरी)

राजत राम लखन की जोरी ॥ टेक

रिपु रण जीत सिया लैआये संग भालु कपि भीर अथोरी ॥ १ ॥ आनँद मेघ अवधपुर छाये बहत बयार अमीरस बोरी ॥२॥ लखि छबि मुदित भये पुरवासी रूप अमीरस पान कियोरी ॥ ३ ॥ पुर नारी चढ़ अटा निहारत सब के उर आनन्द भयोरी ॥४॥ भरतमिलाप भयौ हित चित सों सुखानन्द चहुँओर छयोरी ५

(राग गौरी)

मस्तक राजै मुकुट सिया वर के ॥ टेक
जड़े वड़े अनमोल राजमणि हनत मान दिन-कर के ॥१॥ सोहत सिया लखन मारुत सुत संग श्याम सुंदर के ॥ २ ॥ शोभा निरखि सुमन बरषावत बासी अवध नगर के ॥ ३ ॥ मगन होत नर नारि निहारत अतुल रूप दृग भर के ॥ ४ ॥ सुखानंद मन मोद बढ़ावत चरण कमल उर धरके ॥ ५ ॥

(भजन)

नहिं छूटे घरको धन्धा भजन कब कीजिये॥टेक
मन मूरख जनम गमायो, निस बासर पाप कमायो । जग माया में भरमायौ, नहिं हरि चरणन चितलायौ । तज धर्म कुमारग चलौ अधर्मी ज्ञान नैन बिन अन्धा भजन० ॥ १ ॥ बालापन खेलौ खायौ, ज्वानी में मन बौरायो

अन्त हाय बुढ़ापौ आयौ, और काल सीस मँडरायौ। तजके सर्वस लै पाप पोट चढ़ चल्यो चार के कंधा ॥ भजन० ॥ २ ॥

करि कोटि अधर्म कमाई, सो माया भई पराई, छूटे सुत दारा भाई, काया हू काम न आई। जम दूत घसीटे लिये जात हैं गल में डारै फंदा ॥ भजन कब्र कीजिये ॥ ३ ॥

वैतरनी नदी तराई, जम द्वारौ दियौ दिखाई। तब गेर रुधिर की खाई, मनभाई मार लगाई। फिर घोर नर्क में डार दियौ जो महा अपावन गंदा ॥ भजन० ॥ ४ ॥

लख चौरासी भरमायौ, तब मुक्तिद्वार तन पायौ। सो रत्न अमोल गँवायौ, अब कहा करै पछितायो। चुगगई चिरैया खेत अभागे ठोक करम मत मन्दा ॥ भजन० ॥ ५ ॥

इस जगमें जीवन थोरा, कर चेत होतहै भोरा ।

जव जमने कंठ मरोरा, नहिं नरतन मिलै बहोरा। जो चाहै हरिके महल चढ़े तो कर गहि ज्ञान कमन्दा ॥ भजन० ॥ ६ ॥
है संस्कार बलवाना, तौ होय ब्रह्मको ज्ञाना। हरि चरण कमलके ध्याना, रहै निस बासर लपटाना। तब सुखानंद सों जाय काटके माया को छरछन्दा ॥ भजन कव० ॥ ७ ॥

(भजन)

अपने देशकीरे प्यारे बिगरी दशा सुधारौ॥टेक
प्रेम प्रीतिसे मिलौ परस्पर बैर बिरोध बिसारौ हिल मिल काम करो उन्नति के सुखद नीति उर धारौ ॥ अपने० ॥ वेद शास्त्र सब पढ़ौ पढ़ाओ हितकी बात बिचारौ। कटुक वचन परिहरि रसनासे मीठे बैन उचारौ ॥अपने०॥ आर्य समाज धर्म-मंडल का भेद भाव निवारौ। दोनों का सिद्धांत एकहै पक्षपात को टारौ ॥

सुखानन्द की सम्मति है यह हिम्मत कभी न
हारौ । होकर तुम संगठित सयाने अरिका
दर्प बिदारौ ॥ अपने० ॥

(ठुमरी मलार)

मैं प्रेमिन घनश्याम की
कोई लाय मिलावहु रे ॥ टेक
बिरहअगन लागी सुलगन तनतपन बुझावहुरे १
व्याकुलजलबिनमीनसममोहिमरतजियावहुरे २
सुखानंद ब्रजचन्द्र को कोई दरस दिखावहुरे ३

(ठुमरी मलार)

दरसन देहु दिखाय श्याम
अब ना तरसावहु रे ॥ टेक
तुम बिन तलफत प्राण हमारा दृगन बहत
अँसुअन की धारा, बाढ़ी तन में बिरह पीर
दिल को न दुखावहु रे ॥ १ ॥
सुखानंद निस नींद न आवत, कौन हेत

प्यारे कन्यावत, अबतौ मन नहीं धरत धीर
ब्रजकों उठ धावहुरे ॥ २ ॥

(राग कालङ्गड़ा)

अरे मन अब कहा सोच करैं ॥ टेक
यमके दूत सीसपर ठाड़े आयो कफ जो गरै १
जो कछुलिख्योललाटबिधातासो कहासहजटरैर
सुखानंद कर भजन हरीको जासों पार परै ३

(राग कालङ्गड़ा)

जगमें स्वारथ के सब संगी ॥ टेक
बिपति काल सुत बात न बूझत करत न
हित अर्धंगी ॥ १ ॥ राख नैनमें निस दिन
हरिकी मूरति ललित त्रिभंगी ॥२॥ सुखानंद
भव व्यथा न व्यापै सदा रहै मति चंगी ॥ ३ ॥

[राग जंगला काफी]

तुम बिन कौन सहायक मेरो
हे दीनन के पीर हरैया ॥ टेक

मैं अति दीन दुखी हूं स्वामी परी भँवर बिच
मेरी नैया। सूझत नहीं जगत में कोई तुम
बिन माँझी पार लगैया ॥ १ ॥
सुख संपति के हैं सब साथी सुत दारा भगिनी
और भैया। बिपति परे कोऊ काम न आवै
होत तुम्हीं प्रभु एक सहैया ॥ २ ॥
सबही की तुम टेर सुनत हौ हौ दीनन के
धीर धरैया। सुखानन्द की बार करी क्यों
एती बार प्रभू यदुरैया ॥ ३ ॥

(राग केदारा)

रे मतिमंद सुमिर यदुबीरा ॥ टेक
भव भय भंजन जन मन रंजन
कमल नयन घनश्याम शरीरा ॥ १ ॥ रे०
तेहि पद सुमिर तरे जन केते
धना, सदन, रबिदास, कबीरा ॥ २ ॥ रे०
लाखा गृह ते पांडु बचाये

द्रुपद सुता को राख्यो चीरा ॥ ३ ॥ रे०
करत सदा रक्षा भक्तन की
आपद काल धरावत धीरा ॥ ४ ॥ रे०
चेत हनैगो आज काल में
काल लिये ठाड़ो धनु तीरा ॥ ५ ॥ रे०
सुखानंद तज मोह मया को
भज हरिनाम मिटै भव पीरा ॥ ६ ॥ रे०

(ग़ज़ल)

भला होवैगा गर भला कीजियेगा ।
दिले ख़ल्क़ में अपनी जा कीजियेगा ॥ १ ॥
नतीज़ा बुराई का होता बुरा है ।
बुरी सोहवतों से बचा कीजियेगा ॥ २ ॥
जो तुमको बुरा भी कहै कोई सुनलो ।
न कहने का उसके गिला कीजियेगा ॥ ३ ॥
अगर याद हक़ की किया कीजियेगा ।
सुखानन्द निर्भय रहा कीजियेगा ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल)

मुझै जाम बादये इश्क का,
उसी दिल रुबा ने पिला दिया ।
हुई बेखुदी न ख़बर रही,
तनो जाँ को दिलने भुलादिया ॥ १ ॥
न असर किया किसी पंद ने,
न डराया ख़ौफ़ो गज़न्द ने,
मेरे नाल हा ये-बलन्द ने,
सरे आसमां को हिला दिया ॥ २ ॥
वही बेकसों का हबीब है,
वही दर्दे दिल का तबीब है,
रगे जानो दिलसे क़रीब है,
ये गुरू ने मन्त्र बता दिया ॥ ३ ॥
हुए "शाद" एकही जिस्मो जां,
नज़र आया जलवये बे निशां,
जो दुई का पर्दा था दरमयां,
उसे चश्मे दिलने उठा दिया ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल अँग्रेजी, फ़ारसी, उर्दू)

तेरे दामे इश्क़ नें किब्रिया,
मेरे मुर्ग़े दिलको फँसा दिया।
न दिखाया जल्वा जमाल का,
न विसाल का ही मज़ा दिया ॥ १ ॥
लैट मी सी दाई कौन्टि नैन्स,
वाटिज़ काज़ आफ़ हिन्डरैन्स,
दी लैम्प आफ़ दाई एपियरैन्स,
परवाना मुझ को बना दिया ॥ २ ॥
चु ब नेज़ारी शुदा मुबतिला,
ब दस्त रसीद बरहना पा,
ब सुदामा कर्द शही अता,
ग़मे मुफ़लिसी को मिटा दिया ॥ ३ ॥
तेरे दर का "शाद" फ़क़ीर है,
ग़में दुनयवी में असीर है,
तेरी याद उसको बनी रहे,
तेरा ध्यान उसने लगा दिया ॥ ४ ॥

(दादरा मल्हार)

फोर दई मोरी दधि की गगरिया ॥ टेक
ढीठ नंद कौ मगमें ठाड़ौ रोकतहै बिन काजैं डगरिया ॥१॥ नित नित रार नई नई ठानत ऐसौ भयौ घनस्यामा भ्रगरिया ॥ २ ॥ लैहूं छिनाय लकुटिया मुरली जब आवै सखी मोरे बगरिया ॥ ३ ॥ सुखानंद अपने अँगना में कस बांधूं लै याही की पगरिया ॥ ४ ॥

(भजन)

दिया जिसने मन का बलिदान
मिला उसको जगमें सन्मान ॥ टेक
जिसके दिलमें खुदी समाई,हुआ वही बरबाद जिसने गर्व किया वो हारा है यह कथन अनादि ॥ बिसाराहै जिसने अभिमान ॥मि०
रजमें मिलकर बीज उभरता जाता नभकी ओर। यही सृष्टिका नियमअटलहैध्यानकरौ इसओर॥

किया जिसने ऐसा उत्थान ॥ मिला०
दिया ईशने सब जीवोंको पंचतत्व का देह ।
सबको एक समान जानके सबसे करो सनेह ॥
मिलैगा सुखानंद हरि ध्यान ॥ मिला०

(भजन)

कल करनाहो सो आज करो
क्यों नर तन रत्न गँवाते हो ॥ टेक
खाली हाथ यहां तुम आये, साथ नहीं कुछ
अपने लाये । जीवन के दिन व्यर्थ गँवाकर
खाली हाथों जाते हो ॥ १ ॥
धर्म करो हरि सुमिरण करलो, भवसागर के
पार उतरलो । साथ सफ़र का तोशा धरलो,
क्यों मनको भटकाते हो ॥ २ ॥
सुखानंद है अभी सबेरा, बिन हरि भजन
नहीं निरबेरा । जान बूझ कर जम दूतों के
क्यों तुम धक्के खाते हो ॥ ३ ॥

(भजन)

हरिका गुण जो नहिं गाओगे ।। टेक
सिर चढ़ा रहैगा जन्म मरन लख चौरासी भरमाओगे ।। १ ।। खर भैंसा बैल समान किसी योनी मे डाले जाओगे ।। २ ।। झुक कमर जायगी बोझे से और मार करारी खाओगे ।। ३ ।। सुखानन्द हरि सुमिरन से भव बंधन से छुटजाओगे ।। ४ ।।

(कुंडलिया)

नाथ तिहारे हाथ है मो अनाथ की लाज ।
जा कर निस्तारा करी ता कर सारौ काज ।।
ता कर सारौ काज आज अवलम्ब न कीजै ।
बूड़त लाज जहाज शरण करुणानिधि दीजै ।।
लोभ लालसा लहर भँवर तृष्णा की आई ।
सुखानंद की करौ आयके बेग सहाई ।।

(दादरा कहरवा)

अपार तेरी महिमाँ। महिमाँ है तेरी अपार।टेक
मायाही तेरी नचाती जगतको पुतली को
जैसे कि तार ॥ अपार० ॥ चारों विचारे न
पहुँचे किनारे मानीहै वेदों ने हार ॥ अपार०
कितना फनों को फनीजी ने मारा हारे हैं
आनन हज़ार ॥ अपार०॥ मोदे हुएहैं बजाते
बजाते नारद की वीना के तार ॥ अपार० ॥
जानन न पाये षडानन गुनों को हारे गजानन
पुकार ॥ अपार० ॥ जल थल के जीवों को
तूने बनाया तूही सभों का अधार ॥ अपार०
भवनिधि में तूही फँसाता सुखानँद देता है
तूही उवार ॥ अपार० ॥

(भजन)

बाढ़ै भारत प्रबल प्रताप ॥ टेक
यशकी अटल ध्वजा फहरावै हहरावै संताप।

पुण्य दिवाकर तेजदिखावै जावै तिमिर कलाप॥
आशा सुखद सरोज खिलावै मेटहि तीनहुताप॥
हिन्दी,हिन्दू,हिन्द परासर तीनों करहिंमिलाप॥
देशीकला चहूंदिस व्यापै थापै देशी छाप॥
सुखानन्दसों बीतहिं बासर निसमें सोवहिंधाप॥

(ग़ज़ल)

सुविचार गर्भ निवास का रहा याद या कि नहीं रहा। वो नकार भोग विलास का रहा याद या कि नहीं रहा॥ १॥
सभी पिछले जन्मों के जाल का तुम्हें उस समय तो खयाल था। करो गौर इसपै ज़रा ज़रा रहा याद या कि नहीं रहा॥ २॥
पड़े ऊर्ध्वमुख थे उदर में जब सहीं यातना थीं अनेक सब। जो हुवा था हरिसे क़रार तब रहा याद या कि नहीं रहा॥ ३॥
ये सुचाल है कि कुचाल है ये कमाल है कि

ज़वाल है। ये उवाल मनका वबाल है रहा याद या कि नहीं रहा ॥ ४ ॥

ज़रा सोच सुक्खअनंदरे तू फँसा है मोह के फंद रे। हुई कैसी मति तेरी मंद रे रहा याद या कि नहीं रहा ॥ ५ ॥

(ग़ज़ल)

यहां आये थे सो चले गये कोई उस्तवार नहीं रहा। न निशां रहा न नगीं रहा न मकां रहा न मकीं रहा ॥ १ ॥

न किसी बशर को क़रार है कि क़ज़ा तो सिरपै सवार है। ये दुरोज़ा नक़शो निगार है यही दौरे चर्खे बरीं रहा ॥ २ ॥

न क़यामे नामो नमूद है जहां शौला है वहीं दूद है। हुवा हस्त जो वही दूद है जो रहा तो ज़ेरे ज़मीं रहा ॥ ३ ॥

तुम्हे "शाद" क्छमी खयाल है कि क़रीब

यौंमे मश्राल है। यही तुझसे मेरा सवाल है कि बता जो कोई कहीं रहा ॥ ४ ॥

(ग़ज़ल)

मेरे शौला रू ने नकाब को रुखे पुरज़िया से उठा दिया। जो हुवा था वादा वफ़ा हुवा मेरे दिलको अपना बना दिया ॥ १ ॥
मेरी चश्मे तर ने ब आरज़ू मेरा हाले दिल कहा मू ब मू। हुईं बातें रम्ज़ की दू ब दू जो मलाल था वो मिटादिया ॥ २ ॥
मेरे जज़्बे दिलने जो की कशिश तो बदलही उसकी गई रविश। न ज़रा रहा उसे पंजोशिश वो दुई का पर्दा हटा दिया ॥ ३ ॥
जो ख़ुदी गई तो ख़ुदा मिला नहीं ग़ैर उसके सिवा मिला। न किसी को कोई गिला रहा जो दिलों को "शाद" मिला दिया ॥ ४ ॥

(चाल लावनी)

नहीं क्यों करते हरिगुण गान ।
सहज में हो जावै कल्यान ॥ टेक
चाकी चलती कालकी रे दलती है दिन रैन ।
दाना या नादान किसीको इससे मिला नचैन॥
बड़ा है काल चक्र बलवान ॥ १ ॥ नहीं०
पोथी थोथी जानिये जो उरमें प्रेम न होय ।
प्रेमपियूष पीलिया जिसने पूरा पंडित सोय ॥
वही पाता है मुक्ति निदान ॥ २ ॥ नहीं०
भूखेको कन दीजियेरे बसन उघारे गात ।
रोगीको भेषजका देना परम पुण्यकी बात ॥
मूढ़को- दो विद्या गुण दान ॥ ३ ॥ नहीं०
सुखानन्दकी चाह में रे जगत रहा भरमाय ।
सुखानंद तब पावै प्यारे विषय बासना जाय॥
करै हरिनाम अमीरस पान ॥ ४ ॥ नहीं०

(भजन)

यह दुनियां है बेवफ़ा
न इसमें दिल को लगाओरे ॥ टेक

यह है मतलब की गर्जी, नहीं सुने किसी की अर्जी । करती है जोरो जफ़ा न इसमें मन उलझाओरे ॥ १ ॥ नैनों की मार कटारी, आशिक की करती ख़्वारी । मिलता नहिं इस से नफ़ा, न तुम नुकसान उठाओरे ॥ २ ॥ सुन सुखानंद अज्ञानी, भजले हरि सारंगपानी दुख होजावेगा रफ़ा सदा हरिकेगुणगाओरे ३

(भजन)

गया अँधेरा हुआ सवेरा
जाग जाग नर जाग रे ॥ टेक

काल व्याल बिकराल भयंकर सन्मुख आया भाग रे । गरुड़ासन भव भय नासन से कर सांचा अनुराग रे ॥ गया० ॥ १ ॥

बिहरै हरि पद मानसरोवर हँस वही बड़ भाग रे। काम क्रोध की कारी कीचर तामें लोटैं काग रे॥ गया अँधेरा० ॥ २ ॥

मानस चोला बड़ा अमोला पाया पूरे भागरे। मायाकी काली रंगतका लगै न इसमें दागरे३ तन तूमा होगया पुराना इससे तज अनुरागरे। फूटगयाआयूजल रिस्ता लगैगी इसमें आगरे४ रसना ने नाना रस चाखे भोजन व्यंजन साग रे। सुखानंद रसना बसमें कर धार ज्ञान वैराग्य रे॥ गया अँधेरा० ॥ ५ ॥

(सवैया)

राम के नाम सों प्रीति करौ जनि धाम के काम रहौ लपटाई। जो न बनै तऊ एक घरी भजियै हरिको ताजिकै दुचिताई॥ पेटहि में जिन पेट भरयो सुखआनँद देहिगो पेट भराई। ज्ञान करौ अभिमान हरौ गुण गान

करौ हरिकौ हरषाई ॥

(२)

हरिके पद पंकज प्रेम करै न करै हरि बेमुख केरि कुसंगा । नहिं आपन मान सो भूल चहै पुनि औरन को न करै मन भंगा ॥ सब और तजै जग रंग महा सु रहै हरि चरननके रस रंगा । एकहि ठौर अहार करै शुभ संत धरै व्रत नीर बिहंगा ॥

(कवित्त जयपुरी भाषा)

दखोजी जसोधा थाँको बेटौ टेटौ अस्योछै
यों अगोकड़ै पिछोकड़ै बुरी तरां बकै छै ।
गैलै गौंड़ै मिलै तोण छिडरौ छिपैण कौठैं
होटचां मटकावै आंखां घुरी घुरी तकै छै ॥
पाछैं म्हैं कहोला तो कहौली म्हारो बालक छै
काई करां सुखानँद कोई सूं न छकै छै ।
आपछै सरीर कारचो औरांणें लगावै कारो

पहन्यां को अनोखो रूप देख देख छकै छै ॥

(२)

पनघट घाटै ठाठ ठाठै छै उचावाही को
गैला जाती गोरयांथें थे किस्यां कान रोकौछौ।
रसका रसीला गरबीला भया कांई फिरै
काम पड़ै कोठै कोठै जाय पग ढोकौ छौ ॥
थांकोताणाबाणाप्यारा म्हांसू चिणी छाणीनहीं
आया छौ अबार थांथै जाणै दीनौं कोकौ छौ।
ब्रजनिधि सामरा सुनाछै गुणरावला म्हे
अलबेला छैला म्हांको गैला कांई रोकौ छौ ॥

(कवित्त पूर्वी भाषा)

तकत महारियन आयकै अचानचक्र
चाहै सोई बकतहै अस नीको ढिठवा ।
कोऊ सू न डरत करत उतपात नित
हित चित हरत करत है खिटवा ॥
नगर निहारौ अस लंगर न चीन्ह परौ

मोर के पखौवा कौ मुकुट सीस डिठवा ।
अस दई जार मोर माखन चुराय खाय
मानै नहीं कान्ह मोर तोर बीर भिटुवा ॥

❀ कवित्त ❀

सजनी सयानी बरसानेकी सम्हारि तन
चंचला सी चमकि कै चंचल नगीच में ॥
चटकीली चटक पकरि पटुका कौ छोर
आनन अबीर मल्यो आनंद उलीच में ॥
सुखानंद केती करी छुटन छतीसौं छैल
छुटे ना छबीली सों छबीलिन के बीच में ॥
कर बरजोरी ब्रजगोरी होरी खेलत में
लै गिरी गुपालजू कूं केसर की कीच में ॥

❀ कवित्त ❀

पति ही सों प्रेम होय पति ही सों नैम होय
पति ही सों क्षेम होय पतिही कों ध्याइये ॥
पति ही है यज्ञ योग पति ही है राग भोग

पति हीं सों जात सोग पति के गुण गाइये ॥
पति ही है ज्ञान ध्यान पति ही है पुण्यदान
पति ही तीरथ समान पतिको पतियाइये ॥
पति बिन न गति होय पति बिन न पति होय
तातें गाय सीता पती सुखआनंद पाइये ॥

❀ कवित्त ❀

श्याम घन तन पर बिज्जु से दसन पर
माधुरी हँसन पर जोहना जगी रहै ॥
मूरति बिशाल पर खोर युत भाल पर
गुंजन की माल पर मति उमगी रहै ॥
मंद मुसकान पर मुरली की तान पर
सरस सुगान पर भावना पगी रहै ॥
कंज से दृगन पर नन्द के नँदन पर
जन सुखआनँद की लगन लगी रहै ॥

(गुरु आरति)

जय देव गुरु देव ।
जय गुरु देव गुणाकर करुणाकर स्वामी ॥

जय जय ज्ञान विभाकर उर अंतरजामी॥जय०
विष्णु रूप हो व्यापक तुम उरके मांहीं ।
रहहु सदां तम नाशक बिलग होहु नांहीं ॥जय
ज्ञान कोष के तुम हो अधिपति अधिकारी ।
सुख आनंद को दीजै ताकी प्रभु तारी ॥ जय
दूर करहु तुम संशय भ्रम कों निर्वारौ ।
आवागवन छुड़ावहु भव-निधि तैं तारौ॥ जय
ज्ञान सुअंजन दृग में मेरे गुरु डारौ ।
अन्धकार बिनसावहु करुणा विस्तारौ ॥ जय
कीने यत्न अनेकन कोटिन चतुराई ।
बिन गुरु करुणा मुक्ती किनहू नहीं पाई ॥
दुस्तर यह भवसागर बूड़त संसारा ।
सत्‌गुरु बिन या जगमें को तारन हारा ॥जय
सुखानन्द के दाता केवल गुरु देवा ।
तन मन धनसों करिये गुरुजनकी सेवा ॥ जय
जय देव गुरु देव ॥

(जगदीश आरति)

जय जगदीश हरे ।
दीन जनन के संकट तुमने दूर करे ॥ टेक
जो ध्यावै हरषावै अतुलित सुख पावै ।
भवसागर तर जावै स्वर्ग धाम धावै ॥ जय०
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी ।
तुम बिन और न कोई आस करूं जिसकी ॥
तुम घट घट के व्यापक प्रभु अंतरजामी ।
सुखानन्द भव बंधन दूर करौ स्वामी ॥ जय०

(रामचन्द्रजीकी आरति)

जय राम जय राम ॥
जय करुणा वरुणालय जय अन्तरजामी ।
जय निर्लेप निरालय निर्जर निष्कामी ॥ जय
नील कमल दल लोचन सुंदर घनश्यामा ।
जय त्रैताप बिमोचन जन मन अभिरामा ॥

क्षीरसिन्धु के शाई त्रिभुवन के राई ।
सीता संग सुहाई जनके सुखदाई ॥ जय०
लीला अलख तुम्हारी को पावै पारी ॥
मायाकी बलिहारी सुर प्रिय असुरारी ॥ जय०
शिव विरंचि मुनिराया पार नहीं पाया ॥
सहसानन उरलाया नारद गुण गाया ॥जय०
अखिल विश्वके भरता अघ अवगुण हरता ॥
महाप्रलय के कर्ता जगके संहरता ॥ जय०
मुनि संतनके प्यारे जनके रखवारे ॥
गुणगण अमित तुम्हारे नासत अघ भारे ॥
जो प्रभु तुमको धावै गुण गण नित गावै ॥
सुखानंद सो पावै हरिपुरको जावै ॥ जय०

[शिव आरति]

जय देव महादेव ।
जय शंकर सुखराशी अविगति अविनाशी ।
जगमग ज्योति तुम्हारी जगमें परकाशी ॥

पतित पावनी गंगा जटाजूट राजै ॥
दिव्य मयंक मनोहर मस्तक पर साजै ॥ जय
गौर अंग की आभा बरणी नहीं जाई ॥
तन विभूति लपटाई अनूपम छवि छाई । जय
अरुण नैन सुविशाला झलकतहै ज्वाला ॥
बाघम्बर मृगछाला ओढ़त प्रतिपाला ॥ जय
अंग भुजंग विराजें मुंड माल धारी ॥
चढ़े वृषभ असवारी जनके सुखकारी ॥ जय०
वाम अंग गिरि तनया राजत जगमाया ।
रत्न जटित आभूषण धारत मन भाया॥जय०
सिंह अनेक भयंकर बल विक्रमधारी ।
मौन धार सब बैठे मानों मंजारी ॥जय देव०
भूत प्रेत हैं अनुचर विविध वेष धारी ॥
निस वासर प्रभु सन्मुख विचरैं सुखकारी॥जय
सुखानँद शिवशंकर काशी के वासी ॥
राजत हेम शिखर पर मुदमंगल रासी ॥ जय

❀ चेतावनी ❀

सुखानंद या जगत में, सुखानंद छिन नांहिं ॥
सुखानंद केवल रहै, राम भजन के मांहिं १
सुखानंद जग जन लखे, सुखानंद के यार ॥
बिपति कालको मीतहै, केवल राम अधार २
सुखानंद इच्छा अधम, चाह चूहरी जान ॥
भयो ब्रह्म ते जीव हरि, इच्छा उरमें आन ३
सुखानंद जाके नहीं, हिये वासना चाह ॥
राजन कौ महाराज है, साहनकौ पति साह ४
सुखानंद या जीव के, अरि अनेक जग मांहिं ॥
चौकस चल चहुँ उर चितै, गहै न कोई छांहिं ५
सुखानंद हरिनामकौ, मार निसानौ ताक ॥
बादि न फेंकै स्वास सर, यह तव देह पिनाक ६
सुखानंद दुख देत है, सदा कुसंग कुमीत ॥
प्रथम ताय परचाय लै, कर पाछे हित प्रीति ७
सुखानंद सब दुख भरे, जगमें सुखी न कोय ॥

आतम तबही सुख लहै, परमातम मय होय ८
सुखानंद सतगुरु बचन, राख हिये निर्धार ॥
तब भव बंधन कों कटत, नैक न लागै बार ६
सुखानंद या पेट की, तोकूं चिन्ता कौन ॥
उदर दरी तो भरत है, विश्वम्भर सुख भौन १०
जलचर थलचर व्योमचर, सबकूं देत अहार ॥
वह तोकूं भी देयगौ, मत संतोष बिसार ११
विक्रम उन्निससौ असी, श्री मधुपुरी सुठाम ॥
सुखानंद पूरण करी, माला ललित ललाम १२

इति श्री सुखानंद विरचिता ब्रह्मआनंद
भजनमाला समाप्ता । शुभम्भूयात् ।



दुर्लभ पुस्तकों का अपूर्व संग्रह।

इस पुस्तकालय में संस्कृत तथा हिन्दी भाषा की पुस्तकें ठीक दाम पर मिलती हैं। कुछ पुस्तकों के नाम नीचे लिखे जाते हैं। पता मंगाने का यह है—"व्रज वल्लभ प्रसाद रामचन्द्, व्रजरत्न पुस्तकालय, मण्डी रामदास, मथुरा।

व्यंजन पाक प्रदीप पांचों भाग:- अर्थात् व्यंजन प्रकार पाक शास्त्र इस पाक शास्त्र में फरारी, दूधघर, पाकादि, अन सखडी, सखडी, रसोई व सामिग्री तैयार करने की विधि विस्तार पूर्वक वर्णित है। यह ग्रंथ बड़े परिश्रम और अनुभव से बनाया गया है। वल्लभ सम्प्रदाई मंदिरों में जो छप्पन भोग बनता है इसी रीति से बनाया जाता है राजा रईस तथा साधारण गृहस्थियों के प्रत्येक घर और मंदिरों

में रखने योग पुस्तक है। वड़े सुन्दर कागज पर मोटे अक्षरों में छपी है।

इस ग्रंथ में जिन पदार्थों के वनाने की तरकीवें लिखी हैं वे वहुत लोगों ने सुने भी नहीं होंगे। उनमें से कुछ ये हैं। प्रथम भाग में २० प्रकार का फरारी समान, दूसरे भाग में ३७ प्रकार का दूध घर का सामान जिसमें नारंगी की वरफी, नारंगी की तवापूरी, नारंगी का सीरा, आम के रस की वरफी, आम के रस का सीरा, केला का सीरा, आम की तवा पूडी, पिस्ता का सीरा, पिस्ता का मौनथार, वादाम का सीरा, वादाम की वरफी, खोवा की अनेक चीजें, खोवा की मेवा वाटी, गूंजा ऊपर पिस्ता भीतर मिश्री, गूंजा में माखन मिश्री भरना, मूंग फली के सेव, शकरकन्दी का सीरा, गुलाव का सीरा आलू की वरफी, खरबूजा की वरफी, दही, आलू, अरवी, रतालू, सूरन, का मगोहर अरवी की

जलेबी, आलू की जलेबी, केला की जलेबी, चिरोंजी की तवा पूडी, मुख विलास, अमृत रसावली, माखन वडा घीया का हलुआ, दही का मगद, रसगुल्ला, गुलाब जामन, गुपचुप खरबूजा के बीज, चिरोंजी के लड्डू, रेवडी, गजक दूधपूडी, मलाई पाक, खुरचन, पिस्ता, बादाम, छुहारे की खीर, अनेक प्रकार के गुल कंद, आंवला, केला, बेलगिरी, पेठा, नासपाती, इत्यादि का मुरब्बा अनन्नास, अंगूर अनार के शरबत, नीबू की सिकंजवीन, इन सबकी तरकीबें हैं। तीसरे भाग में ३६ प्रकार की पाकादि क्रियां हैं जैसे गुलाब पाक, भिलवा पाक, मूसली पाक सालब पाक, सानय पाक, सौभाग्य शुंठि पाक, सूरण पाक, पेठा पाक, पीपल पाक, गोखरू पाक, मेंथी, उडद के लड्डू, अग्निदीपक काम दीपक, बानरी गुटका, रतिवर्द्धक मोदक अनेक प्रकार के चूर्ण तथा पाचक इत्यादि, चौथे भाग में अनसखडी सामिग्री २५४ प्रकार की है

इन में कोई एसी वस्तु बाकी नहीं है जो हल-वाई लोग बडी बडी कारीगरी से बनाते हैं पांचवे भाग में सब तरह की सखडी रसोई की क्रियाएँ हैं जो १६६ प्रकार की हैं।

स्त्रियों को यह पुस्तक अवश्य पढना चाहिये पृष्ट संख्या २३६ दाम १॥)

योग चिन्तामणिः—संस्कृत भा० टी०

इस अपूर्व ग्रंथ में वैद्यक शास्त्र का मंथन करके सार भाग इस रीति से वर्णन किया है कि किसी दूसरे ग्रंथक देखने की अपेक्षा नहीं रहती। वैद्य और रोगी दोनों ही इस से लाभ ग्रहण कर सकते हैं। इसमें नाडी परीक्षा, वैद्य के लक्षण, रोगी के लक्षण। नेत्र परीक्षा, जिह्वा परीक्षा, मल परीक्षा, शब्द परीक्षा, स्पर्श परीक्षा, आयुर्विचार, काल ज्ञान, देशज्ञान, औषधों की तोल, शारीरक, पाकाधिकार, अनेक प्रकार के पाक, मोदक, शुंठी हरीतकी, चूर्ण, गुटी, रस गुटिका, बटिका महावाळ ज्वरांकुश, घोड़ा चोली, स्तंभन ब्रिधि,

अंजन, गोली, क्काथ, घृत, तैल्य, गुग्गुल, द्राव, लेप, तथा प्रयोग प्रत्येक रोग पर जुदा २ सविस्तर लिखे हैं। तथा गंधक, शिलाजीत, अभ्रक, ताम्र, वंग सुबर्ण, पारद, हरताल, रूप माक्षिक, नीलांजन, रस सिन्दूर, चांदी इत्यादि धातु उप धातुओं की शोधन और मारण की प्रक्रिया सरल रीति से वर्णन की गई है। बिरेचन बिधि स्पष्ट लिखी है कहांतक लिखें ९ पृष्ट में तो केवल सूचीपत्र छपा हुवा है एसे उत्तम ग्रंथ का संग्रह प्रत्येक सावधान मनुष्य को करना चाहिये जब अचानक कोई रोग आ दवाता है तो वैद्यों का तत्काल मिलना कठिन होजाता है। इस ग्रंथ में वैद्यक के ऐसे अमूल्य प्रयोग लिखे हैं कि जिन को तैयार कर के साधारण योग्यता का आदमी भी चिकित्सा कर सकता है और बेचकर अमित लाभ उठा सकता है। सुन्दर कागज और छापा है पृष्ट सख्या ३६४ दाम केवल १॥।)

वैद्य रत्न भाषा:—इस में देह के संम्पूर्ण रोगों के इलाज लिखे गये हैं और प्रत्येक रोग पर परीक्षित औषधियां वर्णित है यह पुस्तक पद्य में है इसमें नाडी परीक्षा, जिह्वा, नेत्र इत्यादि की परीक्षा रोग के लक्षण ये सब बातें भी हैं—

पृष्ट संख्या १०८ दाम ।=)

वैद्यक सार:—वैद्यक के छोटे छोटे चुट-कले पृष्ट ६४ दाम ≡)

व्यंजन प्रकाश ।≡)

कलिराज महिमा -)

रामलीला मंगल =)

महारानी भजनावली:—स्त्रियों के गाने के उत्तम गीतों का सग्रंह ।)

रामायण सुन्दर कांड गुटका =)

ठगबिद्या उर्दू:—ठगों की चालाकियां उन की बोली बडी उत्तम पुस्तक है दाम १)

योग बासिष्ठ भाषाः—वैराग्य और मुमुक्षु प्रकरण पृष्ट १४६ दाम ॥=)

पथ्या पथ्य मूल भा० टी० पृष्ट १३६ दाम १)

गोपाल सहस्रनाम भा० टी० ॥)

ब्रज. बिलासः—यह प्रसिद्ध पुस्तक है। कागज सफेद छपाई मोटे अक्षरों की पृष्ट संख्या ५७२ दाम २॥)

नीति वाक्य रत्नावली—मूल भाषा टीका और दोहा सहित। इसमे नीति के उत्तमोत्तम श्लोक वाल्मीक रामायण तथा अन्यान्य ग्रन्थों से चुनकर लिखे गये हैं पृष्ठ ११८ दाम।)

चिकित्सा सिन्धु।

इस पुस्तक में वैद्यक, यूनानी, एलोपैथिक और होमियोपैथिक मतों से भिन्न २ रोगों के निदान लक्षण और चिकित्सा लिखी है। इसके ढंगकी पुस्तक अब तक कहीं भी नहीं छपी है

इसमें अंगरेजी औरं देश॰ ॰ल की बराबरी और देशी औषधों के अंगरेजी नाम भी लिखे हैं की॰ ॰ १॥ रुपया

बुढापा रोकनेके उपाय
२४ चित्रों सहित ।

अमेरिका के वैज्ञानिकोंने बुढापा रोकने की युक्ति बडी सरल निकाली है चारपाई पर पडे २ कुछ अंगोंका परिचालन १०–१५ मिनट तक करते रहिये फिर न कब्ज की शिकायत रहैगी बीमारियों का डर, अंग परिचालन कैसे ॰ चाहिये इसी के लिये पुस्तक में २४ चित्र हैं किसी के सिखाने की जरूरत नहीं कीमत १।।) रु०

ब्रह्म आनन्द भजन माला

सुखानंद कृत ।

यह ॰ ॰ ऐसी उत्तम है कि जिसके पाठ

करने से मन को ब्रह्म क आनन्द और अनन्त सुख प्राप्त होता है। इ प्रकार की और भी पुस्तकें छपी हैं परन्तु खने से मालूम होगा कि इसका भाव विलक्षण है। जो प्रेममयी विशुद्ध कविता, जो मधुरस, जो ज्ञान और वैराग्य, और जो ललित्य समें मिलैगा वह अन्यान्य भजन मालाओं मिलना कठिन है। इसके पदों का मुकाबला करने से ही पता चल सकता है कि परस्पर क्या भेद हैं। हमारा दावा है कि एक बर इसको देखकर दूसरी रचना प्रेमियों को कदापि न रुचैगी। छपाई शुद्ध और साफ है। कागज बढ़िया है। पृष्ठ संख्या ३७० से ऊपर जिल्द सुन्दर है दाम केवल ।।।) व्यापारियों को कमीशन के लिये पत्र व्यवहार करना चाहिये।

हिन्दी महा भारत।

महा भारत से विराट ग्रंथ का सार नि-

काल कर हिन्दी भाषा छापा गया है ४१८ पृष्ठ की पुस्तक का दाम ।)

क़ानून दर्पण ।

ज़मींदारी, काश्तकारी, शहादत आदि ३६ क़ानूनों का खुलासा लिखा है क़ीमत फ़ी पुस्तक १।)

इलाजुलगुर्बा भाषा ।

इस में कौड़ियों की लागत के एक एक रोग पर सौ सौ पचास पचास तरह की दवा लिखी हैं दाम १।।।)

भैषज्य गुण रत्न माला—इस में औषधियों के गुण लिखे हैं दाम ।।)

शालहोत्र बड़ा—इस में घोड़ों के शुभाशुभ लक्षण और उनकी चिकित्सा लिखी गई है दाम ।।)

वृहतबूंटी प्रचार—इस में जड़ी बूटियों की पहचान चित्र देकर कराई गई है, और जड़ी बूंटी द्वारा इलाज धातुओं की भस्म करना आदि उत्तम रीति से लिखा है। क़ीमत १) रु०

केशकल्पद्रुम—इस में ख़िज़ाब बनाने के बहुत से आज़मूदा नुसख़े लिखे हैं क़ीमत ।)

चिकित्सा चक्रवर्ती—इस में रोगों के सुगम परीक्षित चुटकले लिखे हैं दाम १)

भजनों की पुस्तकें।

मीरांबाई के भजन	‾)	भजन प्रभाती	‾)
भजन रत्नाकर	‾)	भजन रामायण	‾)
भजन पचासा	‾)	सुदामा की बारह-खड़ी	)॥
आरती संग्रह	‾)		
जानकी मंगल	‾)		

क़िस्सा कहानी आदि की पुस्तकें।

सारंगा सदावृत्त	‾)	फिसाना अजायब	।=)
मोहनी चरित्र या		एक रात में चालीस	

खून -)
एक अनोखी रात की बात -)
रातकी रंगीली बात -)
जान न पहचान बड़ी बीवी सलाम -)
हातिमताई ॥)
अचंभे का बच्चा =)
चंपा चमेली -)
बुढ़ापे का ब्याह -)
सास बहू -)
देवर भावी [शिक्षा-पूर्ण] -)
नंद भौजाई -)
अलीबाबा चालीस चोर -)
तोता मैना

८ भाग ॥=)
क़िस्सा दिलचस्प)
शेख़चिल्ली -)
बेताल पच्चीसी ।)
क़िस्सा चहार दरवेश ॥)
ज्ञान माला -)
सिंहासन बत्तीसी ।=)
गुलबकावली ।=
क़िस्सा डल्ला =)
क़िस्सा आहू -)
मौजिज़ा आलेनबी -)
हलीमा दाई -)
छबीली भटयारी =)
शाहरूम -)
दिलबर चोर =)
यार की अंगूठी =)

गाने की पुस्तकें ।

सनातन धर्मका डंका -)
ग़ज़ल पुरबहार पहिला

...भाग =)
...था दूसरा भाग =)
...सनातन धर्म का झंडा -)
...गोपीचन्द भरतरी -)
...ग़ज़ल पच्चीसी -)
...इन्द्र सभा ≡)
...रागसाज संग्रह
पहिला भाग ≡)
तथा दूसरा भाग ≡)
तथा तीसरा भाग ≡)
तथा चौथा भाग ≡)
बीकानेर की साड़ी ।)
अंगदव नाटिका -)

फूलों का गुच्छा ।)
वसन्त बहार =)
चैती गुलाब =)
प्रेमरत्न माला ≡)
प्रेमपुष्प माला =)

वेदांत की पुस्तकें

गीता भा० टी०
गुटका ॥।=)
गीता भा० टी० १॥)
अर्जुन गीता =)
तत्व ज्ञानप्रकाश ।)
रंभा शुकसंवाद ।)
अवधूत गीता भा०टी० ।=)

पूजापाठ करने की पुस्तकें ।

हनुमान बाहुक -)
बजरंग बाण)॥
शनिश्चर कथा -)
गोपाल लहरी } -)
हनुमान लहरी }
विनय पत्रिका ।=)

रामस्तवराज	—)	तथा भा० टी०	—)॥
नारायण कवच		स्तोत्र रत्नाकर	।।।)
भा० टी०	—)	हनुमान चालीसा	)॥
मृत्युंजय स्तोत्र	—)	विष्णु सहस्रनाम	=)
संध्या यजुर्वेदी	—)	गोपाल सहस्र नाम	
संध्या सामवेदी	—)		=)
महिम्न मूल	—)	गंगा लहरी भा. टी.	—)

अभिनय राम कथा नाटक ।

नाटक मंडलियों और प्रेमियों के लिये यह पुस्तक बड़ी उपयोगी है रामायण के आधार पर राम कथा का पूरा वर्णन बड़ी रोचकता के साथ सरल भाषा में सुललित राग, रागनी, दोहे, चौपाई, इत्यादि में किया गया है। मूल्य २) रु०

प्रेम सागर ।

भगवान् श्री कृष्ण की अद्भुत लीलाओं का विस्तार सहित वर्णन इस पुस्तक में किया गया है स्थान २ पर सुन्दर चित्र भी हैं छपाई मोटे काग़ज़ पर बम्बई के छापे की है मूल्य २)

हाथरस के सांगीत।

क़त्ल जान आलम ३
भाग कीमत प्रत्येक
भाग ।-)
त्ल सलीम =)
ौरन क़त्ल ।)
ानपहेली –)
पूरनमल सतसागर ४
भाग कीमत प्रत्येक
भाग कीमत ।)
कलयुग का ककहरा)॥
रूप बसंत =)
राम बनोवास ≡)
ालेरुख़ गुलफ़ाम =)
ाखा बंजारा =)
ताराम गूजर ≡)
ुथापोश =)
सां० गोपीचन्द =)
,, हीरालाल ।)
,, द्रौपदी =)

,, मोरध्वज ≡)
प्रहलाद =)
,, नल जन्म ≡)
,, धूलाधाड़वी ।=)
,, पदमावत ।)
नल चरित्र ।)
चित्रकूट चरित्र ≡)
कृष्ण चरित्र =)
सुदामा चरित्र =)
मदन मोहब्बत ≡)
मलका हुस्न अफ़रोज ≡)
सब्जपरी =)
शीरी फ़रहाद ≡)
संकलदीप संग्राम ≡)
संकरगढ़ संग्राम ।=)
श्रवण चरित्र ≡)
सां० गुंजपरी =)
,, भैन भैय्या =)

,, ढोला मारू	।)	आल्हा का व्याह	।≡
,, नौटंकी	=)	ढेवा का ,,	।-
,, धनुष यज्ञ	≡)	लागन का ,,	।=
,, वैराट लीला	≡)	ऊदल का ,,	।-
,, चस्पापोश	।=)	मलखान का ,,	।=
,, शीशमदे	॥)	ब्रह्मा का व्याह	।=
,, बुढ़ापेका व्याह	-)	धांधू का व्याह	।
कंकाली	=)	बहोरन का व्याह	।
,, हरिश्चन्द्र	≡)	संभर की पाट	।
मलखान संग्राम	।)	माडौ की लड़ाई	।
चन्द्रावल का झू०	≡)	अमरसिंह का साखा	
कालीदह का झू०	-)	१ भाग ॥) दूसरा	।=)
नरसी का भात	-)	चांदौ संग्राम	।)
इन्दल हरण	।=)	आल्हा निकासी	।)
त्रिवेणी हरण	।)	आल्हा मनाओ	।)
लाखन का गौना	।=)		

सब पुस्तकों का डाक खर्च अलग लगेगा ।

मिलने का पताः— मैनेजर,
ब्रजरत्न पुस्तकालय,
मण्डी रामदास—मथुरा ।